वर्ष-33, अंक-397

संपर्क भाषा भारती

वर्ष 1990 से प्रकाशित साहित्य-समाज को समर्पित राष्ट्रीय मासिकी, नवंबर—2023, RNI-50756

दीपावली की अशेष शुभकामनायें...

60/-

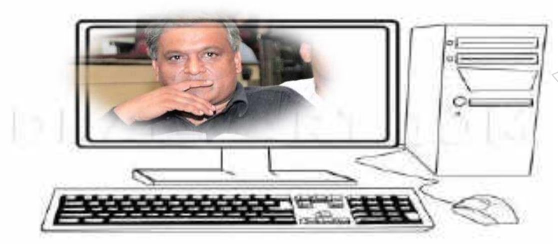

अपनी बात...

प्रिय समस्त! एक स्मृति ताज़ा कर रहा हूँ......

डॉ शेरजंग गर्ग जी : संक्षिप्त मुलाक़ात : मार्च-2017,

आज अच्छी बात यह रही कि लगभग साढ़े ग्यारह बजे प्रातः डॉ शेरजंग गर्ग जी कार्यालय आगए। जैसा कि मैं कई बार कह चुका हूँ और लिख चुका हूँ, डॉ शेरजंग गर्ग जी पिताजी के न केवल मित्र थे बल्कि उनके अग्रज भी।

यह उनका पितृवत स्नेह ही है कि वे मुझ अकिंचन को सम्मान देने केलिए मेरे पास चले आते हैं। इधर उनका स्वास्थ्य, कम से कमतर होता जा रहा है। शुगर से काफी लंबे अरसे से उनका संघर्ष चल रहा है। बातचीत के दौरान उन्होंने बताया कि उनका चौवालिस साल पुराना थीसिस बिजनौर के किसी प्रकाशक ने दोबारा छापा है।

इधर वे खासे व्यस्त रहे। शायद 13-14 जनवरी को ज्ञानपीठ द्वारा कुछ पुस्तकों का विमोचन उनके द्वारा किया गया था।

फिर उनके दुविधामय जीवन पर बात आ गई।

'अभी कुछ दिन पहले खेल-गाँव वाली डिस्पेन्सरी गया था, शुगर थोड़ी बढ़ी हुई थी। वहाँ डॉक्टर ने इंजेक्शन लगा दिए। शुगर बहुत नीचे आगया। उसी रात तबीयत बिगड़ गई। मंजू (पत्नी) ने देखा तो फ्रिज से कुछ मिठाई निकाल लाई। उसे खाया तो चैन पड़ा।' वे बोले।

'रात ही उत्सव (पुत्र) का सिंगापुर से फोन आया। उससे बात हुई तो उसे लगा मेरी तबीयत कुछ खराब है, उसने अपनी माँ से बात की, फिर रातों रात मेरी समधन को चेन्नई फोन मिलाया। वो किसी चिकित्सा एनजीओ की प्रमुख हैं। उन्हों ने किसी डॉक्टर से बात की।' पर अब ठीक हूँ।

वृद्धावस्था का यह दुखद पहलू है। माँ-बाप सारी सुविधाओं के टापू में अकेले कैद हैं। उनके बच्चे एक ऐसे समुद्री जहाज की तरह हो गए हैं जो उस टापू को सुख-सुविधाओं से भर कर पुनः उस टापू पर नहीं आना चाहते। वे खुद को दायित्व-मुक्त समझ बैठते हैं।

हम सब अपने बच्चों को इसीलिए इतना शिक्षित बनाते हैं?

यह ऐसी त्रासदी है जिस से हम सब को दो-चार होना पड़ेगा।

बात करते-करते उनके चेहरे पर मुस्कान लौट आई। मैंने देखा है, जब भी पुत्र उत्सव का जिक्र करते हैं उनकी आँखें चमक उठती है।

'उत्सव सप्ताह में चार दिन आस्ट्रेलिया और तीन दिन सिंगापुर में काम देखता है। जिस कंपनी में काम करता था उन्हों ने उसे अब पार्टनर बना लिया है।

उत्सव के दो बेटे हैं। सिंगापुर में बहुत आलीशान मकान है। एक मेड खाना बनाती है। दो मेड दोनों बच्चों को संभालती हैं। उत्सव की पत्नी सिंगापुर में ही यूनीलीवर की सीनियर डाइरेक्टर हैं।'

मुझे याद है वे दिन जब उत्सव शायद लखनऊ से इंजीनियरिंग करने के बाद आईआईएम-अहमदाबाद से शिक्षा प्राप्त कर रहे थे।

डॉक्टर गर्ग जी के साथ अगर मैंने श्री तपोधन स्वामी जी का नाम नहीं लिया तो यह अन्याय होगा। दुबले-पतले स्वामी जी ने रुड़की से इंजीनियरिंग की थी। साहित्यिक रुचि वाले हैं सो डॉ गर्ग जी से मित्रता स्वाभाविक ही थी। स्वामी जी भी यहीं हैं। इस लेख को पढ़ते ही नमूदार होंगे,ऐसा आप को यकीन दिलाता हूँ।

स्वामी जी डॉ गर्ग की आवाज़ की नक़ल ऐसे उतारते हैं कि क्या बताऊँ। आप उनके सामने बैठ कर आँख बंद कर लें और स्वामी जी गर्ग साहब की नक़ल उतारते हुए उनकी गजल पढ़ जाएँ तो आपको विश्वास ही नहीं होगा कि यह कमाल स्वामी जी कर रहे हैं।

जब तक गर्ग जी ने नोएडा का अपना आवास नहीं बेचा था, दोनों ही हम-निवाला, हम-प्याला बने रहे। शेष उन दोनों मित्रों ने क्या-क्या किया यह मैं स्वामी जी के ऊपर छोड़ता हूँ। वे खुद इस पोस्ट पर अवतरित होकर डॉ गर्ग के साथ अपने किस्से को आगे बढ़ाएँगे।

शुरुआती दिनों में उत्सव को शायद गुरुग्राम में नौकरी मिली थी। उसे रोज़ नोएडा से गुरुग्राम आने-जाने में परेशानी होती थी।

शेष फिर.....

संपर्क भाषा भारती

प्रधान संपादकीय कार्यालय : सुधेन्दु ओझा (संपादक), ग्राम : मकरी, पोस्ट भुइंदहा, पृथ्वीगंज, प्रतापगढ़-230304

पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक, मुद्रक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा

दिल्ली पत्र व्यवहार का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली110092

संपर्क भाषा भारतीय

संपादकीय परिवार

मुख्य संपादक : सुधेन्दु ओझा
प्रधान कार्यालय : ग्राम-मकरी, पोस्ट-भुइंदहा, पृथ्वीगंज हवाई अड्डा, प्रतापगढ़-230304 उत्तर प्रदेश
नई दिल्ली कार्यालय : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092
पत्रव्यवहार तथा पुस्तक भेजने का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092
फोन नंबर : 9868108713/7701960982
ईमेल : samparkbhashabharati@gmail.com

क्षेत्रीय कार्यालय

आशा शैली : शैलसूत्र त्रैमासिक पत्रिका —सम्पादन
इन्दिरा नगर-2, लाल कुआं, हल्द्वानी-263402 उत्तराखंड
फोन नंबर : 7055336168/9456717150
ईमेल : sha.shaili@gmail.com

अंजना सवि छलोत्रे : वृन्दा, मासिक पत्रिका: सम्पादन
जी-48, फॉर्च्यून ग्लोरी, ई-8, एक्सटेंशन, भोपाल-462039 मध्य प्रदेश
फोन नंबर : 8461912125
ईमेल : anjana.savi@gmail.com

संपर्क भाषा भारती क्षेत्रीय कार्यालय के रूप में संबद्धता के लिए पत्रिकाओं का स्वागत है...

आप अपनी रचनाएँ,

गोष्ठी/सम्मान समारोह संबंधी सूचना फोटो सहित

स्वयं www.newzlens.in पर सब्मिट कर सकते हैं ...

सभी पत्रिकाएँ डाउनलोड के लिए www.newzlens.in पर उपलब्ध हैं...

नवंबर—2023

क्रम:	शीर्षक	लेखक:	पृष्ठ संख्या
1	संपादकीय		2
2	सभा/समाचार	प्रतिमा पुष और अलंकृता राय	7
3	कविता	शिवानंद सिंह सहयोगी	8
4	समाचार	दो बैलों की कथा का वाचन	9
5	नरेंद्र दीपक के गीतों में सामाजिक सरोकार	डॉ अवधेश कुमार चंसौलिया	11-15
6	कविता	साधना मिश्रा	15
7	विवाह....	प्रतिमा पुष्प	17-19
8	कविता	कृष्ण चन्द्र महादेविया	19
9	शाश्वत है भारतीय संस्कृति	कृष्ण कुमार यादव	20-27
10	उजाले की ओर : मिन्नी मिश्रा	पुस्तक समीक्षा	28
11	कविता	सुषमा सक्सेना	28
12	पाटी-पत्नी के रिश्ते : समझौता	शील निगम	29-30
13	कविता	अलंकृता राय	30
14	कविता	शिवानंद सिंह सहयोगी	30
15	दोहे	छाया शुक्ला	30
16	बाल अधिकारों के प्रति सजगता	आकांक्षा यादव	32-36
17	कहानी : साथी	इन्दु सिन्हा "इन्दु"	38-39
18	कहानी : इंट्यूशन	संजय कुमार सिंह	41-45
19	कविता	नवीन कुमार पंचोली	45
20	कहानी : वसीयतनामा	पद्मा अग्रवाल	47-52
21	लघुकथा : गरीबी	प्रिया देवांगन 'प्रियू'	53
22	लघुकथा : सिलसिला	नीना सिन्हा	53
23	समाचार : राजेंद्र सिंह साहिल सम्मानित	सिद्धेश्वर/रामयतन	55
25	लघुकथा	सतीश बब्बा	55
26	कविता	बाबा कल्पनेश	56
27	कविता	सूर्य नारायण गुप्त	56
28	ग़ज़ल	विज्ञान व्रत	57
29	लवी मेला	आशा शैली	59-64
30	कविता	सागर तोमर	64

पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक, मुद्रक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली-110092 फोन : 9868108713

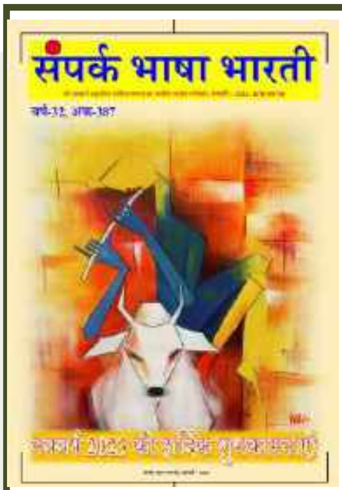

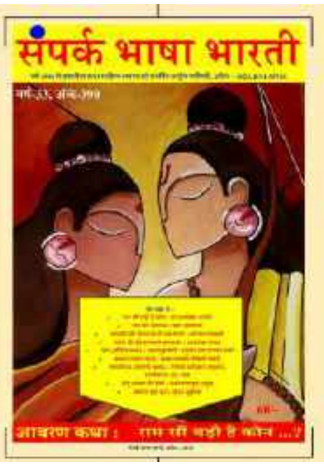

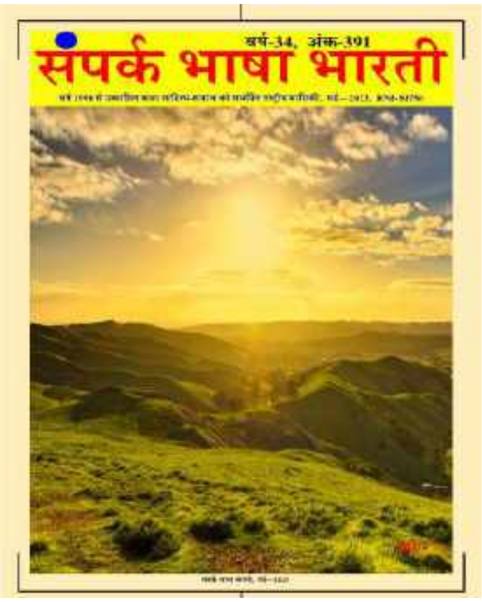

पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा।

पुस्तक समीक्षा के लिए समीक्षार्थ पुस्तक की प्रति भेजना अनिवार्य है।

प्रधान कार्यालय : ग्राम-मकरी, पोस्ट-भुइंदहा, पृथ्वीगंज हवाई अड्डा, प्रतापगढ़-230304 उत्तर प्रदेश
नई दिल्ली कार्यालय : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092

पत्रव्यवहार तथा पुस्तक भेजने का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092
फोन नंबर : 9868108713/7701960982
ईमेल : sampark bhashabharati@gmail.com

सभा समाचार

प्रतिमा पुष्प और अलंकृता राय की पुस्तकों का हुआ विमोचन...

प्रयागराज सुन कर तन मन में वह फुरहरी नहीं छूटती है जो कि इलाहाबाद सुन कर छूटती थी।

"इलाहाबाद से रिश्ता बचपन से था जबकि प्रयागराज तो बस जुम्मा जुम्मा कुछ दिन की देन है।

"बस कुछ यों समझ लीजिए कि जो आनंद अपने बीते समय के गानों को सुनने में आता है वह आनंद आज कल के गानों को सुनने के बाद कहां आता है।

"बस, इलाहाबाद हमारे लिए बीते दिनों के वही पुराने गीत जैसा है जिसे मन गाहे ब गाहे दोहराने को तरसता है।

"दिल्ली में रह कर भी मैं दिल्ली में नहीं रह पाया। लगता था कि दिल्ली का हूँ ही नहीं, वह तो इलाहाबाद का दरख़्त है जिसे समय की आंधी उड़ा कर दिल्ली ले गई।

"एक दम वैसे ही जैसे किसी भयानक गलती से नारियल का पौधा मरुस्थल में रोप दिया गया हो।

"जो बात इलाहाबाद में थी वह कहीं भी नहीं थी।

देसी आम के बड़े बड़े बागों में फल से लदे वृक्षों ने उस की जेठ की दुपहरी को अपनी ठंडी छांव से सींचा था।

"ज़मीन तक झुक आए उन दरख़्तों की सूंड सी लटकती डालियों ने उसे सदैव निमंत्रित किया था, ऊंचे आकाश को छू आने का। और वह भी भला कब इनकार करने वाला था इस निमंत्रण को।

"आम की डालियों पर चील्होर पाती खेलते खेलते वह पेड़ की ऊंचाई छू आता था। तब उसे वहां से दिल्ली नहीं दिखाई देती थी।

वर्ष 2008 से वर्ष 2017 तक हर महीने दिल्ली से दो बार इलाहाबाद आना–जाना होता था।

"अभिप्राय होता था, इलाहाबाद नैनी औद्योगिक क्षेत्र की अपनी इकाई को देखने का।

"प्रयागराज एक्सप्रेस, दूरंतो, हमसफर इन ट्रेन में तीन–महीने अग्रिम का आने–जाने का आरक्षण रहता था।

.......खैर यह सब किसी कहानी का हिस्सा नहीं है....कुछ कुछ आप बीती है। इस पर आगे फिर कभी....

अभी तो ज़िक्र है भदोहीं की कथाकार/कवयित्री सुश्री प्रतिमा पुष्प और उनकी यशस्वी सुपुत्री सुश्री अलंकृता राय की पुस्तकों के लोकार्पण का।

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

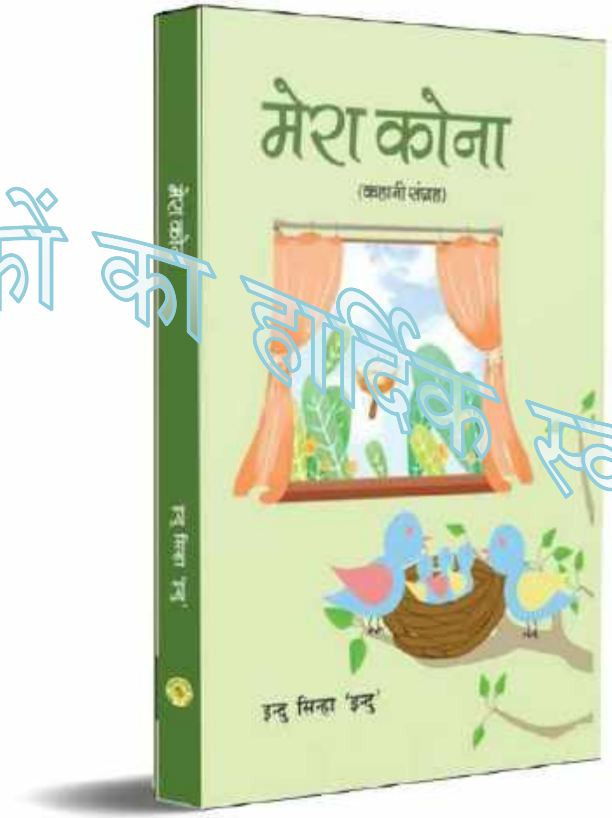

Book Name : मेरा कोना (कहानी संग्रह)
Author : इन्दु सिन्हा 'इन्दु'
ISBN : 978-81-958985-1-0
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 160
Price : 250/-
Genre : Prose /गद्य

कथा जगत के उदीयमान महिला कथा लेखिकाओं में इन्दु सिन्हा "इन्दु" खासा परिचित नाम हैं। इससे पहले कि मैं इस संकलन में प्रस्तुत कहानियों का विस्तृत उल्लेख करूँ मुझे लगता है कि लेखिका की कहानियों और उसके लेखन की पृष्ठभूमि पर तनिक चर्चा अवश्य कर ली जाय। लेखिका अपनी कहानियों को बहुत सहजता से अपने इर्दगिर्द से उठाती है उसने आत्मकथ्य में एण्डर्सन के कथन का उल्लेख भी किया है जिसमें लेखक कहता है कि 'स्वयं जीवन जिनका सृजन करता है उनसे श्रेष्ठ किस्से कहानियाँ नहीं होतीं।' बस इसी कथ्य के बाद से लेखिका का रचना संसार शुरू होता है।

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

प्रतिमा पुष्प की कहानियों और कविताओं में गंभीर चिंतन और विमर्श है-भोलानाथ कुशवाहा।

हिंदुस्तान अकादमी प्रमुख रविनंदन सिंह ने बहुत कुछ कहा।

प्रतिमा पुष्प के कविता संग्रह 'रात खिड़कियों से कहानी संग्रह 'दूसरी लौंग', 'नीलांजना' और 'गुलाबी आँखों का दर्द' साथ ही अलंकृता राय के कविता संग्रह 'आधी कप चाय आधी तेरी याद' का हुआ विमोचन प्रयागराज हिंदुस्तानी अकादमी के सभागार में इंक पब्लिकेशन के सौजन्य से हुआ।

पुस्तकों के विमोचन के उपरांत मुख्य अतिथि सरस्वती पत्रिका के संपादक रविनन्दन सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि साहित्य लेखन का कार्य ऐसा होना चाहिए जिसे लोग लंबे समय तक याद रखें। प्रतिमा और अलंकृता इस ओर अग्रसर हैं। अध्यक्षता कर रहे भोलानाथ कुशवाहा ने कहा- प्रतिमा पुष्प की कहानियों और कविताओं में गंभीर चिंतन और विमर्श है जो समाज को सही दिशा देता है।

विमोचन के अवसर पर मंचासीन अतिथि नरेंद्र बहादुर सिंह पंकज, सुधेन्दु ओझा, मधुकर मिश्र, डॉ. अनुराधा ओस और स्वामी आनंद ध्रुव ने अपने विचार व्यक्त किये।

कार्यक्रम का संचालन आनंद अमित ने किया।

विमोचन कार्यक्रम का प्रारम्भ मुख्य अतिथि और मंचासीन अतिथियों ने माँ सरस्वती की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित करके किया। अतिथियों को प्रतिमा पुष्प और अलंकृता राय ने अंगवस्त्र व स्मृति चिह्न भेंट किया।

इस अवसर पर हिंदी श्री पब्लिकेशन की ओर से कवि वेद प्रकाश और मंचासीन अतिथियों ने प्रतिमा पुष्प को हिंदी श्री सम्मान और अलंकृता राय को साहित्य सृजन सम्मान से सम्मानित किया।

कार्यक्रम के दूसरे सत्र में कवि गोष्ठी आयोजित हुई जिसमें भोलानाथ कुशवाहा, कर्मराज किसलय, प्रतिमा पुष्प, अलंकृता राय, आनंद अमित, नरेंद्र बहादुर पंकज, डॉ. अनुराधा ओस, संदीप बालाजी, वेद प्रकाश वेद, नजर इलाहाबादी, शिव प्रकाश साहित्य, उर्वशी उपाध्याय, राम सागर सरस, रीना श्रीवास्तव, इंद्रजीत सिंह वियोगी, चंद्रकांत भ्रमर, आकाश श्रीवास्तव और राकेश यादव ने अपनी रचनाएँ सुनायीं। इस अवसर पर उमेश श्रीवास्तव, विनय कुमार दुबे, अजय सिंह, अशोक गुप्ता, शैलेन्द्र, अनिल अरोड़ा आदि नगर के गणमान्य लोग उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत में इंक पब्लिकेशन के मैनेजिंग डायरेक्टर दिनेश कुशवाहा ने सभी का आभार व्यक्त किया।

चर्चा में भाग लेते हुए सुधेंदु ओझा ने रचनाकारों के लेखकीय व्यक्तित्व की विस्तार से चर्चा की और कहा कि प्रतिमा जी की लेखन क्षमता अद्भुत है।

उनके यहाँ मात्र महिला विमर्श नहीं है वह मानव जीवन से जुड़े विविध विषयों को उठाकर सामयिक हो जाती हैं।

चर्चित कवयित्री डॉ अनुराधा ओस ने कविताओं व कहानियों के उद्धरण देकर यह बताया कि दोनों रचनाकार समय के साथ चलते हुए आज के यथार्थ को सामने लाते हैं।

जाने-माने गीतकार मधुकर मिश्र ने लोकार्पित कहानियों एवं कविताओं के लिए माँ प्रतिमा शर्मा व पुत्री अलंकृता राय की तारीफ करते हुए कहा कि यह सुखद संयोग है।

आनंद ध्रुव, नरेंद्र बहादुर सिंह पंकज, दिनेश कुशवाहा, उमेश श्रीवास्तव आदि ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन आनंद अमित ने किया।

विमोचन कार्यक्रम का प्रारम्भ मुख्य अतिथि और मंचासीन अतिथियों ने माँ सरस्वती की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित करके किया। अतिथियों को प्रतिमा पुष्प और अलंकृता राय ने अंगवस्त्र व स्मृति चिह्न भेंट किया।

इस अवसर पर हिंदी श्री पब्लिकेशन की ओर से कवि वेद प्रकाश और मंचासीन अतिथियों ने प्रतिमा पुष्प को हिंदी श्री सम्मान और अलंकृता राय को साहित्य सृजन सम्मान से सम्मानित किया।

आशाओं का छूना

मन को बहुत
रिझा जाता है,
आशाओं का छूना।

रवि-किरणों ने खोल दिया है,
शुभ-प्रभात का ढाबा,
आभासित प्रतिबिंब मनोभव,
आलोकित है द्वाबा,
फागुन को
चमकाने आया,
थका माघ का जूना।

घूँघट काढ़ चली है कविता,
शब्दों का है रंभन,
व्यंजन की व्यंजना पुरोगत,
अर्थापन है मंचन,
अर्थों की
भड़साईं में स्वर
भाव-चना है भूना।

देवदार की सजी पहाड़ी,
प्रकृति-चित्र का हँसना,
लतिका के जूड़े में जूही,
सुंदरता का खँसना,
मुसकानों की
हरित मनाली
पहुँच गई है पूना।

शिवानन्द सिंह 'सहयोगी'

प्रेमचन्द जी के जन्म स्थली लमही में "दो बैलों की कथा" का वाचन

कथा सम्राट मुंशी प्रेमचन्द जी के जन्म स्थली लमही वाराणसी में उनकी प्रसिद्ध कहानी "दो बैलों की कथा" का वाचन श्री कंचन सिंह परिहार द्वारा किया गया।

देश के प्रसिद्ध साहित्यकार समीक्षक डॉ रामसुधार सिंह ने सम्मान पत्र एवम अंग वस्त्रम देकर श्री कंचन सिंह परिहार को सम्मानित किया।

प्रेमचंद्र शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित पत्रिका "प्रेमचंद पथ" भी संस्था के निदेशक डॉ. राजीव गौड़ द्वारा श्री कंचन सिंह परिहार को उपहार स्वरूप प्रदान की गई।

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

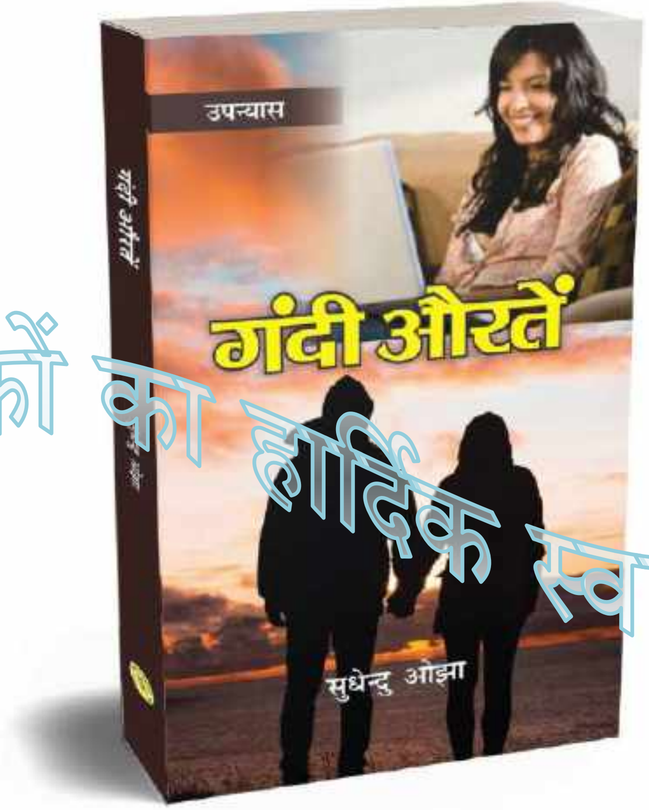

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : गंदी औरतें (सामाजिक उपन्यास)

Author : सुधेन्दु ओझा

ISBN : : 978-81-958985-9-6

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 188

Price : 250/-

Genre Prose : गद्य (उपन्यास)

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

नरेंद्र दीपक के गीतों में सामाजिक सरोकार

नरेंद्र दीपक के गीतों में सामाजिक सरोकार।

सामाजिक सरोकार से तात्पर्य है सामाजिक हितों की चिंता करता हुआ , समाज कल्याण की भावना से ओतप्रोत साहित्य। गद्य और पद्य दोनों में सामाजिक हित चिंतन आवश्यक होता है। साहित्य का मतलब ही होता है सामाजिक हित से सम्पन्न। कविता में सामाजिक हित की बात करने की बहुत गुंजाइश रहती है लेकिन गीत चूंकि वैयक्तिक विधा है इसलिए इसमें वसुधैव कुटुम्बकम की भावना के लिए स्थान सीमित ही होता है। गीत ,व्यष्टि की भावना से आप्लावित होते हैं। इनमें गीतकार के स्वयं के सुख - दुःख, उसकी पीड़ा ही पंजीकृत होती है। उसे खुद के रोने- धोने से फुर्सत ही नहीं मिलती। इसलिए वह दूसरों के बारे में सोच ही नहीं पाता।

गीतकार के रूप में सुप्रसिद्ध नरेंद्र दीपक जी बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी हैं। आपके व्यक्तित्व में श्रेष्ठ संपादक , तटस्थ समीक्षक, प्रशासनिक अनुभव और लोकप्रिय गीतकार का व्यक्तित्व समाहित है।

नरेंद्र दीपक जी सन् 1960 से गीत विधा से जुड़े हुए हैं। गीत आपके निश्छल हृदय से प्रवाहित होते हैं। उनके समकालीन गीतकारों में वीरेंद्र मिश्र, रामेश्वर शुक्ल अंचल, गोपाल दास नीरज, हरिवंश राय बच्चन, शिवमंगल सिंह "सुमन " , रमानाथ अवस्थी, गोपाल सिंह नेपाली , भवानी प्रसाद मिश्र, मुकुट बिहारी सरोज, रामावतार त्यागी, बलवीर सिंह, बाल स्वरूप राही आदि उल्लेखनीय हैं। गीतकारों की नयी और पुरानी दोनों पीढ़ियों को उन्होंने अच्छी तरह पढ़ा, सुना और समझा है।इसलिए उनके गीत इन दोनों पीढ़ियों के मध्य सेतु का काम करते हैं।इस बीच गीत

डॉ अवधेश कुमार चंसौलिया

ने अपना स्वरूप भी बदला। उसके फार्मेट में कुछ गीतकारों ने बहुत परिवर्तन कर दिये और उसका नया नामकरण कर दिया - नवगीत। यह तब्दीली नयी कविता की तर्ज़ पर की गई। इसके संबंध में कहा गया कि नवगीत में वैयक्तिक चेतना के स्थान पर समष्टिगत चेतना का का प्राचुर्य रहेगा। इसमें यथार्थ बोध, आधुनिकता परक दृष्टि, समष्टि भाव, सांस्कृतिक चेतना, ग्रामीण भाव दर्शन, जातीय अस्मिता की प्रधानता, प्रेम - सौन्दर्य के प्रति नवीन दृष्टि, व्यंग्य, करुणा , संवेदना एवं ताजा तरीन शिल्प प्रविधियों का समावेश आदि को प्रमुखता दी गयी।

नवगीत को नवीन परिभाषा में आबद्ध किया गया। डा शंभुनाथ सिंह के अनुसार -" नवीन पद्धति और विचारों की नवीन भाव सरणियों को अभिव्यक्त करने वाले गीत जब भी जिस युग में लिखे जायेंगे नवगीत कहलायेंगे। " 1 डा रामदरश मिश्र ने नवगीत की ये विशेषताएं मानीं हैं - " अनुभूति की सच्चाई, नवीन सौन्दर्य बोध, आकार की लघुता, नवीन बिंबों, प्रतीकों और उपमान की योजना। " 2

लेकिन देवेंद्र दीपक जी गीत के नये प्रारूप को मान्यता नहीं देते। वे गीत को नवगीत मानने से भी इन्कार करते हैं। उनके ही शब्दों में - " गीत पर आजकल नवगीत का ग्रहण लगा हुआ है। गीत का अर्थ गाये जाने से है। नवगीतकार गेयता के पक्षधर नहीं हैं उनका कहना है कि गेयता नवगीतों के लिए आवश्यक नहीं है। मजेदार बात यह है कि जितने भी नवगीतकार मंचों पर जाते हैं, अधिकांश गा कर पढ़ते हैं। "3

नरेंद्र दीपक यद्यपि प्रेम और सौन्दर्य के गीतकार हैं। पीड़ा उनकी सहचरी है। जहाँ प्रेम है वहाँ वियोग भी है। वियोग है तो पीड़ा है। पीड़ा है तो छटपटाहट भी होगी, वेदना होगी तथा व्याकुलता भी होगी। इनके गीतों में प्रेम और श्रंगार की प्रधानता है। यही कारण है कि गीत सूनेपन से ग्रसित रहते हैं। उनमें पलायन भी है और जिजीविषा भी -

" सिर्फ उन्हीं का साथी हूँ मैं

जिनकी उम्र सिसकते बीती।

इसीलिए बस अंधियारों से

मेरी बहुत दोस्ती गहरी। "4

लेकिन जिजीविषा भी दृष्टव्य है -

" मेरे जीवित अरमानों पर, हंस हंस कफ़न उढ़ाने वाले

सिर्फ तुम्हारा कर्ज चुकाने, एक जनम मैं और जिऊंगा। " 5

वैयक्तिक वेदना के स्वर दीपक जी के इतने घने हैं कि वे महीयसी महादेवी की तरह उनको आत्मसात करके पीड़ा में ही आनंद का अनुभव करने लगे हैं -

" इतनी पीड़ा इतना अपयश

मेरे जैसा कौन धनी है।

सुख से इस नालायक मन की

जनम जनम से तनातनी है। " 6

उनका प्रेम सच्चाई से परिपूर्ण प्रेम है। परिस्थितिवश भले ही उन्हें अलग होना पड़ा हो लेकिन उनका मन अभी भी वहीं अटका है। मिलन की यादें उनके अन्तर्मन में सदैव बसीं हुई हैं। वे यादें उनकीं सांसों में रचीं - बसीं हैं और उसकी खुशबू वे हर क्षण महसूस करते हैं -

"अधरों पर चहका करती हो

प्राणों में दहका करती हो।

कहने को योजन दूरी है

सांसो में महका करती हो। " 7

भले ही दीपक जी के गीत प्रेम में डूबे हुए हों। उसमें सराबोर हों। लेकिन उनकी दृष्टि वैयक्तिक भावनाओं से ऊपर उठकर समष्टि की ओर भी जाती प्रतीत होती है।

उनके अनुसार प्रेम में निराशा का माहौल नहीं होता बल्कि उसके माध्यम से व्यक्ति प्रकाश की ओर अग्रसर होता है। प्रेमी की एक मुस्कान से मन की गली में वृंदावन जैसे आनंद की अनुभूति होती है। वृंदावन जैसे

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

लेखकों का हार्दिक स्वागत है !

Book Name : मुआवज़ा

Author : रवीन्द्र कान्त त्यागी

ISBN : 978-81-958985-2-7

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 160

Price : 250

Genre : Prose /गद्य

मुआवज़ा का कथालोक देश की राजधानी दिल्ली के समीप बसे ग्रामीण इलाके से संबंधित है किन्तु इस कथालोक का विस्तार कर के देश के इसे किसी भी उस ग्रामीण क्षेत्र के ऊपर लागू किया जा सकता है जो विस्तृत होते हुए शहर के समीप हो या फिर जहां विकास की आंधी पहुँच रही हो।

जरूरी नहीं कि ग्रामीण अंचल शहर में विलीन हो कर शहर की संस्कृति या विकृति के अनुरूप हो जाएँ।

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

पवित्र भाव मन में जाग्रत हो जाते हैं। यहाँ प्रेम व्यक्ति को उदास या अन्य मनस्क नहीं करता बल्कि नवीन ऊर्जा का संचार करता है - " प्यार जहाँ पर पहरा दे उस ठौर कभी

संभव मुझे नहीं लगता अंधियारा हो।

ज्योति वहाँ पर पंख लगा कर पहुंचेगी

चाहे फिर वह घोर तिमिर की कारा हो।

एक सरल मुस्कान बहुत काफी है

हर गलियारा वृंदावन करने को। " 8

दुख जीवन को मांजता है। वह निराशा के घोर घटाटोप से व्यक्ति को बाहर निकालता है। दुख को वे जीने का माध्यम बनाते हैं। दुख के प्रति ऐसा दृष्टिकोण विरले लोग ही रखते हैं - "दुख से जो मन धुला नहीं वह

चलती फिरती हुई लाश है।

जीने की इच्छा है मेरी

इसीलिए गम की तलाश है। " 9

" सावन आया है " गीत में प्रकृति का विस्तार मानवीय

सुख - समृद्धि तक पहुंचता है -

" दस -पांच घटायें उठीं कहीं

धरती का आंचल हरस गया।

इसका यह मतलब नहीं हुआ

धरती पर खुशियाँ छाई हैं

स्वर चौपायों से फूटें, तब

समझेंगे सावन आया है। " 10

समकालीन समाज में लोग केवल अपने लिए ही जी रहे हैं। दूसरों के दुख शामिल होना, उनकी सहायता करना, परोपकार, सहृदयता, परस्पर प्रेम भाव आदि मानवीय भावनाओं का लगभग पूरी तरह से लोप हो गया है। आदमी भीड़ में भी अकेलापन अनुभव करता है। इन्हीं भावनाओं की अभिव्यक्ति "कितना सूनापन " गीत में रूपायित हुई है -

" भीड़ बहुत लेकिन कुछ अर्थ नहीं

जीने की इसमें सामर्थ्य नहीं।

कैसे हंसी पिलाऊं छंदों को

लाशें तरस रहीं हैं कंधों को।

कोई अपना नज़र नहीं आता

भरी हाट में रेले - ठेले में

चल मेरे मन कहीं अकेले में। "11

वर्तमान पीढ़ी दिशा हीन होकर भटक रही है। उसके पास न वर्तमान है और न भविष्य। संस्कारों से रहित यह पीढ़ी भारतीयता से बहुत दूर होती जा रही है। उसमें भारतीय ज्ञान परंपरा का पूर्णतया अभाव होता जा रहा है। उसकी उच्छृंखलता दिनों दिन बढ़ती जा रही है। "लिव इन रिलेशनशिप " का भूत उसके सिर पर सवार है। वह घर - परिवार से निरंतर अलग होती जा रही है। ऐसी पीढ़ी का दीपक जी ने बहुत ही बारीकी से अध्ययन - मनन किया है, उसे बहुत नजदीक से देखा है। तभी तो वे कहते हैं -

" भटक रही पीढ़ी गति में अलगाव आ गया है

किसी रेल के नीचे जैसे पांव आ गया है। "12

इसी प्रकार की विवशता का भाव " मन नहीं लगता " गीत में भी व्यक्त हुआ है। आज आदमी का एक रूप नहीं है, वह बहुरुपिया है। उसके अंदर एक नहीं , अनेक व्यक्तित्व समाये हुए हैं। ऐसे लोगों को किसी के प्रति भी सहानुभूति नहीं है। उन्हें किसी के दुख को सुनने की भी फुर्सत नहीं है, उसकी सहायता करना तो बहुत दूर की बात है। आज बीच सड़क पर मर्डर हो जाते हैं और लोग तमाशे की तरह उसको देखते रहते हैं, घटना का वीडियो बनाते रहते हैं लेकिन उसे बचाते नहीं हैं -

" दोहरे व्यक्तित्व सारे

कौन अब किसको पुकारे

बोलने को जी नहीं करता

मौन भी रहते नहीं बनता

दर्द ये कहते नही बनता। " 13

मानवीय मूल्यों के ऐसे ह्रास पर एक संवेदनशील तथा जिम्मेदार गीतकार ही छटपटा सकता है और उस पीड़ा को गीतों में उतार सकता है।

गावों में तो शास्वत मूल्य कुछ मात्रा में अभी विद्यमान हैं लेकिन महानगरीय जीवन से ये मूल्य पूरी तरह गायब हो गये हैं। सभी लोग अपने घर में ही कैद रहते हैं। बाहरी दुनिया में क्या हो रहा है वे जानने की कोशिश ही नहीं करते। कहाँ कोई भूखा मर रहा है, पड़ोस में क्या विपदा है, उन्हें कुछ पता नहीं रहता। यहाँ तक की पड़ोसी कौन है? इससे भी वे अनभिज्ञ हैं। अपनों से, रिश्तेदारों से एवं मित्रों से भी आज की पीढ़ी कटी हुई है। वह तो बस मोबाइल में ही मस्त रहती है। समाज की इस प्रवृत्ति को दीपक जी अपने ही विशेष अंदाज में प्रस्तुत करते हैं -

" दृष्टि जहाँ भी गयी नज़र आये

संदर्भों से कटे हुए साये।

हाय गले तक डूब गया हूँ मैं

महानगर से ऊब गया हूँ मैं। " 14

आज के आपा - धापी के युग में परस्पर स्नेह तथा सौहार्द्र की बहुत कमी हो गयी है। घर - परिवार, जातियाँ और विभिन्न समुदाय आपस में अपने अपने स्वार्थों में लिप्त होकर लड़ - झगड़ रहे हैं। इसलिए आज लोग दुखी हैं। दीपक जी इस संबंध में लिखते हैं कि -

" एक स्नेह का दीपक बहुत काफी है

जगमग सारा घर आंगन करने को। " 15

दीपक जी समाज की चिंता करने वाले गीतकार हैं।

वे मानवीय मूल्यों के संरक्षण के पक्के हिमायती हैं। सर्वे भवन्तु सुखिनः में वे पूरा विश्वास रखते हैं। इसी भावना से आप्लावित उनके गीत हैं। यद्यपि उनके गीतों में वैयक्तिक प्रेम की प्रधानता है लेकिन सामाजिक सरोकारों से वे कभी विमुख नहीं हुये। समाज के कल्याण की प्रचुर भावनाओं को उन्होंने अपने काव्य में उचित स्थान दिया है। यदि उनकी काव्य भाषा पर विचार करें तो कहा जा

सकता है कि उनकी भाषा - शैली, गीत के अनुरूप है। भावों की गहन अनुभूति के लिए जैसी भाषा की दरकार होती है उस भाषा का प्रयोग उन्होंने बखूबी किया है। नये प्रतीकों , नये बिंबों और उपमानों से भलीभाँति गीतों को सजाकर प्रस्तुत करने की कला में वे पूर्णतः दक्ष हैं। तत्सम, तद्भव, अंग्रेजी एवं उर्दू के प्रचलित शब्द ही उन्होंने गीतों में टांके हैं। भाषा की दृष्टि से शब्दों को सही जगह फिट करने में वे कुशल जड़िया सिद्ध होते हैं। कहीं - कहीं उनके गीत सूक्ति का रूप भी ले लेते हैं -

" मंजिल पाने की तलाश में

पथ पर सभी चरण चलते हैं।

जिनका लक्ष्य कर्म ही केवल

ऐसे कुछ विरले मिलते हैं। "

भाषा भावों की अनुगामिनी बनकर आपके गीतों में आई है। गीतों में कहीं - कहीं अनायास ही अलंकार भी आकर गीतों के सौन्दर्य को द्विगुणित कर देते हैं। कहीं - कहीं मुहावरे भी अपनी छटा बिखेरते दृष्टिगत हो जाते हैं। शिल्प की नवीनता गीतों की विशिष्टता है। शिल्प की श्रेष्ठता का एक ही उदाहरण पर्याप्त होगा -

" भटक रहा बंजारा मन सुनसान में

दर्द गठरिया बांध उमर के बांस पर।

पराजेय हो शूलों वाले पंथ से

दोषारोपण करता है हर साँस पर। " 17

साठ - पैंसठ वर्षों से वे निरंतर गीतों की समृद्धि में तन मन और धन से समर्पित हैं। उनके तीन गीत संग्रह और एक गीत पत्रिका " पहला अंतरा " इसके प्रमाण हैं। "दर्द मुस्कुराता है" (1981), "अंजुरी भर चांदनी " (1981) एवं " और सोच में तुम "(2010) में प्रकाशित इनके गीत संग्रह हैं। " देर रात तक " एक ग़ज़ल संग्रह भी है जो सन् 2014 में प्रकाशित हुआ है। " गीत गंध " आपका संपादित गीत संग्रह है जो 1966 में दमोह म प्र से प्रकाशित हुआ था। " पहला अंतरा " आपके संपादन में भोपाल से एक दशक से निरंतर त्रैमासिक रूप से प्रकाशित हो रही है। यह सम्पूर्ण पत्रिका गीतों को ही समर्पित है। ये सभी दस्तावेज गीत के प्रति इनके जुनून को सिद्ध करने के लिए काफी हैं। इन्होंने गीत कारों की अनेक पीढ़ियों के साथ गीत की प्रविधि और प्रवृत्तियों को अच्छी तरह जांचा- परखा है। इनसे बेहतर गीत को कौन समझ सकता है। यह तथ्य विचारणीय है।

नरेंद्र दीपक साठ के दशक से निरंतर प्रेम और श्रंगार परक गीत लिख रहे हैं लेकिन अभी तक न तो उनके गीतों में दोहराव है और न उबाऊपन। हर गीत नवीनता के साथ नये तेवरों के साथ उपस्थित होता है।

उसमें नवाचार की प्रविधि विद्यमान रहती है। वे अभी चुके नहीं हैं। क्योंकि नित्य नवीन अनुभव उनके ज्ञान के खजाने में जुड़ते चले जाते हैं। भाषा की सरलता, भावप्रवणता और शिल्प की नवीनता के कारण उनके गीत सदाबहार एवं बारामासी की तरह सदैव ही पाठकों के मन को सुवासित कर आनंदित करते रहेंगे

ऐसा मेरा दृढ़ विशवास है।

जो मैं इतना जानती

दिन सूना-सूना सा बीता
और अनमनी सांझ ढली
उलझे-उलझे धागों वाली
करवट ले कर रात टली
नमी जमी थी कालिख़ लेकर
आँखों के ओसारे पर
बेमन से आकर के बैठी
धूप वहीं चौबारे पर
तना-तना सा शुरू हुआ दिन
हुई दोपहर रूठी सी
दिन ढलने से थोड़ा पहले
आस लगी फिर छूटी सी
गोधूलि के जलते दीपक
देख रहे परछाई को
हवा दे रही जैसे थपकी
ऊंघ रही अमराई को
चूल्हे की उठती लौ कम थी
और धुआं कुछ ज्यादा था
फुकनी फूंक रहा बेकल
मन रोने पर आमादा था
देह पड़ी थी घर के भीतर
आँख लगी दरवाजे पर
पांव रोकना अपने बस में
मन सिवान खड़ा जाकर
बीत गई थी पहर एक
रात बड़ी मायूसी से
जैसे कोई तन्हाई में
मरता है खामोशी से
पहर दूसरा बीत गया पर
कोई आहट ना आई
कली कहीं फूटी थी जो
अध रतिया ही मुरझाई
टपक रही थी शीत बराबर
जैसे अम्बर रोता हो
तारों वाला कफ़न ओढ़कर
कोई चुप से सोता हो
राह अगोरे बीत गई जो
रात बहुत ही भारी थी
खारा पानी कंठ में धरना
बहुत बड़ी लाचारी थी
पूरब की रतनारी आभा
दुःख को धूमिल कर जाती
उत्तर वाली पगडण्डी पर
आँखें फिर से टंग जातीं
ऐसे ही कुछ दिन कटता
ऐसे ही रातें कटतीं
सूने-सूने रस्ते पर से
आँखें कभी नहीं हटतीं

साधना मिश्रा

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

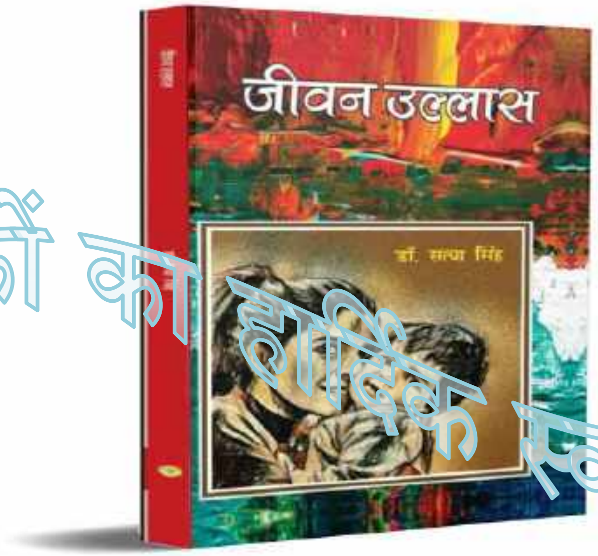

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : जीवन उल्लास

Author डॉ सत्या सिंह

ISBN : 978-81-958985-3-4

Language : हिन्दी

Year of Publication :2023

Page Numbers : 108

Price : 250/-

Genre Poetry : कविता

जीवन के विभिन्न भाव-दशाओं और सत्य को निरूपित करती सरल एवं सरस कविता।

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

विवाह एक पवित्र बंधन (मिथक या विश्वास)

विवाह एक पवित्र बंधन है, सात जन्म तक साथ निभानें का वादा, एक अटूट बंधन। हो सकता है हो लेकिन जहाँ तक सवाल है पवित्रता का तो आज के मार्डन युग में जहाँ स्त्री पुरुष न जानें कितनें सवालों को मन में छुपाए समाज व अभिभावकों की संतुष्टि के लिए विवाह अवश्य कर लेते हैं किंतु विवाह मात्र एक समझौता बन कर रह जाता है। एक दूसरे के साथ रहना और रिश्ता निभाना भी मजबूरी सी बन जाती है।प्रेम की रिक्तता इसे मात्र अवांछनीय बोझ समझ कर परिवार को अक्सर टूटते बिखरते होनें का संकेत देतीहै,किन्तु समाज और परिजनों के दबाव मे संवेदनाहीन हो जैसे तैसे गृहस्थी को ढोते रहना और मन मार कर समझौते करना जैसे नियति सी बन जाती है। ऐसे में विवाह का पवित्र और अटूट बंधन होना अविश्वसनीय सा प्रतीत होता है। प्रेम और बंधन का फर्क स्पष्ट दिखता है। जहाँ स्त्री पुरुष मात्र भोग व भौतिक , आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु वैवाहिक जीवन को एक मात्र लक्ष्य मान कर चलते हैं वहीं इसके बीच से प्रेम न जानें कब सूक्ष्म होकर जीवन के बीच से विलीन होता जाता रहा है। जहाँ पुरुष पत्नी को जीवन सहचरी

प्रतिमा शर्मा "पुष्प"

तो मानता है किंतु प्रेम के लिए उसे कुछ और की तलाश होती है।

पत्नी सर्वसुलभ वस्तु मात्र आवश्यकता की पूर्ति करती दिखती है जो आकर्षण विहीन नमक तेल के गंध में सनी पसीने से लथपथ नमकीन और तीखी जरूर लगती है लेकिन उसमें मिठास और समर्पण की तीव्रता का आभाव पुरुष को भौंरा बना फूलों के मकरंद के लिए इधर उधर मंडराते दिखाता है वहीं स्त्री को भी दिन भर की उठापटक के बाद संवेदना हीन देह का मात्र समर्पण अखर सा जाता है। ऐसे में अनिच्छा से समर्पित होना या मात्र संसर्ग करना कितना पवित्र और निष्ठावान हो सकता है। पवित्रता कहाँ रह पाती है दोनों के बीच....

पुरुष मन इससे कब अछूता रह पाता है, गृहस्थी का बोझ उठाते, निज संबन्धो के फलस्वरूप बच्चों के परिवार में आनें न आने से उपजी व्यस्तता और रोजमर्रे की उठा पटक कब उसके अंतर्मन को उदासीन कर असंतुष्टि व उदासीनता भरते हुए मन ही मन विद्रोही हो

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

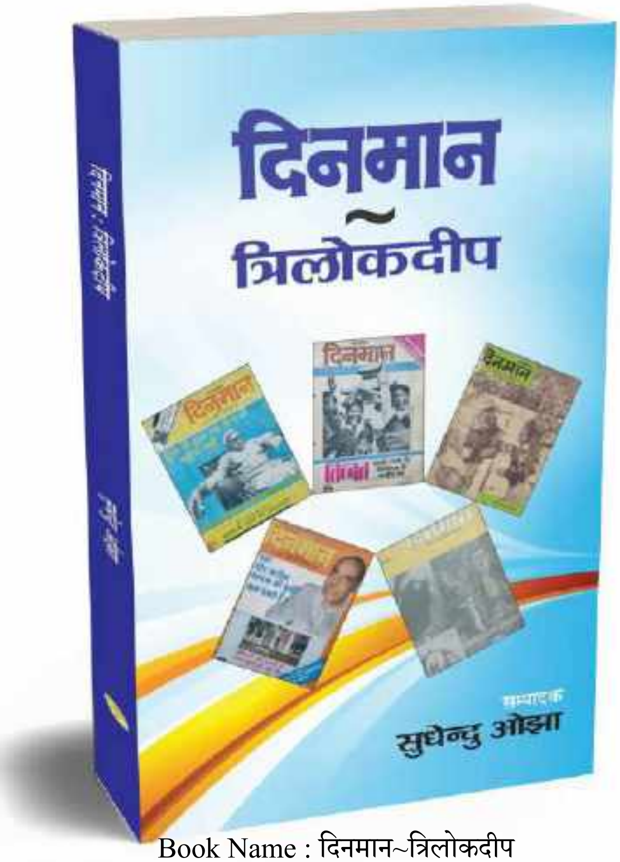

Book Name : दिनमान~त्रिलोकदीप

Author सुधेन्दु ओझा

ISBN : 978-81-963524-6-2

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 168

Price : 300/-

Genre: गद्य : पत्रकारिता

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

स्वछंद होनें के लिए चोरी छिपे सपनें देखनें के लिए एक छटपटाहट बन व्यवहार में तीखापन व उदासीनता बन अवसादित हो उठती है पता ही नहीं चलता।

विवाह का बदलता हुआ स्वरूफ "लिव इन रिलेशन" के रूप में एक दूसरे को समझनें परखनें में भी कुछ हद तक कामयाब हो तो सकता है किंतु कुछ समय पश्चात ही ऊबन एवं एक दूसरे की त्रुटियाँ दिखनी शुरू हो जाती हैं फिर "ब्रेक अप" होकर दूसरे साथी की तलाश में भटकाव और तलाश शुरू हो जाती है, ऐसे में विवाह की पवित्रता पर सवाल उठता है कि क्या बे मन का समझौता जो जैसे तैसे साथ बिताते हुए, एक दूसरे की कमी निकालते हुए मन में कड़वाहट लिए पवित्र रह पाता है क्या।"

आधुनिक युग और प्राचीन युग के विवाह संबन्धों में भी कोई विषेश अंतर नहीं रहा है। जहाँ पुरुष एक या उससे अधिक स्त्रियों से विवाह कर अपनीं संतुष्टि और सामर्थ्य को संतृप्त करता दिखता रहा वहीं स्त्रियाँ भी पुरुषों के बीच वस्तु की तरह बंटती रही हैं। स्त्रियों की दशा तो प्राचीन समय से ही अच्छी नहीं रही। घुटन,क्षोभ,पीडा़, तिरस्कार और असुरक्षा की भावना से ग्रसित वे असमय मृत्यु की ग्रास बनती रहीं। कभी सती प्रथा, कभी पर्दा प्रथा और कभी बेमेल विवाह की वेदी पर चढ़ कर अपनें जीवन को समाप्त करती रहीं। त्याग व धैर्य की प्रतिमूर्ति बनना इनकि नियति बन गयी थी, नतीजन भटकाव, आसक्ति एवं चोरी छिपे अवैध संबंधों का बनना एक अपराधिक भावना को उत्पन्न होने देना क्या पवित्रता की श्रेणी में आ पाता है भला, ऐसे में विवाह एक पवित्र बंधन कैसे और कब रह पाता है।

स्त्रियां कभी भी किसी भी समय काल में यदि अपनें हक के लिए यदि आवाज भी उठाती हैं तो चरित्रहींन , उदंड , और नीर्लज्जता की उपाधि स्वागत के लिए तैयार रहतीं हैं , फिर भी आज की स्त्री अपनें लिए जीना चाहती है,ऐसे में विवाह ही एक ऐसा बंधन है जो कुछ हद तक अभी भी इन्हें बंधन में बांधे रखनें के लिए बाध्य तो करता है किंतु थोडी़ आजादी, थोडा़ विद्रोह गृहस्थी व विवाह के बंधन को कमजोर भी बनाता है।

विवाह एक परिवार और संगठन की रचना कर एक सुदृढ समाज की रचना का भार अपनें कंधे पर लेता है । विवाह समाज की सबसे स्थिर व्यवस्था,समर्पण और विश्वास की सुदृढ नीव है। अनेक प्राणियों की जीवन संरचना, भरण पोषण का दृढ़ दुर्ग है। प्रेम व त्याग का सबसे सुंदर स्थान है। निर्माण व निरंतरता का सुंदर विकल्प है। परंतु यह भ्रम की पवित्र बंधन है मैं नहीं मानती। हां अग्नि के फेरे लेते हुए सात वचनों के आदान-प्रदान एवं मंत्रोच्चारण के मध्य पवित्रता के भाव उत्पन्न अवश्य होते हैं परन्तु समय और परिस्थितियां शनैः शनैः धूमिल पड़ती जाती हैं और पवित्रता छू मंतर हो उठती है उसके स्थान पर जीवन यापन और भरण पोषण का स्वार्थ एक दूसरे को जोड़े रखता है बस। फिर भी हमारा भारतीय समाज आज के आधुनिक युग में भी विश्व के पटल पर अपनी संस्कृति,परंपरा और विवाह जैसे संबधों के कारण देश विदेश की संस्कृति और परंपराओं को सम्मोहित करता है। आज के परिवेश में टूटते हुए परिवार, एकाकी जीवन एवं आधुनिक जीवनशैली और ऐश्वर्य का प्रलोभन, धनोपार्जन के लिए संवेदनशील होता जा रहा है, परिणाम स्वरूप प्रेम की अल्पता, बड़े बूढो़ की उपेक्षा, संयुक्त परिवारों का लगभग विलुप्त होना मनुष्य को रुग्ण व विवेकहीनता की ओर ले जा रहा है। ऐसे में विवाह एक पवित्र बंधन और सात जन्म का बंधन मानना अविश्वसनीय सा प्रतीत होता जा रहा है।

आज के आधुनिक परिवेश में विवाहोपरांत स्त्रियां भी स्वच्छंद,आर्थिक सुदृढ़ीकरण एवं "ओपन माइंडेड"होती जा रही हैं।वे अपनी आवश्यकताओं के लिए पुरुष पर निर्भर नहीं रहना चाहतीं। शिक्षा, प्रचार, फैशन व पैशन सब कुछ प्राप्त होते हुए भी अधिकांशतः स्त्रियां वैवाहिक पवित्रता को जीना चाहती हैं क्योंकि जन्म से ही लिंग भेद की घुट्टी पी कर बड़ी हुई कहीं न कहीं स्त्री सुलभ कोमलता, चंचलता व असुरक्षा की भावना इनके अंदर जीवित है, परन्तु "विवाह एक पवित्र बंधन" यह तथ्य पूर्णतया सत्य नहीं प्रतीत होता है।

घर

घर
कभी-कभी
नहीं रहता घर
मकान हो जाता है।

बनावटी रिश्तों के
विशाल ब्लैक होल में
कटे पंख के पाखी जैसा
आदमी
छटपटाता है
फड़फड़ाता है
जीने के लिए।

कभी-कभी
अकेला
निपट अकेला
हो जाता है आदमी।

कठिन होता है कितना
स्वार्थी और जंग लगे
रिश्तों के बीच
अजनबी की तरह
जीते जाना।

वफा -दोस्ती- प्यार
होता है
रेगिस्तान में
पानी की तलाश सा।

सचमुच घर
कभी-कभी
नहीं रहता घर
मकान हो जाता है।

कृष्ण चंद्र महादेविया

शाश्वत है भारतीय संस्कृति और इसकी विरासत

कृष्ण कुमार यादव

पुरातन और आधुनिकता का जीवंत संगम है भारतीय संस्कृति

किसी भी राष्ट्र की उन्नति का सीधा सम्बन्ध उसकी संस्कृति से होता है। संस्कृति ही वह तत्व है जो एक राष्ट्र की परम्पराओं को अन्य से अलग करते हुए उसे एक विशिष्ट पहचान देती है। भारत प्राचीन काल से ही सांस्कृतिक गतिविधियों और परम्पराओं में विश्व का अग्रणी राष्ट्र रहा है। जब समग्र विश्व की सभ्यतायें प्रगति के शैशव काल में विचरण कर रही थीं, तब भारतीय ऋषि तत्व ज्ञान की गहन मीमांसा, चिंतन एवं मनन में लीन थे- ‘‘ज्ञानं तृतीयं मनुजस्य नेत्रं समस्ततत्वार्थ विलोकिदक्षम्। तेजोड्नपेक्षं विगतान्तरायं प्रवृतित्त मत्सर्व जगत्त्रयोपि।।‘‘ (सुभाषित रत्न संग्रहः पृष्ठ-194)। प्राचीन भारतीय चिन्तकों, ऋषि-मुनियों, विचारकों व विद्वानों ने देश में सामाजिक-सांस्कृतिक-शैक्षणिक-धार्मिक-आध्यात्मिक इत्यादि क्षेत्रों में ऐसी गतिविधियों की नींव रखी, जो एक पीढ़ी से

दूसरी पीढ़ी में हस्तान्तरित होकर अक्षुण्ण परम्पराओं के कालक्रम में सदैव जीवंत रहीं। यही कारण था कि समय-समय पर तमाम आक्रमणकारियां ने भारतीय संस्कृति पर हमला करना चाहा, पर अपनी निरन्तरता और जीवंतता के चलते भारतीय संस्कृति ने उन सभी को आत्मसात् कर लिया। विश्वप्रसिद्ध तमाम विद्वानां और मनीषियों ने भारतीय संस्कृति की गहराई को परखने के लिए यहाँ आकर अध्ययन किया और इसकी महिमा अन्य देशों तक फैलायी। इकबाल ने यूँ ही नहीं कहा कि-‘‘सारे जहां से अच्छा, हिन्दोस्तां हमारा........सदियों रहा है दुश्मन दौरे जहां हमारा, कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।‘‘

भारत की संस्कृति बहुआयामी है जिसमें भारत का महान इतिहास, विलक्षण भूगोल और सिन्धु घाटी की सभ्यता के दौरान बनी और आगे चलकर वैदिक युग में

विकसित हुई, बौद्ध धर्म एवं स्वर्ण युग की शुरुआत और उसके अस्तगमन के साथ फली-फूली अपनी खुद की प्राचीन विरासत शामिल हैं। इसके साथ ही पड़ोसी देशों के रिवाज़, परम्पराओं और विचारों का भी इसमें समावेश है। पिछली पाँच सहस्राब्दियों से अधिक समय से भारत के रीति-रिवाज़, भाषाएँ, प्रथाएँ और परम्पराएँ इसके एक-दूसरे से परस्पर सम्बंधों में महान विविधताओं का एक अद्वितीय उदाहरण देती हैं। भारत कई धार्मिक प्रणालियों, जैसे कि सनातन धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म और सिख धर्म, सिंधी धर्म इत्यादि का जनक है। इसी समृद्ध परंपरा को रेखांकित करते हुए स्वामी विवेकानंद ने उद्घोष किया था कि-" हमें विदेशी लुटेरों से भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है। वह हमारे देश की भौतिक संपदा को लूट सकते हैं, पर हमारी आध्यत्मिक उपलब्धियों का स्पर्श तक नहीं कर सकते।"

भारतीय संस्कृति की ज्ञान परंपरा काफी समृद्ध रही है। इसने दुनिया के प्राचीनतम ग्रन्थ ऋग्वेद, वेदों की एक लाख श्रुतियों, उपनिषदों के ज्ञान, महाभारत के राजनैतिक दर्शन, गीता की समग्रता, रामायण के रामराज्य, पौराणिक जीवन दर्शन एवं भागवत दर्शन से लेकर संस्कृति के तमाम अध्याय रचे। तभी तो दुनिया भर में भारत के आध्यात्मिक ज्ञान को सहेजने का प्रयास चल रहा है। वेदों की 28 हजार पांडुलिपियाँ भारत में पुणे के भंडारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट में रखी हुई हैं। ऋग्वेद की 1800 से 1500 ईसा पूर्व की 30 पांडुलिपियों को यूनेस्को ने भी वर्ष 2007 में सांस्कृतिक धरोहर की सूची में शामिल किया। ऋग्वेद को इतिहासकार हिन्द-यूरोपीय भाषा-परिवार की अभी तक उपलब्ध पहली रचनाओं में एक मानते हैं। यह तीन हजार साल से ज्यादा समय से विचारधारा, महत्वाकांक्षा, अभिलाषा और मानव कल्पना की सजीव अभिव्यक्ति का परिचायक है। यह संसार के उन सर्वप्रथम ग्रन्थों में से एक है जिसकी किसी रूप में मान्यता आज तक समाज में बनी हुई है।

भारतीय संस्कृति और अध्यात्म का प्रभाव वैश्विक स्तर पर भी देखा जा सकता है। कुछ वर्ष पहले अमेरिका स्थित नेवादा विश्वविद्यालय में दूसरी सालाना इण्टरफेथ बक्कालॉरीट सर्विस के दौरान वैदिक ग्रन्थों के श्लोकों और मंत्रों का जाप किया गया। इसका उद्देश्य स्नातक कक्षा में पहुँचने वाले छात्रों द्वारा सपरिवार ईश्वर के प्रति आभार प्रकट करना था। वर्ष 2007 में अमेरिका के तमाम प्रान्तों की विधानसभाओं का सत्र और अमेरिकी सीनेट का सत्र वैदिक मंत्रोच्चार की गूँज के साथ आरम्भ हुआ। यही नहीं अमेरिकी गिरजाघरों में भी ऋग्वेद के मंत्र और भगवद्गीता के श्लोक गूँजने लगे हैं। वर्ष 2007 में थैंक्सगिविंग डे पर नेवादा प्रान्त में रेनो स्थित एपिस्कोपल गिरिजाघर में वैदिक मंत्रोच्चार के साथ लोगों ने मानव जीवन धन्य बनाने के लिए ईश्वर को धन्यवाद दिया। इन सबसे प्रभावित होकर अमेरिका के रूट्जर्स विश्वविद्यालय ने हिन्दू धर्म से संबंधित छः पाठ्यक्रम आरम्भ करने का फैसला लिया, जिसमें वाचन परम्परा, हिन्दू संस्कार महोत्सव, हिन्दू प्रतीक, हिन्दू दर्शन एवं हिन्दुत्व तथा आधुनिकता जैसे पाठ्यक्रम शामिल होंगे तथा नान क्रेडिट कोर्स में योग और ध्यान तथा हिन्दू शास्त्रीय और लोकनृत्य शामिल किये जायेंगे। यही नहीं, अमेरिका के रिसर्च ऐंड एक्सपेरीमेंटल इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूरो साइंसेज के वैज्ञानिकों ने ऊँ के उच्चारण से शरीर में होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन किया और पाया कि इसके नियमित प्रयोग से अनेक असाध्य रोग दूर हो गए। और-तो-और अमेरिका में 'रामायण रीबॉर्न' श्रृंखला वाली कॉमिक्स ने बैटमैन, सुपरमैन और स्पाइडरमैन को पीछे छोड़कर धूम मचाई। अमेरिका की वरजिन कॉमिक्स द्वारा गॉथम कामिक्स के साथ मिलकर 30 हिस्सों वाली इस श्रृंखला के प्रकाशन में सिर्फ रामायण आधारित कॉमिक्स ही नहीं अपितु भारतीय पात्रों जैसे साधू और देवी तथा नागिन को लेकर बनी कॉमिस भी धूम मचा रही हैं। निश्चिततः कर्म,

भाग्य और समय जैसी भारतीय अवधारणाओं ने फंतासियों पर आधारित अमेरिकी कॉमिक्स बाजार में भूचाल पैदा कर दिया। पश्चिमी विज्ञान भी अब यह स्वीकारने लगा है कि भारतीय जीवन प्रतीकों में दम है। एक दौर में पश्चिमी देशों के लोग भारत को सपेरों व जादूगरों के देश के रूप में पहचानते थे। धर्म व अध्यात्म के रस में लिपटे प्रतीकों को वे उपहास की वस्तु समझते थे पर अब वही इसकी जड़ों में जाने लगे हैं।

किसी भी संस्कृति के उन्नयन में भाषा का बहुत बड़ा योगदान होता है। भारत में बोली जाने वाली भाषाओं की बड़ी संख्या ने यहाँ की संस्कृति और पारंपरिक विविधता को बढ़ाया है। भारत में कुल मिलाकर 415 भाषाएं उपयोग में हैं। कार्ल मार्क्स ने 1853 में एक निबंध में भारत को "हमारी भाषाओं और धर्मों का स्रोत" बताया था। भारतीय परंपरा में कबीर, रैदास, सूरदास, गुरुनानक व रामकृष्ण परमहंस भाषा के बड़े ज्ञाता नहीं थे, पर वाचिक परंपरा के माध्यम से उन्होंने समाज को नई राह दिखाई व जागरुकता पैदा की। यह वाचिक या मौखिक परंपरा पीढ़ी दर पीढ़ी प्रवाहित होती है और लोक साहित्य व लोक संस्कृति को प्रस्फुटित करती है। बकौल गोपीनाथ कविराज, "भारतीय संस्कृति में पौराणिक कथाओं, तीर्थाटन, व्रत, उत्सव और पर्वों की जो प्रणाली परंपराओं से चली आ रही है, उसी से लोक-संस्कृति का संपादन हुआ है। इस प्रशस्त प्रणाली ने भारतीय जीवन, भारतीय संस्कृति और भारत देश को प्राणवान एवं जागृत बनाये रखने में बड़ा योग दिया है। कैलाश से कन्याकुमारी और परशुरामकुण्ड (आसाम) से सिंधु तक की भाषा, रहन-सहन की विभिन्नता होते हुए भी तीर्थाटन प्रणाली देश की एकता को अविच्छिन्न बनाये हुए है। लोकगीत, लोकचित्र, लोकनृत्य, लोकअभिनय और लोकचर्चाएं सभी कथा-प्रणाली से उद्भूत हैं।" यद्यपि वाचिक परंपरा का अपना महत्व है, पर इसकी सार्थकता तभी है जब इसे समय रहते शब्दों में गूंथ दिया जाय, अन्यथा पीढ़ियों के संक्रमण काल में इसके विलुप्त होने का खतरा पैदा हो जाता है। भाषा शब्दों को संस्कार देती है और मातृभाषा से ज्यादा सुख किसी भाषा में कहाँ। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में-"हिन्दी लाखों-करोड़ों के सुख-दुख और आशा-आकांक्षा को अभिव्यक्ति देने वाली ऐसी लोकभाषा है जो पराधीनता के बंधन काटते-काटते बड़ी हुई, संघर्ष में जन्मी और संघर्ष में ही शक्ति संचय करती रही है। उदरपोषिका भी है यह, ज्ञान अथवा संस्कारदात्री भी। जायसी, कबीर, तुलसी, रसखान, सूरदास, मीरा, प्रसाद, मैथिलीशरण गुप्त, सुभद्रा कुमारी चौहान प्रभृति साहित्य-सर्जकों ने हम पारायणकर्ताओं को भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, अनुशासन, राष्ट्रप्रेम, सत्य, धर्म, परोपकार, संवेदना, दया, क्षमा, विनम्रता, नारी-सम्मान जैसे अनेकानेक जीवन-मूल्यों से परिचित कराया तथा वही हमारी शिक्षा संपदा है। हमने सत्य के प्रति अनिष्टा से हुई अपकीर्ति को मृत्यु से भी नेष्ट माना है। अपने आदर्श व्यक्तियों से सीखा है, शरण में आये हुए शत्रु को अभय प्रदान करना, पारस्परिक निर्भरता और निष्कपटता। वर्तमान में में विश्व के विभिन्न भाषायी कला, साहित्य और विविध विज्ञान के पाठ्यक्रम में अपने-अपने स्वार्थ से जोड़कर इनके अर्थ निकाले हैं। यह उनका दुर्भाग्य ही कहा जाएगा। हम युवावर्गीय भारतीयों, विशेषकर वे जो विवकेशून्य हैं, पाश्चात्य जीवनशैली की अपरूकता में ही सुषमा के दर्शन करना जिनकी नियति बन चुकी है, आत्मघात को ही जीवनोत्कर्ष का सन्मार्ग मान बैठे हैं, उनके लिये यही कहना उपयुक्त होगा कि उनकी चिंतनवृत्ति की फिसलन का इलाज कतई असंभव है।"

भारतीय ज्ञान परंपरा में संस्कृत को देववाणी कहा गया है। आखिर यूँ ही संस्कृत को इण्डो-यूरोपियन भाषाओं की जननी नहीं कहा जाता। भारतीय परिप्रेक्ष्य में संस्कृत मात्र

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

लेखकों का हार्दिक स्वागत है !

Book Name : मोड़ पर ज़िंदगी

Author डॉ सत्या सिंह

ISBN : : 978-81-963524-3-1

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 118

Price : 250/-

Genre Poetry : कविता

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

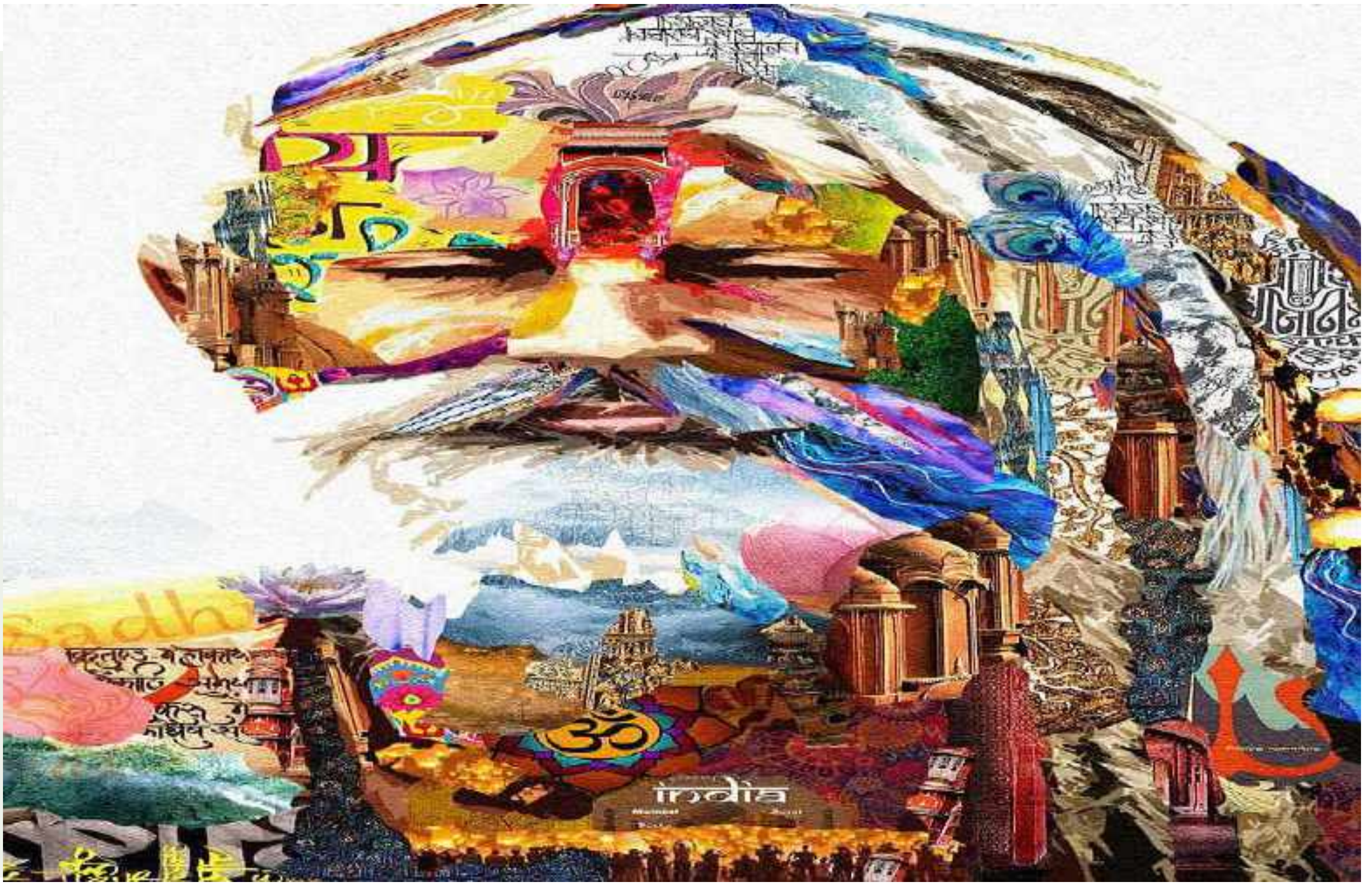

भाषा की पर्याय नहीं है बल्कि भारत के स्वर्णिम अतीत और भारतीय संस्कृति की अद्भुत जीवंत अभिव्यक्ति की पर्याय है। संस्कृत में अध्यात्म, दर्शन, न्याय, संगीत, विज्ञान, गणित, तर्कशास्त्र, चिकित्सा, खगोल विद्या, अर्थशास्त्र, भौतिक विज्ञान, रसायन शास्त्र, वितरण विधि सभी सन्निहित हैं। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 351 में संविधानविदों ने भी सम्मिलित किया है कि - ''हिन्दी भाषा के शब्द भण्डार की मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए संघ उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।'' आई.टी. के इस आधुनिक दौर में पाश्चात्य वैज्ञानिक संस्कृत को कम्प्यूटर हेतु सम्पूर्णता की भाषा करार दे रहे हैं। उनकी मानें तो संस्कृत ही एकमात्र भाषा है जिसमें प्रत्येक शब्द का मूल होता है, एक भी शब्द निरर्थक नहीं होता। यह एक ऐसी भाषा है जिसमें जैसा अक्षर लिखा जाता है, वैसा ही उच्चारित किया जाता है। इसका कारण संस्कृत के व्याकरण का वैज्ञानिक और परिपूर्ण होना है। यह विडम्बना ही कही जायेगी कि हमें उस मैकाले को तो किताबों में रटाया जाता है जिसने ब्रिटिश भारत में अंग्रेजी को अनिवार्य बना दिया पर हमारे इतिहासविद् उन जर्मन विद्वानों का जिक्र करने से चूक जाते हैं, जिन्होंने संस्कृत भाषा साहित्य को अपनी भाषा में अनुवाद करके अपने ज्ञान को और भी समृद्ध किया एवं वेदों से विज्ञान तक ले गये। जे. विल्किंसन व जार्ज फॉस्टर जैसे पाश्चात्य विद्वानों ने श्रीमद्भागवतगीता व अभिज्ञान शाकुन्तलम से प्रभावित होकर उनका अंग्रेजी में अनुवाद किया। एशियाटिक सोसायटी के संस्थापक विलियम जोन्स का वक्तव्य गौरतलब है कि- ''संस्कृत की संरचना ग्रीक और लैटिन से अधिक पूर्ण व परिष्कृत है। संस्कृत की संरचना सचमुच अद्भुत है।'' शायद यही कारण था कि 1865 में एक राजाज्ञा के तहत लंदन की रॉयल एशियाटिक सोसायटी में संस्कृत-हिन्दी सहित भारत में मुद्रित सभी भाषाओं के अखबार, पत्रिकायें व पुस्तकें आने लगीं। आज भी अमेरिकी संसद की 'लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस' भारत में छपी हर किताब को तीन महीने के भीतर वहाँ मँगवा लेती है।

स्वयं भारत सरकार के सूचना और प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय में कम्प्यूटर पर इस्तेमाल लायक संस्कृत का कारपोरा (शब्दों का संग्रह) लगभग तीन दशक पहले जर्मनी की मदद से पद्मभूषण पं. विद्यानिवास मिश्र के नेतृत्व में तैयार करवाया था। वस्तुतः कम्प्यूटर गणितीय बायनरी प्रणाली के आधार पर काम करता है। जिस तरह गणित में तीन और पांच अथवा पांच और तीन जोड़ने पर उत्तर एक ही आता है। कम्प्यूटर के लिए इसी तरह की भाषा होनी चाहिए, जिसमें कर्ता और क्रिया के उलट फेर से खास फर्क न पड़ता हो। संस्कृत इसी तरह की भाषा है। इसीलिए इसे पूर्ण भाषा कहा जाता है। इसीलिए जर्मनी के वैज्ञनिकों ने संस्कृत को कम्प्यूटर की समर्थ भाषा के रूप में विकसित करने की संभावना का पता लगाया। 1985 के दौरान अमेरिका के प्रसिद्ध नासा वैज्ञानिक रिक ब्रिग्स ने अपने आलेख 'संस्कृत एण्ड आर्टिफिसियल इण्टेलीजेन्स' में प्रतिपादित भी किया कि- ''संस्कृत एक अद्वितीय भाषा है। संस्कृत का प्रयोग प्राकृत होते हुए भी कृत्रिम भाषा के रूप

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : मुझे कुछ कहना है

Author डॉ सत्या सिंह

ISBN : : 978-81-963524-8-6

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 126

Price : 250/-

Genre Poetry : कविता

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

में किया जा सकता है। यह अविश्वसनीय सा है कि मानव जाति के मध्य 3000 वर्षों तक बोल-चाल की सहज भाषा रही संस्कृत सभी दृष्टियों से परिपूर्ण थी एवं उत्कृष्ट संवाद की संवाहक थी।''

हमारे प्राचीन ग्रंथ प्रकृति के साहचर्य को काफी महत्व देते रहे हैं एवं तदनुसार प्राकृतिक उपादानों को भी। फिर चाहे वह शिक्षा व्यवस्था की गुरुकुल प्रणाली हो या योग और आयुर्वेद। प्रसिद्ध जर्मन दार्शनिक शोपेनहावर ने इस ओर इंगित करते हुए लिखा था कि-"भारत का वातायन हर बात में प्रकृति से संलग्न है और सनातन जीवन से स्पंदित है।" आज यूरोपीय राष्ट्रों और अमेरिका तक में योग, आयुर्वेद, शाकाहार, प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, होम्योपैथी और सिद्धा जैसे उपचार लोकप्रियता पा रहे हैं जबकि हम उन्हें बिसरा चुके थे। हमें अपनी जड़ी-बूटियों, नीम, हल्दी और गोमूत्र का ख्याल तब आता है जब अन्य राष्ट्र उन्हें पेटेंट करवा लेते हैं। योग को लेकर भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अभिनव पहल की और 27 सितंबर 2014 को संयुक्त राष्ट्र महासभा में अपने भाषण के दौरान 'योग दिवस' को लेकर अपना सुझाव रखा। भारत द्वारा प्रस्तावित मसौदा प्रस्ताव को तब 177 सदस्य देशों ने समर्थन दिया और अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस को पहली बार 2014 में संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा मान्यता दी गई। 21 जून 2015 को दुनिया भर में पहला अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया।

आयुर्वेद मानव जाति को ज्ञात सबसे आरंभिक चिकित्सा विधि है। चरक ने 2500 वर्ष पहले आयुर्वेद का समेकन किया था। परम्परागत भारतीय चिकित्सा प्रणाली में कारगर तथा दोषरहित उपचार के तौर पर आयुर्वेद की महिमा ज्ञात है। अब तो भारत से परे इसकी बकायदा प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में पढ़ाई हो रही है, जिसकी प्रेरणा मिली विश्व स्वास्थ्य संगठन के उस अध्ययन से जिसने रियूमेटिक आर्थराइट्सि के इलाज में आयुर्वेद को कारगर व अचूक बताया। कोयम्बटूर स्थित आयुर्वेदिक ट्रस्ट के सहयोग से वाशिंगटन विश्वविद्यालय में आरम्भ इस परियोजना से भारतीय चिकित्सा की आयुर्वेद पद्धति की पारम्परिक मान्यता एक बार पुनः सिद्ध हुई। यह अनायास ही नहीं है कि अमेरिका और यूरोप के विभिन्न मेडिकल कॉलेजों में आयुर्वेद पढ़ाने के लिए भारत से आयुर्वेदाचार्यों को भेजा जा रहा है। आँकड़ों पर गौर करें तो विदेशों में दिनों-ब-दिन आयुर्वेदिक दवाओं की माँग बढ़ती जा रही है। मौजूदा समय में प्रतिवर्ष हजारों करोड़ रुपये की आयुर्वेदिक दवाइयाँ और इससे सम्बन्धित उत्पादों का भारत द्वारा विदेशों को निर्यात किया जा रहा है। अमेरिका, ब्रिटेन, स्पेन, रूस और आस्ट्रेलिया को किये जाने वाले निर्यात में औसतन 25 फीसदी की बढ़ोत्तरी हो रही है। ऐसे में आयुर्वेद की प्रासंगिकता स्वतः सिद्ध है। कोरोना की विभीषिका के दौरान भारतीय जीवन शैली और योग से लेकर आयुर्वेद तक की इसकी विरासत पर पूरी दुनिया ने गौर फ़रमाया।

हम उस देश के वासी हैं, जिसे कभी सोने की चिड़िया कहा जाता था। विदेशी आक्रमणों और अंग्रेजी शासन ने भारतीय अर्थव्यवस्था को रसाताल में पहुँचा दिया और अन्ततः हम 1990 के दशक में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की बाट जोहने लगे। पर

जिस प्रकार से हाल के वर्षों में भारतीय कम्पनियों ने तमाम अमेरिकी व यूरोपीय कम्पनियों का अधिग्रहण किया है और भारतीय या भारतीय मूल के लोग महत्वपूर्ण संगठनों के शीर्ष पर पहुँचे हैं, वह पाश्चात्य अर्थव्यवस्था को आईना दिखाने के लिए काफी है। यही नहीं आज अमेरिका में 38 फीसदी डॉक्टर और 12 फीसदी वैज्ञानिक भारतीय हैं। अमेरिकी स्पेस एजेंसी 'नासा' में 36 फीसदी वैज्ञानिक और इंजीनियर भारतीय हैं तो 'माइक्रोसॉफ्ट' कम्पनी के 34 फीसदी तकनीकी विशेषज्ञ और 'इंटेल' कम्पनी में 20 फीसदी इंजीनियर भारतीय हैं। आज भारत से 100 से ज्यादा देशों को सॉफ्टवेयर का निर्यात किया जाता है। यह मात्र संयोग नहीं है कि टाइम, न्यूज वीक, द इकोनॉमिस्ट व फॉरेन अफेयर्स जैसी प्रतिष्ठित पत्रिकाओं ने हाल के वर्षों में भारत की संस्कृति और अग्रगामी अर्थव्यवस्था पर आवरण कथा और मुख्य लेख प्रकाशित किये। अमेरिकी हावर्ड बिजनेस स्कूल तो आर्थिक सुधारों के पश्चिमी मॉडल के सन्दर्भ में भी पुनर्विचार कर रहा है। हम भले ही गाँधी जी के आदर्शों को तिलांजलि दे रहे हैं पर इस स्कूल ने 20वीं सदी के 'मैनेजमेंट गुरू' के रूप में भारत के राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी को मान्यता दी है। अमेरिका में पिछले कुछ वर्षों में करीब पचास विश्वविद्यालयों और कॉलेजों ने गाँधीवाद पर कोर्स आरम्भ किये हैं। यूनिवर्सिटी ऑफ वेस्ट वर्जीनिया, यूनिवर्सिटी ऑफ हवाई, जॉर्ज मेरुन यूनिवर्सिटी के अलावा और भी कई विश्वविद्यालयों ने अपने यहाँ गाँधीवाद विशेषकर गाँधी जी की अहिंसा और पड़ोसियों से अपनों की तरह व्यवहार करने के दर्शन पर आधारित पाठ्यक्रम शुरू किये हैं। पाश्चात्य संस्कृति में पले-बसे लोग अब भारत आकर संस्कार और वैदिक मंत्रोच्चार के बीच विवाह के बंधन में बँधना पसन्द कर रहे हैंं। ऐसे में तो यही कहना उचित लगता है कि भारत एक समृद्ध संस्कृति का परिचायक है और यह उसकी शाश्वतता है कि दुनिया के तमाम देश हमारी समृद्ध संस्कृति एवं विरासत के तत्वों को अपना रहे हैं। जरुरत है कि पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण करने की बजाय हम भारतीय भी अपनी संस्कृति के तत्वों को सहेजें और उस समृद्ध विरासत का संवाहक बनें।

कृष्ण कुमार यादव, पोस्टमास्टर जनरल, वाराणसी परिक्षेत्र, वाराणसी

पुस्तक समीक्षा

लघुकथा संग्रह "उजाले की ओर "

लेखक:- मिन्नी मिश्रा

प्रकाशन इसमाद प्रकाशन दरभंगा

मुल्य 199

शीर्षक स्त्री मन का अवलोकन है लघुकथा संग्रह "उजाले की ओर"

मिन्नी मिश्रा जी का यह प्रथम लघुकथा संग्रह है लेखिका ने स्त्री मनोविज्ञान को समझते हुए लघुकथाओं को बुना है । लेखिका की पुस्तक में स्त्री पात्र कहीं ना कहीं रूढ़िवादी परंपराओं से बाहर निकलने का प्रयास करते हुए दिखाई देते हैं।

कुछ ऐसी ही लघुकथाएं इस संग्रह में है। जैसे अंतर्जातीय विवाह, अपशकुन, अर्धांगिनी, अम्मा का फैसला, अहम इन लघुकथाओं में स्त्री रूढ़िवादिता से बाहर आती हुई दिखाई देती है।

"गजरे वाली रात" लघुकथा में पति-पत्नी के दरम्यान नीरसता आ जाती है ।

दोनों दायित्वों को निभाते हुए खुद को भुला बैठे थे ।यह कथा इस बात को दर्शाती है कि प्यार करने की कोई उम्र नहीं होती

"डिस्पोजेबल चमचे" मौजूदा राजनीति पर करारा व्यंग्य करती है।

वहीं, "होशियार घरनी" लघुकथा ग्रहणियों के चुनौती पूर्ण जीवन को दर्शाती है। वह सीमित संसाधन में भी खुश रहने की कला जानती है।

इस संग्रह में कुल 83 लघु कथाएं हैं प्रकृति नटी, पेंशन , पत्थर पर दूब, सही खुराक, ईमान का पलड़ा, इंसानियत ही धर्म है , लक्ष्मी नारायण आदि लघु कथाएं अच्छी बन पड़ी हैं ।

"उजाले की ओर" लघुकथा शीर्षक को सार्थकता प्रदान करती हुई बिंबो के माध्यम से बुनी गई एक अच्छी लघु कथा है।

मिन्नी मिश्रा की लघुकथाओं में मिथिलांचल की बोली की झलक दिखाई देती है ।

संग्रह की भाषा सहज सरल है । यह लघुकथा संग्रह स्त्री की जमीनी हकीकत से रूबरू कराता प्रतीत होता है।

मिन्नी मिश्रा का लघुकथा संग्रह "उजाले की ओर" पाठकों के लिए यह अच्छी किताब है मेरी ओर से मिन्नी मिश्रा को उनके प्रथम लघुकथा संग्रह की हार्दिक शुभकामनाएं

लिव इन रिलेशनशिप

बीता बचपन,
किशोरावस्था ने
जब ली थी अंगड़ाई।
जकड़ता मकड़जाल
शंकाओं का,
लिपटती इच्छा बेल
अमर बेल सी।
लगता न कहीं विराम,
न मिलता आराम।
न चाहतें होती पूरी,
लगती हैं सब आधी अधूरी।
बढ़ती चुभन व घुटन ,
सालती कांटक सी,
सर्प दंश सी।
न होता शमन,
समय समय पर,
रेंगती कीड़े सी।
कचोटती हृदय को
अनुभूति जकड़न की,
उपजती उपेक्षा।
तभी सुनाई पड़े,
कुछ शब्द सहानुभूति के।
मिलती शांति, तृप्ति
आहत होता मन
होता शांत व तृप्त।
उपजती चाहत,
मर मिटने की,
एक हो जाने की,
खिल जातीं बांछें,
मन फूला न समाता।

बीज़ पनपता,
लिव इन रिलेशनशिप,
गंधर्व विवाह का।
मतवाला मन समझ न पाता,
बढ़ता अंत:विरोध
समझाना भी समझ तब
समझ न आता शनैः शनैः
दरकता दर्पण
बढ़ता उत्पीड़न,
हैवानियत क्यों कि
प्रेम के पर्दे के पीछे
छुपी है वासना
अंततः
होते 35 टुकड़े,
उबालना कुकर में,
बहाना पानी में,
बीज़ सा जंगल
में बोया जाना
बच्चों, समझो और जानो
मां बाप का दुख दर्द समझो,
परवरिश को पहचानो,
उन से बड़ा हितैषी कौन?
उनका प्यार, चिंता
अनुभवों को समझो
सीख मानो।
'सुषमा' कहती---
अनमोल जीवन संवारो
'नर हो न निराश करो मन को,
व्यर्थ करो न इस जीवन को,
किस अर्थ हुआ जन्म अहो,
कुछ काम करो, कुछ नाम करो।

सुषमा सक्सेना

पति-पत्नी के रिश्ते : समझौता

शील निगम

दृश्य 1

(फैमिली कोर्ट का सीन)

पात्र - पति रमन, पत्नी गौरी, महिला जज,दो वकील और ऑडियंस।

जज- (गौरी से) "मैडम अभी एक महीना आपके विवाह को हुआ है,इतनी जल्दी आपने तलाक़ की अर्ज़ी दे दी? कुछ तो समय दिया होता आपस में मेलजोल बढ़ाने का।"

गौरी - "जज साहब जब हाँडी में चावल पक रहे हों तो केवल एक दाना खा कर पता चल जाता है कि चावल पके या नहीं।"

रमन का वकील -"जज साहब न तो इन्होंने कभी चावल पकाये न ये पति-पत्नी बन पाये।"

जज- (रमन के वकील को टोकते हुए) "आप को भी मौका दिया जाएगा,बीच में न बोलिए प्लीज़।"

जज - "हाँ, तो गौरी जी इस एक महीने में आप को क्या ऐसा लगा कि आप ने तलाक का फ़ैसला ले लिया?"

गौरी- "इनका व्यवहार। शादी की पहली रात ही इन्होंने मुझे लेक्चर पिलाना शुरू कर दिया कि ये अपने घरवालों को कितनी इम्पॉर्टेंस देते हैं? एक लड़की भी तो अपने घरवालों को छोड़ कर आती है।बस मैंने वैसा ही महसूस किया कि इनके साथ रहना मतलब इनके घरवालों की चाकरी करना, जो मुझसे होगा नहीं।"

जज- "हाँ तो रमन जी, आप कहिए आप को क्या कहना है?"

रमन -"जज साहब, मैं एक फैमिली पर्सन हूँ।एक महीना साथ रहने पर समझ आया कि गौरी के मन में अपने घरवालों के प्रति प्रेम और समझ बढ़ाने में समय लगेगा इसलिए मैं इस शादी को एक मौका और देना चाहता हूँ।"

जज- "ठीक है मेरा सुझाव है कि आप दोनों किसी ऐसी जगह चले जाइए जहाँ और कोई न हो और कुछ दिन साथ रह कर एक दूसरे को समझने की कोशिश करिये।"

गौरी का वकील - "जज साहब जब मेरी क्लाइंट ने सोच ही लिया कि तलाक लेना है तो फिर कुछ दिन और साथ रहने का क्या मतलब?"

जज- "मैं इन्हें एक मौका और देना चाहता हूँ।

इसके साथ ही आज की कार्रवाई समाप्त की जाती है।"

रमन - "ज़रा रुकिए जज साहब, अगर आप के पास समय हो तो एक गुज़ारिश है। अभी कुछ समय तलाक़ की प्रक्रिया को रोक दीजिए। इस से मेरे घरवालों को बहुत दुख पहुँचेगा।"

जज - "गौरी जी, आप को कोई आपत्ति है?"

गौरी - "जज साहब मुझे इनके साथ रहना मंज़ूर नहीं।"

जज- "पर आपको कोई ठोस कारण देना होगा तलाक के लिए।"

रमन - "जज साहब, हमारी शादी जरूर हुई पर

हम पति-पत्नी के रिश्ते में नहीं बँध पाये हैं अब तक। गौरी अगर मेरे साथ नहीं रहना चाहती तो कुछ समय अपने मायके में बिता ले या मैं उसके लिए अलग घर की व्यवस्था कर सकता हूँ।"

जज- "गौरी जी आप इसके लिए तैयार हैं?"

गौरी - "तैयार हूँ पर मैं नये ज़माने की लड़की हूँ, आज़ादी पसंद। मायके तो मैं अपनी मर्ज़ी से जाऊँगी, इनके कहने से नहीं। अलग घर में मैं अपने तौर-तरीकों से रहूँगी। रमन को उसमें कोई एतराज़ नहीं होना चाहिए चाहे मुझसे कोई मिलने आए या मेरे साथ रहे। मैं कहीं जाऊँ,जो चाहे करूँ।"

रमन-" जज साहब मेरी शादी चाहे समझौता बन कर रह जाये पर मैं तलाक का ठप्पा नहीं लगने दूँगा। इससे मेरे घरवालों को बहुत कष्ट होगा।"

जज- "ठीक है आप गौरी के लिए अलग रहने की व्यवस्था कर दीजिए।"

आज की कार्रवाई इसी समझौते पर मुल्तवी की जाती है।

(समाप्त)

कुछ उधारी छोड़ रखी है

कुछ उधारी छोड़ रखी है
और सच कहूं तो...
उसे कभी मत चुकाना
मैं चाहती हूं मेरा कुछ
हमेशा तुम्हारे पास रहे
और मैं करती रहूं तगादा
देती रहूं
प्रेम भरी धमकियां
और तुम देते रहो
कल्पित आश्वासन
हर उधारी चुकाने का
जबकि तुम भी चाहते हो
ये सिलसिला कभी न रूके.....

अलंकृता राय

अलंकार का मुल्ला

विधा !
पहनने लगी वर्ण का,
सिला-सिलाया झुल्ला

संज्ञा और विशेषण उभरे,
वाक्यों के घर ठहरे,
क्रिया-विशेषण, सर्वनाम के,
लगे हुए हैं पहरे,
लय की
बंदनवार सजाता,
अलंकार का मुल्ला

अभिधा के अभिराम क्षितिज पर,
चमके कृति के कुंदन,
शब्द-निकेतन के उपवन में,
टहल रहा है गुंजन,
फेंक रही है
स्वर-गुलेल से,
नई व्यंजना गुल्ला |

भावों के अभिव्यक्ति-लोक में,
काव्यशास्त्र का मेला,
शब्दखंड के अर्थखंड में,
संवादों का रेला,
चित्रकाव्य के
आसमान से,
गिरा सर्वप्रिय बुल्ला |

शिवानन्द सिंह 'सहयोगी'

लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली110092

छाया शुक्ला

1
जिसकी जैसी भावना, वैसा उसका चित्र।
गर कुंठा से ग्रस्त हैं, उभरे चित्र विचित्र ll
2
जीवन भर लिखते रहे, फिर भी अर्थ विहीन।
गुरु की महिमा देखिये, रचना रचे महीन ।।
3
कट्टरता अच्छी नहीं, करती बंटा ढार।
हो अपनी या और की, कब देखे परिवार ।।
4
जिसने ली बस बद्दुआ, और उठाई आह।
पतझड़ जैसे वो झरा, होता गया तबाह ।।
5
हृदय पटल की खिडकियां, जब होती हैं बन्द।
वहां कुसुम खिलता नहीं, नहीं गूंजते छंद ।।
6
पानी पानी हो गई, धरती पीकर नीर।
डूब गया तन- मन कहीं, और कहीं तकदीर।।
7
मित्रों से मिलना मगर, इतना नहीं हुज़ूर।
मिलते मिलते एक दिन, हो जाएं हम दूर ।।
8
जीवन छोटा या बड़ा, रखता नहीं महत्व।
जिया सदा सब के लिए, सार वही है तत्व ।।
9
चिंता जिसको देश की, करे रात दिन काम।
स्वयं रखे इक लक्ष्य फिर, हासिल करे मुकाम।।
10
बस कहने पर ज़ोर है, सुनने वाला कौन।
अब मिलते हैं कवि यहां, आधे टुकड़े पौन ।।
11
अचरज मत कर जिंदगी, दोनों तेरे रंग।
जैसे छाया धूप हैं, वैसे सुख दुख संग ।।
12
जैसे छाया में पथिक, पाता है आराम।
जीवन को पादप बना, आ औरों के काम ।।

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : हाशिए पर गीत

Author डॉ सत्या सिंह

ISBN : 978-81-963524-7-9

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 120

Price : 250/-

Genre Poetry : कविता

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

समृद्ध राष्ट्र के लिए बाल अधिकारों के प्रति सजगता जरूरी

बाल दिवस, 14 नवंबर पर विशेष :

बचपन पर मंडराता अँधेरा

देश के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू जी से मिलने एक व्यक्ति आये। बातचीत के दौरान उन्होंने पूछा-''पंडित जी आप 70 साल के हो गये हैं लेकिन फिर भी हमेशा गुलाब की तरह तरोताजा दिखते हैं। जबकि मैं उम्र में आपसे छोटा होते हुए भी बूढ़ा दिखता हूँ।'' इस पर हँसते हुए नेहरू जी ने कहा-''इसके पीछे तीन कारण हैं।'' उस व्यक्ति ने आश्चर्यमिश्रित उत्सुकता से पूछा, वह क्या ? नेहरू जी बोले-''पहला कारण तो यह है कि मैं बच्चों को बहुत प्यार करता हूँ। उनके साथ खेलने की कोशिश करता हूँ, जिससे मुझे लगता है कि मैं भी उनके जैसा हूँ। दूसरा कि मैं प्रकृति प्रेमी हूँ और पेड़-पौधों, पक्षी, पहाड़, नदी, झरना, चाँद, सितारे सभी से मेरा एक अटूट रिश्ता है। मैं इनके साथ जीता हूँ और ये मुझे तरोताजा रखते हैं।'' नेहरू जी ने तीसरा कारण दुनियादारी और उसमें अपने

आकांक्षा यादव,
पोस्टमास्टर जनरल आवास, वाराणसी

नजरिये को बताया-''दरअसल अधिकतर लोग सदैव छोटी-छोटी बातों में उलझे रहते हैं और उसी के बारे में सोचकर अपना दिमाग खराब कर लेते हैं। पर इन सबसे मेरा नजरिया बिल्कुल अलग है और छोटी-छोटी बातों का मुझ पर कोई असर नहीं पड़ता।'' इसके बाद नेहरू जी खुलकर बच्चों की तरह हँस पड़े। यहाँ बचपन की महत्ता को दर्शाती शायर और गीतकार सुदर्शन फ़ाकिर की लिखी पंक्तियाँ याद आती हैं -

ये दौलत भी ले लो
ये शोहरत भी ले लो
भले छीन लो मुझसे मेरी जवानी
मगर मुझको लौटा दो बचपन का सावन
वे कागज की कश्ती वो बारिश का पानी।

बचपन एक ऐसी अवस्था होती है, जहाँ जाति-धर्म-क्षेत्र कोई मायने नहीं रखते। बच्चे ही राष्ट्र की आत्मा हैं और इन्हीं पर अतीत को सहेज कर रखने की जिम्मेदारी भी है। बच्चों में ही राष्ट्र का वर्तमान रूख करवटें लेता है तो इन्हीं में भविष्य के अदृश्य बीज बोकर राष्ट्र को पल्लवित-पुष्पित किया जा सकता है। परन्तु जिस तरह से समाज में बच्चों के प्रति दुर्व्यवहार बढ़ रहा है, वह बेहद चिंताजनक है। बच्चों के साथ शारीरिक, मानसिक, यौनिक अथवा भावनात्मक स्तर पर किया जाने वाला दुर्व्यवहार बाल दुर्व्यवहार कहलाता है। हालाँकि हम बाल दुर्व्यवहार में सामान्यतः यौनिक एवं शारीरिक शोषण को ही शोषण समझाते हैं, जबकि मानसिक तथा भावनात्मक स्तर पर होने वाला शोषण भी इसमें शामिल है। कई बार बाल दुर्व्यवहार मजाक करते-करते होता है, तो कई बार अनुशासन व सुधार के नाम पर दुर्व्यवहार होता है। इन सबमें कई बार माता-पिता, अभिभावक, रिश्तेदार, शिक्षक, सहपाठी व कोच भी संलिप्त रहते हैं। निश्चिततः इस प्रकार का दुर्व्यवहार बच्चों के मानस पर दीर्घकालिक प्रभाव डालता है, जिससे मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं और सामाजिक मेलजोल में कठिनाई जैसी गंभीर समस्याएं पैदा होती हैं। बाल तस्करी भी एक विकराल समस्या है, जहां शोषण के उद्देश्य से बच्चों को भर्ती किया जाता है, परिवहन किया जाता है, स्थानांतरित किया जाता है, आश्रय दिया जाता है या प्राप्त किया जाता है। उनसे घरेलू नौकर, बाल भिखारी, बाल सैनिक, वेश्यावृत्ति या अन्य अनैतिक कार्य कराए जाते हैं।

बच्चों और किशोरों पर होने वाले अत्याचार, हिंसा, अन्याय, क्रूरता और शोषण महज भारत की ही समस्या नहीं हैं, बल्कि दुनिया भर में बच्चों के साथ अन्याय, हिंसा, क्रूरता, प्रताड़ना और भेदभाव होता है। सिर्फ बाहरी व्यक्तियों द्वारा नहीं बल्कि घरेलू रिश्तेदारों द्वारा भी बच्चों का खुलेआम शोषण किया जाता है। बाल यौन शोषण का दायरा केवल बलात्कार या गंभीर यौन आघात तक ही सिमटा नहीं है बल्कि बच्चों को इरादतन यौनिक कृत्य दिखाना, अनुचित कामुक बातें करना, गलत तरीके से छूना, जबरन यौन कृत्य के लिये मजबूर करना, भोलेपन का फायदा उठाने के लिये चॉकलेट, पैसे आदि का प्रलोभन देना चाइल्ड पोर्नोग्राफी बनाना आदि बाल यौन शोषण के अंतर्गत आते हैं।

2002 में जारी विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट के अनुसार विश्व में 18 वर्ष से कम उम्र के 7.9 प्रतिशत लड़के एवं 19.7 प्रतिशत लड़कियाँ यौन हिंसा की शिकार हैं। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के आंकड़ों के अनुसार, 2018 में भारत में हर दिन 109 बच्चों का यौन शोषण किया गया, जिसमें पिछले वर्ष की तुलना में ऐसे मामलों में 22 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई। आंकड़ों से पता चलता है कि 2018 में 21,605 बच्चों के साथ बलात्कार दर्ज किए गए, जिनमें 21,401 लड़कियों के साथ और 204 लड़कों के साथ बलात्कार शामिल थे। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के आंकड़ों के मुताबिक, 2017 में 32,608 मामले दर्ज किए गए जबकि 2018 में 39,827 मामले यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण अधिनियम (पॉक्सो) के तहत दर्ज किए गए। सबसे आश्चर्यजनक पहलू यह रहा कि यौन शोषण करने वालों में नजदीकी रिश्तेदार या मित्र भी शामिल हैं। शारीरिक शोषण के अलावा मानसिक व उपेक्षापूर्ण शोषण के तथ्य भी अध्ययन के दौरान उभरकर आये। हर दूसरे बच्चे ने मानसिक शोषण की बात स्वीकारी, जहाँ 83 प्रतिशत जिम्मेदार माँ-बाप ही होते हैं। निश्चिततः यह स्थिति भयावह है। घरेलू हिंसा का सबसे बुरा प्रभाव बच्चों पर पड़ता है। जिन बच्चों ने घरेलू हिंसा में अपना जीवन बिताया है उनके मस्तिष्क का कॉर्पस कॉलोसम और हिप्पोकैम्पस नामक भाग सिकुड़ जाता है, जिससे उनकी सीखने, संज्ञानात्मक क्षमता और भावनात्मक विनियमन की शक्ति प्रभावित हो जाती है। कई बार बच्चे अपने पिता से गुस्सैल व आक्रामक व्यवहार सीखते हैं। इस का असर ऐसे बच्चों का अन्य कमज़ोर बच्चों और पशु -पक्षियों के साथ हिंसा करते हुए देखा जा सकता है। इसी प्रकार बालिकाएँ नकारात्मक व्यवहार सीखती हैं और वे प्रायः दब्बू, चुप-चुप रहने वाली या परिस्थितियों से दूर भागने वाली बन जाती हैं।

यूनिसेफ द्वारा 2005 से 2013 के बीच किशोरियों पर किये गए अध्ययन के आँकड़े बताते हैं कि भारत की 10 प्रतिशत लड़कियों

को जहां 10 से 14 वर्ष से कम उम्र में यौन दुर्व्यवहार का सामना करना पड़ा, वहीं 30 प्रतिशत ने 15-19 वर्ष के दौरान यौन दुर्व्यवहार झेला। एक सभ्य समाज में बच्चों के साथ इस प्रकार की स्थिति को उचित नहीं ठहराया जा सकता। इंटरनेट और स्मार्टफोन की हर हाथ विशेषकर बच्चों व किशोरों तक पहुँच ने भी गंभीर समस्याएं उत्पन्न की हैं। टेक्नोलॉजी ने भी बचपन पर गंभीर प्रभाव डाले हैं। एक तरफ इसके सकारात्मक पहलू हैं, वहीं अभिभावक बच्चों को समय नहीं दे रहे हैं, जिसका खामियाजा बाद में सामने आ रहा है। ऐसे में जरूरी है कि बच्चों की सुरक्षा के लिए अभिभावक खुद सतर्क हों और बच्चों को भी जागरूक करें। उन्हें सही-गलत और गुड टच-बैड टच के बारे में शुरू से ही समझाएं। माता-पिता द्वारा बच्चों को समय देना, उनकी दिनचर्या व संगति के बारे में जानकारी रखना और उनसे मित्रवत संवाद बहुत जरूरी है, ताकि वे उनसे खुलकर विभिन्न गतिविधियों और अपने साथ हुई घटनाओं को शेयर कर सकें। बात-बात पर बच्चों को दोष देने की प्रवृत्ति या उनकी बातों को बचपना मानकर उपेक्षा करना भी घातक हो सकता है। जब भी बच्चे ऐसी स्थिति से गुजरते हैं तो उन पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ते हैं। उन्हें नींद न आना, तनाव, लोगों से डरना, बिस्तर गीला करना और अन्य कई शारीरिक और मानसिक समस्याएं हो जाती हैं। ऐसे में अभिभावकों को ज्यादा से ज्यादा समय उनके साथ बिताना चाहिए ताकि इस तनाव से बाहर आ सकें। इंटरनेट, मोबाइल, सोशल मीडिया के प्रयोग को नियंत्रित करते हुए इंटरनेट साइट्स पर पैरेंटल कंट्रोलन के विकल्प को मजबूत करना चाहिये। जागरूकता से ही बाल यौन शोषण पर नियंत्रण पाया जा सकता है। भारत में बाल यौन शोषण एवं दुर्व्यवहार के खिलाफ सबसे प्रमुख कानून 2012 में पारित यौन अपराध के खिलाफ बच्चों का संरक्षण कानून (पॉक्सो) है। इसमें अपराधों को चिह्नित कर उनके लिए सख्त सजा निर्धारित की गई है। साथ ही त्वरित सुनवाई के लिये स्पेशल कोर्ट का भी प्रावधान है।

आज देश प्रगति के नए प्रतिमान गढ़ रहा है, परंतु एक स्याह पक्ष यह भी है कि बाल श्रम बेगार की चक्की में बचपन को पीसता नजर आ रहा है। गैर सरकारी आंकड़ों के मुताबिक भारत में लगभग 5 करोड़ बाल श्रमिक हैं। यूनिसेफ के अनुसार दुनिया भर के कुल बाल श्रमिकों में अकेले भारत की हिस्सेदारी 12 प्रतिशत की है। 2011 की जनगणना के आंकड़ों की मानें तो भारत में 8.4 करोड़ बच्चे स्कूल नहीं जाते और 78 लाख बच्चे ऐसे हैं जिन्हें मजबूरन बाल मजदूरी करनी पड़ती है। ऐसे बच्चे कहीं बाल-वेश्यावृत्ति में झोंके गये हैं या खतरनाक उद्योगों या सड़क के किनारे किसी ढाबे में जूठे बर्तन धो रहे होते हैं या धार्मिक स्थलों व चौराहों पर भीख माँगते नजर आते हैं अथवा साहब लोगों के घरों में दासता का जीवन जी रहे होते हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार 2021 में कोरोना काल में दुनिया भर में 160 मिलियन बच्चे बाल श्रम की चपेट में आए थे।अंतरराष्ट्रीय श्रम संघ की एक रिपोर्ट के अनुसार 2016 के बाद से 5 से 17 वर्ष के मध्य खतरनाक काम करने वाले बच्चों की संख्या लगभग 65 लाख से बढ़कर 7.9 करोड़ हो गई है। बाल श्रम में 5 से 11 वर्ष के बीच बच्चों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है। वस्तुत: बाल श्रम एक ऐसा अभिशाप है जो बच्चों से शिक्षा, स्वतंत्रता, स्वास्थ्य जैसी मूलभूत आवश्यकताएं छीन लेता है। जो न केवल उस बालक बल्कि

संपूर्ण राष्ट्र की उन्नति के मार्ग में बड़ी बाधा जान पड़ता है। छोटी उम्र में क्षमता से अधिक मेहनत करने के साथ ही पौष्टिक भोजन न मिलने की वजह से अधिकतर बाल श्रमिक, युवा अवस्था तक पहुंचते-पहुंचते कई तरह की बीमारियों का शिकार बन जाते हैं। उन्हें आमतौर से नाक से जुड़ी बीमारी, सिरदर्द, अंधेपन का रोग हो जाता है। कई बाल श्रमिक थकान और फेफड़े तथा सांस संबंधी रोग के भी शिकार हो जाते है। उचित मार्गदर्शन और देखभाल के अभाव में अधिकतर बाल श्रमिक नशे के भी आदी हो जाते हैं। कम उम्र में ही शराब, सिगरेट और स्मैक पीने की उन्हें लत लग जाती है। गौरतलब है कि अधिकतर स्वयंसेवी संस्थायें या पुलिस खतरनाक उद्योगों में कार्य कर रहे बच्चों को मुक्त तो करा लेती हैं पर उसके बाद उनकी जिम्मेदारी से पल्ला झाड़ लेती हैं। नतीजन, ऐसे बच्चे किसी रोजगार या उचित पुनर्वास के अभाव में पुनः उसी दलदल में या अपराधियों की शरण में जाने को मजबूर होते हैं।

ऐसा नहीं है कि बच्चों के लिये संविधान में विशिष्ट उपबंध नहीं हैं। संविधान के अनुच्छेद 15(3) में बालकों के लिये विशेष उपबंध करने हेतु सरकार को शक्तियां प्रदत्त की गयी हैं। अनुच्छेद 23 बालकों के दुर्व्यापार और बेगार तथा इसी प्रकार का अन्य बलात्श्रम प्रतिषिद्ध करता है। इसके तहत सरकार का कर्तव्य केवल बन्धुआ मजदूरों को मुक्त करना ही नहीं वरन् उनके पुनर्वास की उचित व्यवस्था भी करना है। अनुच्छेद 24 चौदह वर्ष से कम उम्र के बालकों के कारखानों या किसी परिसंकटमय नियोजन में लगाने का प्रतिषेध करता है। यही नहीं नीति निदेशक तत्वों में अनुच्छेद 39 में स्पष्ट उल्लिखित है कि बालकों की सुकुमार अवस्था का दुरूपयोग न हो और आर्थिक आवश्यकता से विवश होकर उन्हें ऐसे रोजगारों में न जाना पड़े जो उनकी आयु या शक्ति के अनुकूल न हों। इसी प्रकार बालकों को स्वतंत्र और गरिमामय वातावरण में स्वस्थ विकास के अवसर और सुविधायें दी जायें और बालकों की शोषण से तथा नैतिक व आर्थिक परित्याग से रक्षा की जाय। संविधान का अनुच्छेद 45 आरम्भिक शिशुत्व देखरेख तथा 6 वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिये शिक्षा हेतु उपबन्ध करता है। इसी प्रकार मूल कर्तव्यों में अनुच्छेद 51(क) में 86वें संशोधन द्वारा वर्ष 2002 में नया खंड (ट) अंतःस्थापित करते हुए कहा गया कि जो माता-पिता या संरक्षक हैं, 6 से 14 वर्ष के मध्य आयु के अपने बच्चों या, यथा - स्थिति अपने पाल्य को शिक्षा का अवसर प्रदान करें। संविधान के इन उपबन्धों एवं बच्चों के समग्र विकास को वांछित गति प्रदान करने के लिये 1985 में मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन महिला और बाल विकास विभाग गठित किया गया। संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 1979 में बाल श्रम के विरोध में एक प्रस्ताव पारित किया जिस को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने बाल श्रम निषेध एवं विनियमन कानून 1986 बनाया।

बच्चों के अधिकारों और समाज के प्रति उनके कर्तव्यों का उल्लेख करते हुए 9 फरवरी 2004 को 'राष्ट्रीय बाल घोषणा पत्र' को राजपत्र में अधिसूचित किया गया, जिसका उद्देश्य बच्चों को जीवन जीने, स्वास्थ्य देखभाल, पोषाहार, जीवन स्तर, शिक्षा और शोषण से मुक्ति के अधिकार सुनिश्चित कराना है। यह घोषणा पत्र बच्चों के अधिकारों के बारे में अंतर्राष्ट्रीय समझौते (1989) के

अनुरूप है, जिस पर भारत ने भी हस्ताक्षर किये हैं। मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा मुसीबत में फंसे बच्चों हेतु चाइल्ड हेल्पलाइन -1908 की शुरुआत की गई। 18 वर्ष तक के जरूरतमंद बच्चे या फिर उनके शुभचिंतक इस हेल्पलाइन पर फोन करके मुसीबत में फंसे बच्चों को तुरन्त मदद दिला सकते हैं। यह हेल्पलाइन उन बच्चों की भी मदद करती है जो बाल श्रम के शिकार हैं। भारत सरकार द्वारा 23 फरवरी 2007 को 'बाल आयोग' का गठन भी किया गया है। बाल आयोग बनाने के पीछे बच्चों को आतंकवाद, साम्प्रदायिक दंगों, उत्पीड़न, घरेलू हिंसा अश्लील साहित्य व वेश्यावृत्ति, एड्स, हिंसा, अवैध व्यापार व प्राकृतिक विपदा से बचाने जैसे उद्देश्य निहित हैं। बाल आयोग, बाल अधिकारों से जुड़े किसी भी मामले की जाँच कर सकता है और ऐसे मामलों में उचित कार्यवाही करने हेतु राज्य सरकार या पुलिस को निर्देश दे सकता है। बाल श्रम (प्रतिषेध और विनियमन) संशोधन अधिनियम 2016 के तहत 14 साल से कम उम्र के बच्चों से श्रम कराने और 18 साल तक के किशोरों से खतरनाक क्षेत्रों में काम लेने पर रोक लगाई गई है। इस अधिनियम के अनुसार बाल श्रम अब एक संज्ञेय अपराध है, जिसके लिए जेल की सजा का प्रावधान भी है। भारत में बाल यौन शोषण एवं दुर्व्यवहार के खिलाफ सबसे प्रमुख कानून 2012 में पारित यौन अपराध के खिलाफ बच्चों का संरक्षण कानून (पॉक्सो) है। इसमें अपराधों को चिह्नित कर उनके लिए सख्त सजा निर्धारित की गई है। इतने संवैधानिक उपबन्धों, नियमों-कानूनों, संधियों और आयोगों के बावजूद यदि बच्चों के अधिकारों का हनन हो रहा है, तो कहीं न कहीं इसके लिये समाज भी दोषी है। कोई भी कानून स्थिति सुधारने का दावा नहीं कर सकता, वह मात्र एक राह दिखाता है। जरूरत है कि बच्चों को पूरा पारिवारिक-सामाजिक-नैतिक समर्थन दिया जाए, ताकि वे राष्ट्र की नींव मजबूत बनाने में अपना योगदान कर सकें।

कई देशों में तो बच्चों के लिए अलग से लोकपाल नियुक्त हैं। सर्वप्रथम नार्वे ने 1981 में बाल अधिकारों की रक्षा के लिए संवैधानिक अधिकारों से युक्त लोकपाल की नियुक्ति की। कालान्तर में ऑस्ट्रेलिया, कोस्टारिका, स्वीडन 1993, स्पेन (1996), फिनलैण्ड इत्यादि देशों ने भी बच्चों के लिए लोकपाल की नियुक्ति की। लोकपाल का कर्तव्य है कि बाल अधिकार आयोग के अनुसार बच्चों के अधिकारों को बढ़ावा देना तथा उनके हितों का समर्थन करना। यही नहीं निजी और सार्वजनिक प्राधिकारियों में बाल अधिकारों के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करना भी उनके दायित्वों में है। कुछ देशों में तो लोकपाल सार्वजनिक विमर्श में भाग लेकर जनता की अभिरुचि बाल अधिकारों के प्रति बढ़ाते हैं एवं जनता व नीति निर्धारकों के रवैये को प्रभावित करते हैं। यही नहीं वे बच्चों और युवाओं के साथ निरन्तर सम्वाद कायम रखते हैं, ताकि उनके दृष्टिकोण और विचारों को समझा जा सके। बच्चों के प्रति बढ़ते दुर्व्यवहार एवं बालश्रम की समस्याओं के मद्देनजर भारत में भी बच्चों के लिए स्वतंत्र लोकपाल व्यवस्था गठित करने की माँग की जा रही है।पर मूल प्रश्न यह है कि इतने संवैधानिक उपबन्धों, नियमों-कानूनों, संधियों और आयोगों के बावजूद यदि बच्चों के अधिकारों का हनन हो रहा है, तो समाज भी अपनी जिम्मेदारी से नहीं बच सकता। कोई भी कानून स्थिति सुधारने का दावा नहीं कर सकता, वह तो मात्र एक राह दिखाता है। जरूरत है कि बच्चों को पूरा पारिवारिक-सामाजिक-नैतिक समर्थन दिया जाए, ताकि वे राष्ट्र की नींव मजबूत बनाने में अपना योगदान कर सकें। आज जरूरत है कि बालश्रम और बाल उत्पीड़न की स्थिति से राष्ट्र को उबारा जाये। ये बच्चे भले ही आज वोट बैंक नहीं हैं पर आने वाले कल के नेतृत्वकर्ता हैं। उन अभिभावकों को जो कि तात्कालिक लालच में आकर अपने बच्चों को बालश्रम में झोंक देते हैं, भी इस सम्बन्ध में समझदारी का निर्वाह करना पड़ेगा कि बच्चों को शिक्षा रूपी उनके मूलाधिकार से वंचित नहीं किया जाना चाहिये। गैर सरकारी संगठनों और सरकारी मशीनरी को भी मात्र कागजी खानापूर्ति या मीडिया की निगाह में आने के लिये अपने दायित्वों का निर्वहन नहीं करना चाहिये बल्कि उनका उद्देश्य इनकी वास्तविक स्वतंत्रता सुनिश्चित करना होना चाहिये। आज यह सोचने की जरूरत है कि जिन बच्चों पर देश के भविष्य की नींव टिकी हुई है, उनकी नींव खुद ही कमजोर हो तो वे भला राष्ट्र का बोझ क्या उठायेंगे। अतः बाल अधिकारों के प्रति सजगता एक सुखी और समृद्ध राष्ट्र की प्रथम आवश्यकता है।

आकांक्षा यादव , पोस्टमास्टर जनरल आवास

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

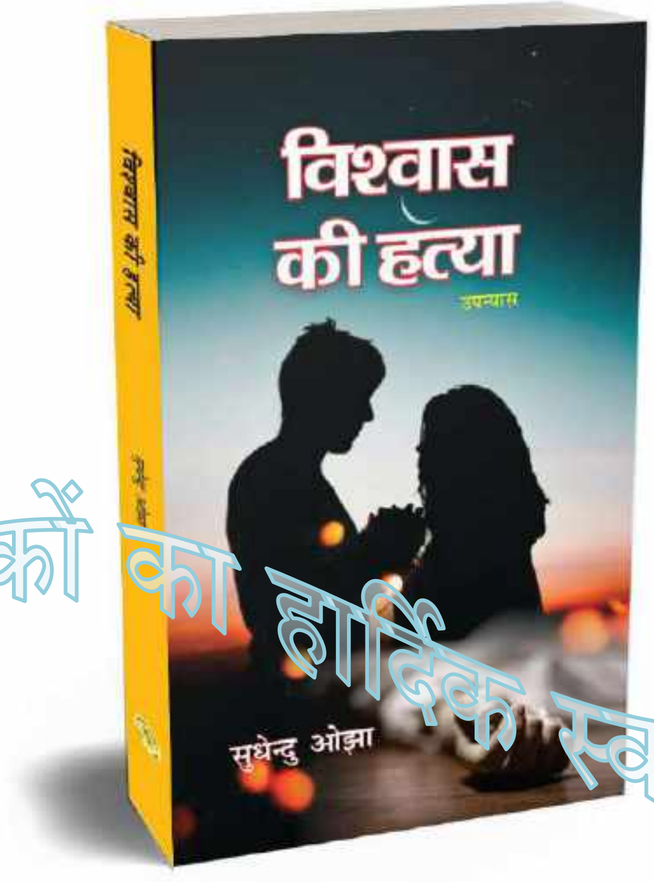

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : **विश्वास की हत्या (उपन्यास)**

Author : सुधेन्दु ओझा

ISBN : : **978-81-964179-8-7**

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 198

Price : 200/-

Genre Prose : गद्य (उपन्यास)

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

कहानी

"साथी"

इन्दु सिन्हा "इन्दु"

रेल्वे की नौकरी में मीता बहुत खुश थी। सारा दिन पंख लगाकर कहाँ उड़ जाता था।पता नहीं चलता था। जब मीता की नौकरी लगी थी| तब विभाग में कर्मचारी भी बहुत थे,अब अगर मीता की नौकरी लगती तो बडा मुश्किल होता नौकरी करना,क्यो कि ऑन लाइन का समय आ गया है ऑफिस मे ज्यादातर काम ऑन लाइन ही हो रहा है।भला हो फड़से बाबू का थोड़ा बहुत कम्प्युटर सिखा दिया था।ऐसे ही पंख लगाकर दिन उडते चले जाते है, मीता अकेली रहती थी|अकेली जान का खाना बनाने मे कितना टाइम लगता है|नही,खाना बनता तो कैन्टीन से ही लेकर खा लेती, दो कप चाप पी लेती।पिता जी गजेन्द्र सिंह रेलवे में थे,ऑन ड्यूटी उनको अटैक आ गया था। मीता को उनकी जगह अनुकंपा नियुक्ति मिली थी।वो इंदौर मे रहती थी,पूरा परिवार चित्तोड़ में रहता था।

महिने भर में जाती रहती थी| परिवार मे माँ ,छोटे दो भाई,एक छोटी बहन थी। मीता सबसे बड़ी थी।बड़ी होने के कारण उसे ही जिम्मेदारी निभानी थी।रेलवे की नौकरी मे ही दोनो भाईयो की शादी उसने कर दी थी|बहन की शादी कर दी थी।सभी अपने घर परिवार मे सुखी थे।चितोड मे ही उसने मकान बडा बनवा दिया था। भाईयो भाभीयो और बच्चो से घर भरा पूरा था।लेकिन इन जिम्मेदारियो के कारण वो खुद का जीवन भूल गयी थी,अपना घर नहीं बसा पायी थी।

जब भी वो चित्तोड़ जाती तो भाभियो और उनके बच्चो को देखकर खुश होती। माँ से जब भी अपने साथ रहने को बोलती माँ तुरंत मना कर देती थी,माँ को अपने पोते पोतियो में सुख मिलता था।वो मीता को भी यही बोलती रिटायरमेट के बाद चितोड आकर रहे, बच्चों के साथ मन लगा रहेगा।मीता जानती थी जब भी वो चितोड आयी है| बच्चो की देखभाल में बिजी हो जाती है| भाभी भैया उसे घर पर बच्चो को संभालने की ड्यूटी देकर खुद घूमने,मूवी देखने निकल जाते थे।इंदौर में रेलवे की ड्यूटी, घर पर बच्चो की ड्यूटी।उसकी खुशियां घूमना फिरना,सपने सब राख हो गये है।

कोरोना ने भी अच्छे अच्छे घरो को उजाड़ दिया है|मीता का एक भाई कोरोना ने खा लिया।दो बच्चे छोड़ गया था,भाभी बच्चो के सहारे जीवन बिता रही थी। भाई किसी प्रायवेट कंपनी मे था। थोड़ा बहुत मुआवजा मिला था उसे माँ ने बैंक में रखवा दिया था| उसका ब्याज और पापा की पैशंन जो माँ के नाम बैंक मे आती थी। उससे सब घर अच्छे से चल रहा था। बड़ा भाई रेलवे के छोटे मोटे ठेके लेता था।उसके भी दो बच्चे थे।

मीता को रिटायर होने में 6 माह शेष थे|मीता ये सोचकर परेशान थी, वो रिटायरमेंट के बाद क्या करेगी? घर चितोड जाकर भाभी और बच्चो की केयर टेकर बनेगी या इंदौर में अकेली रहेगी।उसका कोई सहारा ही नहीं है।

फिर मीता को ध्यान आया इंजीनियर विभाग के मधुकर उसे कई बार बोल चुके है मीता रिटायरमेंट के बाद की लाइफ कैसे बिताओगी ?अभी तो भाइयो की शादी उनकी देखभाल में जीवन होम कर दिया खुद के लिये भी सोचो।

मीता चुप रहती थी।

मीता जानती थी कोरोना में मधुकर जी की पत्नी की मौत हो गयी है।पच्चीस वर्षीय बेटी है | मधुकर जी को रेलवे से रिटायर हुए तीन वर्ष बीत चुके है।

बेटी पापा की चिंता में शादी नही कर रही है| मधुकर जी ने कई रिश्तें बताए है पर वो टाल देती है। बोलती है,

पापा आपको छोडकर कहीं नहीं जाऊँगी।मधुकर चुप रह जाते।

मीता मधुकर का इशारा समझती थी। लेकिन उसका परिवार -? परिवार -? उसका परिवार कहाँ है? वो तो अकेली है।भाइयो का परिवार है,बहन का परिवार है उसका परिवार कहां है ? लेकिन भाई ,माँ, बहन इस बात की अनुमति देंगें ? समाज में थू थू होगी -|

समाज कौन सा समाज?जब वो अनुकंपा पर रेलवे में गयी थी, किसी ने हाल चाल नही जाने, कैसे है हम ? ऑफिस हो या समाज सबने फायदा उठाने के लिये सोचा। लेकिन उम्र भी देखनी चाहिये।साठ साल की उम्र में क्या सुख मिलेगा? क्यो ? क्यों सुख नही मिलेगा ?

शरीर का सुख ? मन ने सवाल किया।

लेकिन ईश्वर ने भी अपनी महिमा ऐसी बनायी है कि कोई दु:ख कुछ दिनों बाद धुंधला होने लगता है बड़ी से बड़ी खुशी की चमक भी कुछ समय बाद फीकी पड़ने लगती है। वो अनुकंपा में आयी तो कितने टेंशन में थी लेकिन फिर पापा का दर्द धीरे धीरे धुँधला पड़ने लगा |छोटे भाइयो में जीवन कब बीत गया पता नहीं चला। ऐसे ही बीत जायेगा ये जीवन| शरीर की मांग परेशान नही करती ये भी परमेंश्वर ने जीवन चक्र ऐसा बनाया है शायद।फिर क्यो मधुकर की बात मानी जाए। दिमाग ने कहा।

अभी वर्किंग में तो स्टॅाफ के साथ हंसना बोलना,उनके घरों में आना जाना होता है।8, 9 घन्टे का साथ होता है।रिटायरमेन्ट के बाद कौन, समय देगा ? क्लोज फ्रेंड ही साथ देते है।वो कहते है रेलवे की दोस्ती सिग्नल तक |उसके बाद,

बाते करने के लिये,सुख दु:ख बाँटने के लिये एक साथी चाहिये ही।उसके लिये क्या मधुकर बुरे है ? साथ घूमना फिरना | लेकिन, मधुकर जी की लडकी अनु क्या मानेगी? सोचो के भंवर में डूबते उतरते मीता कब नींद की गोद में सो गयी पता ही नहीं चला।

सुबह उठी सर भारी था। हाथ पैर टूट रहे थे।मीता ने दो दिन की छुट्टी भेज दी। इंचार्ज को। दो दिन रेस्ट करुगी | सारा दिन आराम करती रही,थोडी खिचडी, दही खा ली थी|फिर दिन मे सो गयी।एक दो कलीग ने मोबाइल पर हाल चाल जाने थे। एक सहेली अर्चना जरूर आयी थी| थोडी देर बैठकर चली गयी, जाते जाते ये बोल गयी अब तो वैसे भी अकेले रहने की आदत डाल ले,कुछ महिनो बाद कोई झाँकने वाला नहीं है |

शाम को वो कॉफी बनाकर टी.वी खोल कर बैठ गयी,मीता को न्यूज चेनल और म्यूजिक चेनल पसंद थे,जिसके वो गीत देखती थी। तभी कॉल बेल बज उठी।

अभी कौन आ सकता है ?जल्दी ही उठकर दरवाजा खोला।

सामने मधुकर अपनी बेटी अनु के साथ खड़े थे।

आप मधुकर जी।वो संकोच से भर गयी। विखरा है घर।आइये-आइये।कहकर वो सोफे पर बिखरे कपडे समेटने लभी।

रहने दीजिये घर हैं घर को घर जैसा रहने दीजिये। कहते हुए मधुकर सोफे पर बैठे गये उनकी बेटी सामने वाली कुर्सी पर बैठ गयी।

मै यहाँ से गुजर रहा था सोचा आपसे मिलता चलूँ |तबियत ठीक है। मधुकर जी बोले।

दो दिन से छुट्टी पर हूँ ,तबियत थोड़ी ठीक नहीं है,मीता बोली।

मै तो रिटायर हूँ| मुझे नहीं पता चला|मधुकर बोले |

जी ऐसा कुछ विशेष नही। मीता बोली।आप बैठिये मैं चाय बना लाती हूँ।मीता बोली।

अरे नही,आप बैठिये।चाय हम घर से पीकर निकले थे।अनु बोली ।

फिर मेरे प्रस्ताव पर सोचा, अकेली कैसे रहोगी?चितौड या इंदौर जाओगी ? मधुकर बोले|

मीता ने सोचा बता दे कि पिछले कुछ दिनों से वो यही सोचती रही है,कुछ सोचकर वो बोली।

जी, मैं आपकी बात पर विचार करूँगी मीता बोली।

सच,अनु खुश हो गयी।

अनु तुम भी।मीता ने आश्चर्य से कहा।

हाँ मीता जी,मै भी नही चाहती पापा अकेले रहे।आप हमारे जीवन में आएँगीबतो पापा को भी साथी मिलेगा|अनु ने खुशी के चहकते हुए कहा।

आप आयेंगी तो मैं भी शादी के लिये हाँ कह दूँगी आप दोनो कन्या दान करोगे|अनु मानो सपनो के झूले पर सवार थीं।

मीता ने ज्यादा देर नहीं की।

कुछ समय बाद ही मधुकर,मीता सादगी से विवाह बंधन में बंध गये।मीता को अनु का कन्यादान भी करना था।जीवन का अधूरापन पूरा हो गया था।

लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली110092

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

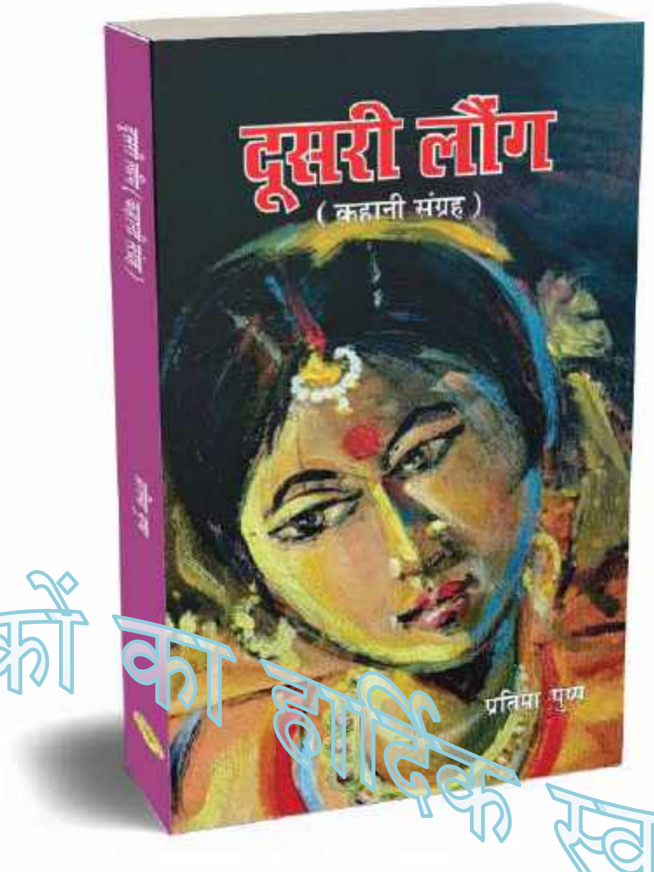

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : दूसरी लौंग (कहानी सांग्रह)
Author प्रतिमा 'पुष्प'
ISBN : : 978-81-963524-2-4
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 134
Price : 250/-
Genre Prose : गद्य (कहानी संग्रह)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

कहानी: संजय कुमार सिंह

इन्ट्यूशन

सुबह से टी.वी. पर मणिपुर की घटनाओं पर शोर मचा हुआ था। पक्ष और विपक्ष में बहस-विवाद। गुस्सा-रोष। कूकी जनजाति की महिलाओं के साथ जो जघन्य अपराध बहुसंख्य मैतेई समुदाय के लोगों ने किया था, उससे मानवता शर्मसार हो चुकी थी।

लिपि का मन विचलित था। महरी आयी , तो वह भी टी.वी. से लटक गयी। पूछा ," क्या हुआ मैडम?काहे परेशान हो?"

" दो प्रजातियों के राजनीतिक अलगाव और झगड़े में फिर औरत के साथ वही हुआ, जो महाभारत में हुआ था। धृतराष्ट्र क्या सारे देश के महारथी अपना चेहरा छिपा रहे...."

" मैम जात तो मरद की होवे है, फिर औरत का इतना अपमान क्यों..." इमली ने मन की भड़ास निकाली," इतने बहादुर हो, तो जाकर रण-भूमि में लड़ो... औरत और बच्चों पर बड़बाड़गी क्या दिखा रहे?"

" यह तुम किससे पूछ रही?" लिपि बौखलायी।

" मरद जात से... और किससे?"

" वे तो कह रहे हैं, ऐसा होता है..." उसने जुगुप्सा से भरकर कहा।

" कैसा होता है?" वह तिड़की," औरत जात तो नदी भी नहावे तो कपड़े में...फिर कपड़ा-बस्तर का मतलब? लाज तो औरत का गहना होवे है..."

" वही गहना उतार कर...भीड़ में विजय-दर्प से चूर लोग औरतों को नंगा कर घुमाते हैं और इसे अपना पुरुषार्थ समझते हैं...वह भी बाजे-गाजे के साथ..." लिपि मैडम ने पीड़ा से तड़प कर कहा, तो इतिहास के स्याह साये में चमकते सारे चेहरे एकबारगी घूम गए उसकी आँखों में... वही क्रूर... हिंसक... वीभत्स आकृतियाँ... देश-काल... रंग-रूप... नाम-गोत्र बदल कर... यह क्या केवल मणिपुर की घटना है... पितृ सत्ता के सदियों का सच है... महाभारत से लेकर अब तक इन पुरुषों के अनाचार की कहानियों का अगर पोस्टमार्टम करो, तो इनकी कुत्सा, अकुंठ वासना... और दुष्प्रवृत्तियों के अलावा क्या मिलेगा इनके भीतर.... इनसे अच्छे वे नंगे जीव-जंतु हैं, जो आज भी नग्न हैं, जिन्हें वस्त्र पहनना नहीं आया... ये वस्त्र आभूषण और झूठे अलंकरण लगाकर आदर्श और नैतिकता का प्रलाप करेंगे....मगर सब कुछ होता रहेगा... सदी पर सदी भले बीत जाए..."

महरी रसोई में चली गयी थी। आज वीक एंड था। कल भी छुट्टी। पर दुनिया शैतान की माँद हो, तो चैन कैसा? वह बिल्कुल अपसेट थी, ऐसे ही द्रोपदी का चीर-हरण हुआ होगा..."

"चाय मैम!" महरी की आवाज से फिर ध्यान -भंग हुआ... अंधत्व राज की आँखों का आवरण है... महाभारत के हवाले से सोचा जाए, तो वे महर्षि और महारथी सब के सब अंधे नहीं थे, जहाँ उनकी आँखों के समने हया और लाज की धज्जियाँ उड़यी जा रही थीं और वे मूकदर्शक बने हुए थे....मणिपुर में भी तो यह हुआ... पुलिस तमाशा देखती रही

और माननीय मुख्यमंत्री आराम सेअंधे और बहरे बने रहे...

महरी ने उसके मन को तार कर कहा," छोड़ो मैम ... अपना जी छोटा न करो, चाय पीओ... हम औरतों के साथ यही होना है... कही रेप होवे है चलती गाड़ी में ... तो कहीं घर से कोई खीच लेवे है... कहीं हम जला दी जाती हैं... हम पर हमारा अख्तियार ही क्या है....हमारे गाँव की बात है पचास साल के पंडित ने कर्ज के पैसे के बदले काकी की बीस साल की छोड़ी को रख लिया...लालपरी चाची को ऊँची जात के ठाकुरों ने डाइन कह कर नंगा घुमाया... लोग उल्टे उसी की थू-थू करने लगे...हार कर चाची लाज से एक दिन कुएँ में कूद कर मर गयी..."

" चुप भी करो।" लिपि ने कहा," मुझे यह सब सोच-सुन कर मितली आ रही ... जी घबरा रहा... इस सभ्यता के हाथी के दाँत बड़े चमकीले हैं, पर यह भीतर से है बहुत उलट... देखो न टी.वी. पर कोई रो रहा है, कोई चीख रहा है... कोई दोषियों को पकड़ने की कसमें खा रहा है... पर दो-चार दिनों में टाँय-टाँय फिस्स हो जाएगा.. सब भूल जाएँगे...."

" सब वोट का खेल है मैडम..." महरी बोली," इतना जो हिन्दू -मुसलमान होवे है काहे से... लीचिंग-वीचिंग बोले है..."

" तुम सही कह रही हो इमली..." लिपि ने कहा," तुम खाना बनाओ... मैं नहाती हूँ... देह चिप-चिप कर रही है, लगता है पिस्सू रेंग रहे हैं..."

" गर्मी में होवे है मैडम..." वह कीचन की ओर चली गयी।

...

इमली के कीचन जाने के बाद टीवी बंद कर वह बाथरूम घुसी और नहाने लगी। शरीर कोध-धो कर साबुन घिस-घिस कर वह घंटों नहाती रही।लेकिन उसे लगता था कि कोई अदृश्य गंदगी चिपक गयी हो उसकी देह से... एक बार उसकी इच्छा हुई कि वह नग्न होकर नहाए... फिर इमली की बात उसे याद आ गयी... तो वह संकोच से लरज गयी... खट!खट! की आवाज हुई...," कितना नहाओगी मैडम... पानी खत्म हो रहा ..." वह बार निकली बाल निचोड़ कर बोली," खाना बन गया...?"

" हाँ, "

"तो जाओ"

" एक बात बोलूँ मैडम?"

" बोलो।"

" तुम विवाह कर लो।"

" कर लूँगी।"

" पक्की ना.."

" तो क्या कच्ची..."

" जमाना बहुत खराब है..." वह बड़बड़ायी," शाम को भी आना है क्या?"

" आ जाना।" वह बोली," कोई दिक्कत है क्या?"

" नहीं, बस पेट से हूँ...डाॅक्टर के पास जाती।."

" और काम क्या है..." वह व्यंग से हँसी," औरत माने बकरी... जनो बच्चे... जनती रहो..."

" अब जो कहो..." वह लजा कर बोली।

महरी के जाने के बाद उसने दरवाजा बोल्ट किया और खाना खाकर पत्रिका लेकर लेट गयी। कुछ देर बाद हाथ रिमोट पर गया। वही चिल्ल-पों....जाने कब नींद आयी, कब जगी... पर टी.वी . एक पल के लिए भी नहीं सोता है। वह हँसी, उसके लिए पूरी दुनिया न्यूज है.... सुशांत की मौत पर भी वह चीखता रहा था महीने भर... कितनी संवेदनहीन और निस्संग दुनिया है... अगर वाकई सब दुखी है, तो वह ब्रेक लेना छोड़ दे... तब न होगी एक बात...हा ॅटकेक न्यूज के बीच कारोबार और कमाई का वही फंडा.... फिर दुख कैसा? शोक कैसा? सब ढकोसला है...

शाम को महरी देर से आयी। चाय-नाश्ता के बाद खाना बना कर चली गयी।गाँव से माँ का फोन आया," मरी जात...अपने मन से भी तो कर..."

" करूँगी..." वह उसी तरह ठन कर बोली।

" घर में सब मर गए क्या?" माँ का तंज सीधा था।

"मेरे नाम से मर गए..." वह फैसलाकुन अंदाज में बोली।

" मर तो गए ही..." माँ रोष से बोली," जात-बिरादर में सब तेरे नाम से उठ गए... जो उस मुए के चक्कर में पड़ी हो... पछताओगी एक दिन.. जैसे तुझे जन्म देकर मैं पछता रही...."

फोन कट गया। मन उफन कर रह गया। यह फोन कोई एक बार तो आता नहीं।औरत का अपना मन नहीं। अपनी पसंद नहीं। अज्म पर आओ, तो सब गलत कहेंगे। सलीम से उसने प्रेम किया है और शादी भी करेगी, जिसे जितना विरोध करना है कर ले... मन का ताजमहल एक होता है, सत्रह नहीं....फिर क्या हिन्दू और मुसलमान... इक्कीसवीं सदी में भी औरत के लिए वही प्रताड़ना और धिक्कार क्यों? किस बात के लिए डरा रहे हो और उधर टी.वी. पर अलग भूक रहे हो ? अरे सब बँटे हो जात-धरम के नाम पर....मगर औरत सा ॅफ्ट टारगेट है तुम्हारा...नंगा घुमाओगे, कत्ल कर दोगे, जला दोगे... फिर जश्न मनाओगे.... विजय-पर्व!

रात जाने कब नींद आयी और कब बुरे सपने... उसने देखा कि सलीम से शादी के बाद अचानक उसके गिर्द एक भीड़ जमा हो आयी है... सब ने उसे घेर रक्खा है... उसके बाल खुले हैं... होठों से खून बह रहे हैं... उसे नंगा कर शहर में घुमाया जा रहा है.... उसकी चेतना उस शोर में डूब रही है... वह संज्ञा-शून्य हुई जा रही है.... बिल्कुल पत्थर....

"सलीम!सलीम!" वह चिल्लान चाहती है , पर उसकी आवाज घुट जाती है.... तभी सलीम को सात टुकड़े कर उसके सामने फेंक दिया जाता है... वह दहाड़ मार कर गिर पड़ती है, जाने कब तक गिरी रहती है... पिस्सू और कीड़े के रेंगने से उसकी नींद खुलती है....वह हड़बड़ा जाती है कुछ देर के लिए। फिर उठ कर पानी पीती है बोटल से... उसे लगता है उसके अचेतन के स्ट्रेस ने उसे रात भर सोने नहीं दिया। वह करवट बदलती हुई भारी मन से सुबह होने का इन्तज़ार करती है । उसे लगता है वह सिकुड़ कर गुंजलक हो गयी है...फिर भी चेतना में साँप रेंग रहे हैं...

...

सुबह महरी के का ॅलबेल बजाने से उसकी नींद खुलती है। वह अकबका कर उठती है और खुद को ऊपर से नीचे तक देखती है ... कहीं वह नंगी तो नहीं.... नहीं सब ठीक है... फिर गेट खोलती है... लेकिन उसे लगता है उसका मन कहीं नागफनी के जंगल में भटक रहा है...

" क्या हुआ?..." महरी ने चौंक कर कहा," देर से नींद आयी क्या?"

" नहीं बाथरूम में थी..." उसने बदल कर कहा," चलो चाय बनाओ..."

" मैम उन औरतों का क्या हुआ?" वह भी मानो वही सोच रही थी," उन्हें कभी न्याय मिलेगा क्या? बहुत बड़ी ज्यादती हो गयी..."

" कैसा न्याय?" वह तल्ख हुई

" मतलब दोषी को सजा..." महरी ने कहा," कुछ तो होना चाहिए..."

" इस न्याय से उनकी इज्जत लौट आएगी?" वह बिफरी," अब जो भी करो... तुम्हारा नाटक होगा... फिर बदला भी लोगे तो औरत से ही न? मरद जात का दोगलापन है यह सब...."

" तुम शायद ठीक कहती हो मैम...." वह कीचन की ओर चली गयी।

चाय लेकर आयी, तो बोली," हमारे मुहल्ले में भी इसी बात की चर्चा है...चौक पर लोग कुछ पुतले को पीट रहे थे.... हाय-हाय कर रहे थे... कुछ तो गुस्सा है मैम...."

" करने दो।" वह चाय पीने लगी।तभी सलीम का फोन आया। वह डर गयी। सात टुकड़े में उसकी आकृति आँखों में तैर गयी। उसने उसाँस लेकर कहा," सलीम एक घंटे में वापस का ॅल लगाती हूँ...मैं अभी टेंशन में हूँ..."

खाना बनाकर जाते हुए महरी ने कहा," मेरा मरद कह रहा था मैम नंगा घुमाने से औरत की लाज उतर जाती है, उसे फिर कैसे घर में कोई रख सकता है.... वह डूब मरे या उसका कत्ल हो जाए तो अच्छा..."

" क्यों? इसमें उसका क्या दोष?" वह लगभग बिछल पड़ी," पांडवों ने तो नहीं फेंका द्रोपदी को..." उसका मन डूब सा रहा था....

" अब उतना वेद-पुराण कौन जाने है?" वह बोली," औरत की लाज जावे और नदी सूख जावे ....तो किस काम की? बीसू यही कह रहा था..."

" तुम भी यही मानती हो?" वह हैरान होकर बोली।

" अब हमारे मानने से क्या होता है?" इमली के टोन में दर्द था," फैसला तो मरद जात के हाथ में होवे है... औरत का जास्ती क्या मोल है मरद के सामने? वही पंच और वही मालिक-मुख्तार..."

" मतलब?" लिपि ने हथियार डालते हुए कहा।

" अब सोचो, भली औरत को भी वो घर से निकाल दे, तो दुनिया में कुल्टा कहावै है... " वह जाने किस आवेग से कह रही थी," औरत जात की तकदीर में यही बदा है...कितना भी माथा पटक लो, जीतेगा मरद ही...."

" तब भी कहती हो, ब्याह कर लो...?"

" वो दूसरी बात है, लत्तर होवे है औरत..." वह उसी तरह बोली," उसका अपना खंभ नहीं.. वह तो बस सहारे की चीज बन कर रह गयी है.... "

" दासता की कैसी बेड़ी ज़ुबान पर चढ़ा दी गयी है...." लिपि को लगा, जैसे किसी ने कलेजे को चीर दिया हो। क्या काट है उसके पास सदियों की इस अंधी सोच का... ? अंधत्व ही तो ओढ़ती रही है औरत... रंग-बिरंगे रेशम के धागे में लिपटे पुरुषवादी सोच से उपजे अंधत्व... तब तो इतना भोग

रही...दुनिया के रडार पर हर कहीं वही है....

...

महरी के जाने के बाद वह बहुत देर तक असमंजस में रही। क्या करे, क्या नहीं। फिर उसने उसी मनोदशा में सलीम को फोन लगाया," हाँ, बोलो..."

" क्या सोचा है?" सलीम ने हौले से कहा," अब हमें..."

" सलीम!" वह गंभीर हुई," जो मुल्क के हालात हैं, लोग लव जिहाद कहेंगे...फिर दंगे-फसाद होंगे... हो सकता है तुम्हारी हत्या हो जाए... मुझे नंगा कर घुमाया जाए... हमें इस पर गौर करना होगा...."

"क्या कह रही हो? " सलीम बौखलाया," हम स्कूल जीवन से एक-दूसरे को चाहते रहे हैं,हमारा प्यार लव जिहाद नहीं है... हम प्रकृति के नेचुरल दो फूल हैं...."

" पर लोग तो कहेंगे..."

" लोग हमारे प्यार के नहीं जानते।"

" वे किसी के प्यार को नहीं जानते...."

" कहने का मतलब?"

" उसे किसी के प्यार से हमदर्दी नहीं...दुनिया को उसने जात-धरम के नाम पर खाँचों में बाँट रक्खा है... हिन्दू-मुस्लिम, सिख-ईसई... कूकी -मैतेई.... उन्हें क्या मतलब? वे फूल नहीं, काँटे चुनने और चुनने वाले लोग हैं.... " वह भहरा रही थी।

" तुम कहना क्या चाहती हो?" सलीम का स्वर रुआँसा हो रहा था।

" आज सभ्यता का चीर-हरण हो रहा है...." संवेदना घनभूत हुई, तो शब्द भीग गए" मैं तुम्हें मरते हुए नहीं देख सकती... मेरा इस क्राउड पर से यकीन उठ गया है...."

" तो...?" सलीम का पूरा वजूद इस तो पर अटक गया।

" इस रिश्ते को अब समाप्त समझो !" वह हकलायी," मुझे खौफ हो रहा है... यही इंट्यूशन है मिल रहा है हर तरफ से... कि हम इस रिश्ते की डोर काट दें... नहीं तो, वे तुम्हें मार देंगे...."

"मैं मरना चाहता हूँ, मैं उनके हाथों कत्ल होना चाहता हूँ...." सलीम ने बेखौफ कहा।

" पर मैं ऐसा नहीं चाहती।" लिपि का स्वर निर्णायक था। वह सहमी हुई थी।

"क्या तुम होशो-हवाश में बोल रही हो?" सलीम को यकीन नहीं हो रहा था कि यकायक उसके रिश्ते में ऐसा मोड़ कैसे आ सकता है। वह बार-बार ' हैलो हैलो कर रहा था," मैं तुमसे कल फिर बात करूँगा... ऐसे डर से नहीं , हिम्मत से जीते हैं लोग... एक इण्ट्यूशन बाहर का होता है और एक भीतर का.... तुम अपनी आत्मा की आवाज सुनो...." सलीम की आवाज वक्त के पत्थर पर सिर पटक कर मजरूह हो रही थी।मगर लिपि की घिग्घी बँध गयी थी। उसके बकार नहीं फूट रहे थे!

ग़ज़ल 1

नज़र को ये कभी लगता नहीं है।
ज़मीं से आसमाँ मिलता नहीं है।
जहाँ जाना, वहाँ से लौट आना,
कभी ये रास्ता रुकता नहीं है।
खड़े हो आईने के सामने पर,
छुपा चहरा कभी दिखता नहीं है।
परों का बोझ है जिस पर ज़ियादा,
वो पंछी दूर तक उड़ता नहीं है।
चला है साथ जो लेकर इरादे,
मुसाफ़िर वो कभी थकता नहीं है।
सियासत कर रहे हो साथ सबके,
मुझे ये क़ायदा जँचता नहीं है।

2

वास्ते जब सभी के हुए।
आप बस आप ही के हुए।
आपकी इक कही बात पर,
फ़ैसले ज़िंदगी के हुए।
आ गए कुछ सितारे नज़र,
सिलसिले रोशनी के हुए।
मिन्नतें, ज़िद, सलीक़े ,वफ़ा,
क़ायदे बन्दगी के हुए।
जब चले साथ हम दूर तक,
फ़ायदे दोस्ती के हुए।
काम वो ही लगे काम के,
जो हमारी ख़ुशी के हुए।

3

जिसे देखा कहीं , वो दूसरा है।
नज़र को आपकी धोखा हुआ है।

नज़ारा पास इतना भी नहीं है,
कि जितना पास सबका सोचना है।

हिमायत कर रहे हैं आप उसकी,
यहाँ जो शख़्श सबसे दोगला है।

सुने सबकी मगर करे मन की,
यही इस ज़िंदगी का क़ायदा है।

वहाँ मुश्क़िल सफ़र है कश्तियों का,
जहाँ उनका हवा से सामना है।

निभाता है वहाँ उतनी अक़ीदत,
जहाँ जितनी शराफ़त देखता है।

नवीन माथुर पंचोली

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

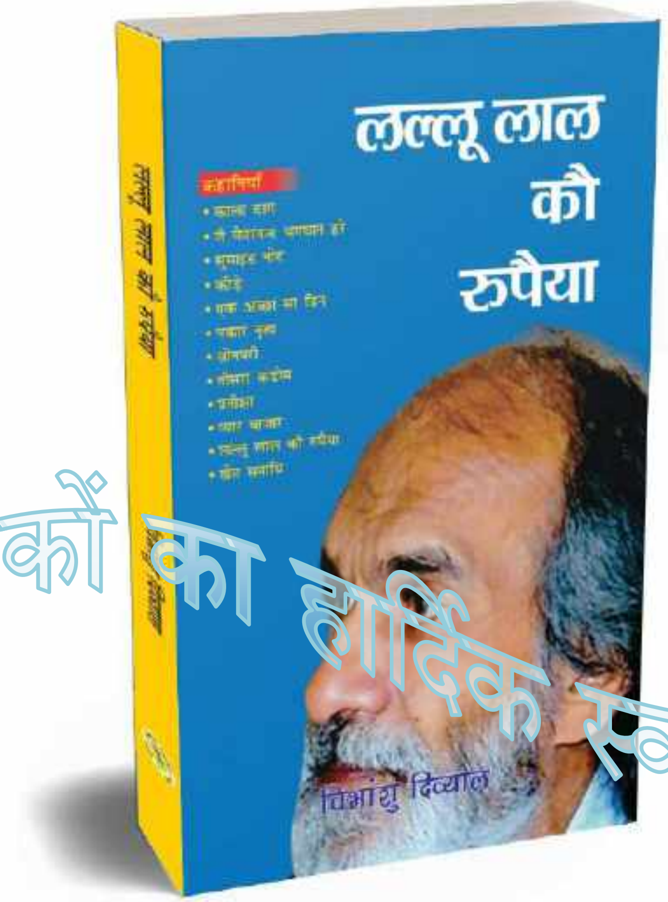

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : लल्लू लाल कौ रुपैया (कहानी सांग्रह)

Author विभांशु दिव्याल

ISBN : : 978-81-964179-3-2

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 190

Price : 350/-

Genre Prose : गद्य (कहानी संग्रह)

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

वसीयतनामा

राजप्रसाद जैसा 'लक्ष्मी निवास' आज उदास दिखाई पड़ रहा था। राज ग्रुप की चेयर पर्सन 75 वर्षीया राजलक्ष्मी जी के गोलोक गमन के बाद से विशाल भवन मानों उदास हो उठा था। उनकी मुख्य सेविका दुर्गा देवी की आंखों से निरंतर आंसू झर रहे थे। उनकी लाल सुर्ख आंखों के पपोटे स्पष्ट कह रहे थे कि वह रात भर आंसू बहाती रही है।परंतु विधि के विधान को कोई भी नहीं टाल सकता ... फिर मृत्यु तो जीवन का शाश्वत सत्य है ....

शोक सभा का आयोजन किया गया। शहर के गणमान्य और प्रतिष्ठित लोगों के अतिरिक्त कंपनी के लोग, रिश्तेदार और परिचितों से हॉल खचाखच भरा हुआ था। लोग पुष्पांजलि के साथ उनको श्रद्धांजलि भी समर्पित कर रहे थे। कंपनी के अधिकारी और कर्मचारी ज्येष्ठ पुत्र जयराज सिंह ओर कमलराज सिंह की नजरों के सामने जाकर अपनी उपस्थिति दर्ज कराना चाहते थे क्यों कि अब वही उनके नये मालिक होने वाले थे।

धार्मिक प्रवृत्ति के ज्येष्ठ पुत्र जयराज सिंह ने सभी ऑफिस में शोक सभा करने के लिये सूचना प्रसारित कर दी थी। जयराज ने विधिविधान से सारे धार्मिक अनुष्ठान को स्वयं संपन्न किया था। अस्थि विसर्जन के लिये वह स्वयं हरिद्वार गये थे। जयराज सिंह के मन में अपार संतोष था कि सब कुछ और शांति से संपन्न हो गया था।

यद्यपि कि अभी भी शोक संतप्त परिवार में अजीब सा सन्नाटा छाया हुआ था। परंतु सच कहा जाये तो शांति का माहौल कृत्रिम और बनावटी अधिक था क्योंकि परिवार के सभी सदस्यों के मन में अज्ञात भय था,

घबराहट और शंकाग्रस्त भी थे, वजह थी ... आज मां जी .. का वसीयतनामा पढा जाने वाला था।

पिछले कुछ दिनों से स्वर्णलता जीजी का मां जी के पास आना जाना ज्यादा बढ गया था। वह अधिकतर मां जी के विशाल कक्ष में ही बनी रहतीं और दोनों आपस में गहन विचार मंत्रणा करती रहतीं थीं।

बड़ी बहू सुमंगला और छोटी बहू राजेश्वरी से उन लोगों के बीच बार बार की आपसी मुलाकात के साथ उन दोनों के बीच होने वाली राय मशविरा ,विशेष रूप से ...वह भी फुसफुसाहट में, राजेश्वरी को चिंता में डाल दिया था। यह स्पष्ट था कि दोनों के बीच कुछ गोपनीय रूप से पक रहा है।

सुमंगला जो शांत और संतोषी थी ,उनका सोचना था कि मां बेटी के बीच का मामला है इसलिये उनको दखलंदाजी करने का कोई हक बिल्कुल भी नहीं बनता। परंतु स्वभाव से घमंडी और लालची राजेश्वरी उन दोनों के इर्द गिर्द घूमती और सास राजलक्ष्मी से मीठी मीठी बातें करती रहती , शायद मां जी के मुंह से किसी क्षण उनके दिल की हलचल जुबान पर आ जाये। परंतु साम दाम दण्ड भेद के बावजूद वह कुछ भी जानने में विफल रही थी। वह मात्र अनुमान ही लगा सकती थी परंतु

सच्चाई के जरा भी करीब नहीं पहुंच पाई थी।

लगभग 8 वर्ष पहले की बात है जब एक दिन राय लक्ष्मण राज का हृदयाघात से स्वर्गवास हो गया था। राजलक्ष्मी देवी कुछ महीनों तक तो शोकसंतप्त होकर मौन बनी रहीं परंतु फिर कंपनी के बिगड़ते हालात को देख उन्होंने अपने शोक को तिलांजलि दिया और पति के ऑफिस की कुर्सी पर विराजमान हो गईं और .... कारोबार के निर्णय स्वयं लेने लगीं। उनके कुशल निर्देशन में कारोबार प्रगति के मार्ग पर चल निकला था।

राजग्रुप प्रदेश में जाना माना नाम बन गया था। दोनों बेटे जयराज और कमल राज मां के आधीन पहले की तरह ही काम करते रहे।

राजलक्ष्मी जी ने हमेशा से अपने बच्चों की इच्छाओं और जरूरतों का ध्यान रखा था। इसलिये मां जी से किसी को कोई शिकायत नहीं थी।

'सुमंगला, ये तुम्हारे लिये डायमंड का सेट ..... डिजाइन पसंद न हो, तो रमेश जी को फोन कर देना ...

'मां जी, ये बहुत सुंदर है .... सुमंगला खुशी से फूली नहीं समा रही थी।'

'राजेश्वरी, आप योरोप जाने की बात कर रहीं थीं ... ये आप दोनों के लिये योरोप की ट्रिप की टिकट है ...

20 दिनों की बुकिंग है, मैंने कमल को भी ऑफिस से छुट्टी दे दी है।'

राजेश्वरी खुश होकर बोली मां जी आप सबके मन की बात कैसे जान लेती हैं। उन्होंने आगे बढ कर उनके पैर छू कर अपनी खुशी जाहिर की थी।

जय का बेटा यू. के. में पढाई कर रहा है तो बेटी यू. एस. में MBA. कर रही है।

कमल के दोनों बच्चे दून स्कूल में पढाई कर रहे हैं।

राज ग्रुप की गणेशोत्सव और दीपावली की पार्टी का लोगों को इंतजार रहता था।

जयराज तो पूरी मेहनत और जिम्मेदारी से कारोबार को बढाने में लगे हुये थे परंतु कमल राज और राजेश्वरी दोनों हाथ से पैसा उड़ा रहे थे ... कमल को रेसिंग का चस्का था तो राजेश्वरी को क्लब में दोस्तों के साथ बड़ी बड़ी बाजियां खेलने का शौक था।

जयराज ने जब भी कमल से होने वालों खर्चों के प्रति आगाह किया और बिजनेस पर ध्यान देने को कहा, घर का माहौल तनावपूर्ण हो गया। उन्होंने मां जी के सामने अपने दिल के गुबार को रखा तो उन्होंने कह दिया कि कमल के अंदर बचपना है, जरूरत पड़ने पर वह समझ जायेगा। तुम परेशान मत हो मैं उन दोनों से बात करूंगीं ...

यद्यपि कि वह स्वयं भी उसकी हरकतों से परेशान थीं क्यों कि वह उनकी भी नहीं सुनता था।

स्वर्णलता देवी उनकी ज्येष्ठ पुत्री थीं। लक्ष्मण राय ने अपनी लाडली बेटी की शादी बहुत धूमधाम से राजघराने में ठाकुर रामेश्वर दयाल के बेटे रंजीत शाह से की थी परंतु शीघ्र ही उन्हें मालूम हो गया था कि वह लालची लोगों के बीच में फंस गये हैं परंतु बेटी की खुशी के लिये वह उनकी उचित अनुचित मांगों को चुपचाप पूरा करते रहे थे।

जब पिता नहीं रहे तो उन्होंने मां जी को अपना शिकार बनाया और आये दिन उनके सामने अपनी मांग को लेकर झोली फैला कर बैठ जातीं परंतु राजलक्ष्मी जी ने बेटी की लालची हरकतों के विषय में बेटों को हवा भी नहीं लगने दी और यही वजह थी कि जयराज सिंह बहन के लालची स्वभाव के विषय में बिल्कुल अनजान थे।

इन दिनों स्वर्णलता जीजी यहीं पर रह रहीं थीं और सुमंगला ने गौर किया था कि राजेश्वरी के साथ घुटघुट कर बातें हुआ करतीं थी। उनका माथा ठनका था कहीं राजेश्वरी कोई षणयंत्र तो नहीं रच रही है ....परंतु वह कुछ कर भी नहीं सकती थीं। वह मेहमानों की व्यवस्था में लगातार व्यस्त रह रहीं थीं।

''मां जी की तिजोरी आप कब खोलियेगा ....सुमंगला भाभी ''

सुमंगला क्षण भर को अचकचा गई थीं, तिजोरी का तो उन्हें ध्यान भी नहीं आया था।

मेरे जाने के बाद खोलना चाहती हो तो कोई बात नहीं.... मुझे तो मां जी का सतलड़ा हार बहुत पसंद है, मां जी ने कहा भी था कि आपको बहुत पसंद है तो आप ही ले लेना .... मैं तिजोरी खोलूंगीं तो आपको दे दूंगीं ... सुमंगला समझ गईं थीं कि इन दोनों के आपस में यही कुछ तय हुआ होगा ... वह राजेश्वरी की बात

सुनने को उत्सुक थी तभी वह बोली, ''जीजी, मां जी जैसा हार तो आप मेरी शादी में पहने हुई थीं ... मैं एक दिन एलबम देख रही थी, तब देखा था ... "

"वह तो मैं मां जी का ही पहने हुई थी ''

सुमंगला चौंकी थी, मां जी ने सतलड़ा हार कमल की शादी के उपहार के रूप में बनवा कर दिया था।

वह चुप चाप जीजी की ओर देखने लगी थी तभी राजेश्वरी बोली कि मांजी ने तो मुझसे कहा था कि मैंने तुम तीनों के लिये एक जैसा बनवाया है।

यह सुनते ही जीजी बिगड़ गईं, 'क्या मैं झूठ बोल रही हूं। मां जी ने कहा था कि मैं तुम्हें दादी की निशानी के तौर पर दे दूंगी। मुझे कुछ नहीं चाहिये..... तुम लोगों का जब मन हो तब तिजोरी खोलना ... मां के जाते ही इतनी बेइज्जती ...कह कर सुबक सुबक कर रोने लगीं .... सुमंगला उन्हें चुप कराने में लग गई थी। तभी रंजीत कुंअर जी और दोनो भाई भी अंदर आ गये कि क्या बात हो गई ?

जब जय राज को सब बात मालूम हुई तो वह बोले चाभी किसके पास है ? सुमंगला और राजेश्वरी दोनों ही उस जगह बार बार जाकर चाभी खोजती रहीं लेकिन उन्हें नहीं मिली, दोनों ही परेशान हो उठीं कि आखिर चाभी कहां गायब हो गई तभी स्वर्ण लता तेजी से उठीं, ' इतना नाटक क्यों फैला रखा है ? नहीं खोलना है तो बिल्कुल मत खोलो ... फिर वह स्वयं उठ कर गईं और अल्मारी में खोजने

लगीं ... थोड़ी देर यहां वहां ढूंढने के बाद उनको चाभी मिल गई थी।

वह नाराज होकर बोलीं , 'साफ साफ मना कर देतीं , इतना नाटक करने की क्या जरूरत थी '...उन्होंने चाभी जयराज की हथेली पर रख कर कहा ,'मेरा मन खराब हो गया है , जब मैं यहां से चली जाऊं तब तुम दोनों मिल कर आपस में बांट लेना ।' कहते हुये वह कमरे से तेजी से बाहर निकल गईं।

जीजी की इस तरह की बातों , हरकतों को देख दोनों भाई सन्नाटे में आ गये और उनको खुश करने के लिये जय राज ने आगे बढ कर उनसे बोले , 'अब आप ही खोलिये ... मां जी के बाद आप ही घर की बड़ी हो '।

'जय ,मैं तुम्हारी बात रखने के लिये खोल रही हूं , वैसे मुझे कोई मतलब नहीं है।'

सब शांत थे , लेकिन उनके चेहरे पर विजय़ी मुस्कान थी। तिजोरी खुलते ही नया बवण्डर खड़ा हो गया ... उसमें से महारानी हार, सतलड़ा और चंपाकली जैसे एंटीक जेवर गायब थे ....

तिजोरी से जेवरों को गायब देखते ही सुमंगला की आंखों के सामने अंधेरा छा गया और वह वह धम्म से वहां पड़े सोफे पर बैठ गईं थीं , उनकी आंखें बंद अवश्य थीं परंतु उनकी आंखों के सामने सास के पुश्तैनी जेवर महारानी हार, सतलड़ा, चंपाकली, नगीने जड़ी करधनी झिलमिला रही थी, जिन्हें ससुराल आने पर राजलक्ष्मी जी ने अपने हाथों से उन्हें पहनाया था । उनके बार बार कहने पर भी उन्होंने अपने पास नहीं रखा था।

अब तो प्रश्न यह था कि जेवर गायब कैसे हुये ? सुमंगला बड़प्पन दिखाते हुये मौन थी परंतु राजेश्वरी भला कब चुप रहने वाली थी उन्होंने सबके सामने स्वर्णलता पर शक जाहिर कर दिया परंतु वह जैसे इन बातों के लिये पहले से ही तैयार थीं,'मैं क्या जानूं ? तुम दोनों यहां रहती हो, किसी ने निकाल लिये होंगें '।

दोनों बहुयें नंद की चालाकी देख आश्चर्य से भर उठीं थीं।

स्वर्ण लता तीखी जुबान से बोलीं ,'मां जी के जेवर दोनों ने मिल बांट कर गायब कर दिये और अब दिखावा अच्छा कर रही हो। जाने मां जी कैसे रहतीं थीं , तुम लोगों ने तो मेरा दिमाग खराब करके रख दिया है। "

स्वर्णलता के आरोप के बाद तीनों महिलाओं के चेहरे पर शक और चिंता की लकीरें खिंच गई थीं। सब की सब एक दूसरे को शक की निगाहों से देख रहीं थीं । राजेश्वरी कभी नंद तो कभी जिठानी की तरफ शक भरी निगाहों से देख रहीं थी।

जयराज ने माहौल के तनाव को हल्का करने के लिये हंस कर कहा ',जिसको जो जेवर चाहिये रमेश जी के यहां जाकर ले लेना ....अब बात खत्म करो '

"शाम 6 बजे वकील साहब आयेंगें मां जी का वसीयत नामा पढने के लिये मां जी की इच्छानुसार ही बंटवारा होगा। ''

कमल का कहना था कि बंटवारे की क्या जरूरत है , जैसे चल रहा था वैसे ही चलता रहे। क्यों कि वह कारोबार और ऑफिस की जिम्मेदारियों से बचना चाहता था दूसरे उसने 10 करोड़ रु. इधर से निकाल कर अपने ससुराल वालों के साथ मिल कर एक नई कंपनी बनाई है .... अब वह उन पैसों को अपनी व्यक्तिगत संपत्ति बता कर अपनी बताता है , जिस वजह से मां जी के सामने से दोनों के बीच आपस में विवाद चल रहा था।

वकील तुषार घोष आये और कागजों की जांच पड़ताल हुई परंतु बंटवारे के विषय में उन्होंने कोई भी वसीयतनामा नहीं तैयार करवाया था । इसलिये यह सुनिश्चित हुआ कि लगभग 100 करोड़ की संपत्ति, जिसमें चल अचल फैक्ट्री, आलीशान कोठियां, फार्महाउस, ज्वेलरी, शेयर्स आदि सभी कुछ के तीन बराबर हिस्से, उनके तीनों बच्चों के बीच में बांटे जायेंगें।

91 प्रतिशत शेयर राजलक्ष्मी जी के थे और 9 प्रतिशत दोनों बेटों के बच्चों नाम थे इसलिये उनका बंटवारा नहीं होगा।

स्वर्णलता के चेहरे पर असंतोष नजर आ रहा था।

यह एक कटु सत्य है कि धन या प्रापर्टी है तो वादविवाद और मनमुटाव होना सुनिश्चित है क्योंकि सभी पक्षों का संतुष्ट होना संभव है ही नहीं ...इस संसार में धनलिप्सा ऐसी होती है कि जितना भी हो वह कम ही प्रतीत होता है।

वकील साहब चले गये थे परंतु जीजी के चेहरे पर तनाव स्पष्ट दिखाई पड़ रहा था । मुखर जीजी मौन थीं , मानों मन ही मन वह कोई योजना बना रही हैं। वह और रंजीत जीजा जी अपने घर चले गये।

दोनों भाई अपने अपने ऑफिस और काम में बिजी हो गये थे।

कई बार वकील साहब और इन तीनों की मीटिंग हुई परंतु यह तय नहीं हो पाया कि कौन क्या लेगा , बार बार इन्हीं मुद्दों पर विचार विमर्श होता परंतु निर्णय कुछ नहीं हो पाता कभी कमल नाराज होकर मीटिंग से चले जाते तो कभी स्वर्ण लता ....

स्वर्ण लता नाराज होकर बोलीं ,'अब कोर्ट में ही मिलेंगें। "

जयराज ने बीच बचाव करके मामला सुलझाने का प्रयास किया परंतु फिर वह भी तैश में बोले,' ठीक है , अब कोर्ट में ही तय होने दो इस तरह से लगभग तीन महीने बीत गये थे, कुछ भी तय नहीं हो पा रहा था।

अभी परिवार पूरी तरह शोक से उबर नहीं पाया था कि स्वर्ण लता जीजी के वकील का नोटिस दोनों भाइयों के नाम आया कि मां राजलक्ष्मी जी की वसीयत के अनुसार पूरी जायदाद और बिजनेस , को स्वर्णलता और कुंअर रंजीत सिंह के नाम कर दी है । दोनों भाई बतौर मैनेजर की तरह काम करते रहेंगें परंतु मालिकाना हक स्वर्णलता देवी का होगा।

नोटिस देखते ही दोनों भाइयों के होश उड़ गये। परिवार के सभी सदस्यों के माथे पर चिंता की लकीरें स्पष्ट दिखाई पड़ने लगी।

एक प्रश्न चिन्ह सबके मन में खड़ा हो गया कि जीजी ने ऐसा क्यों किया ?

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

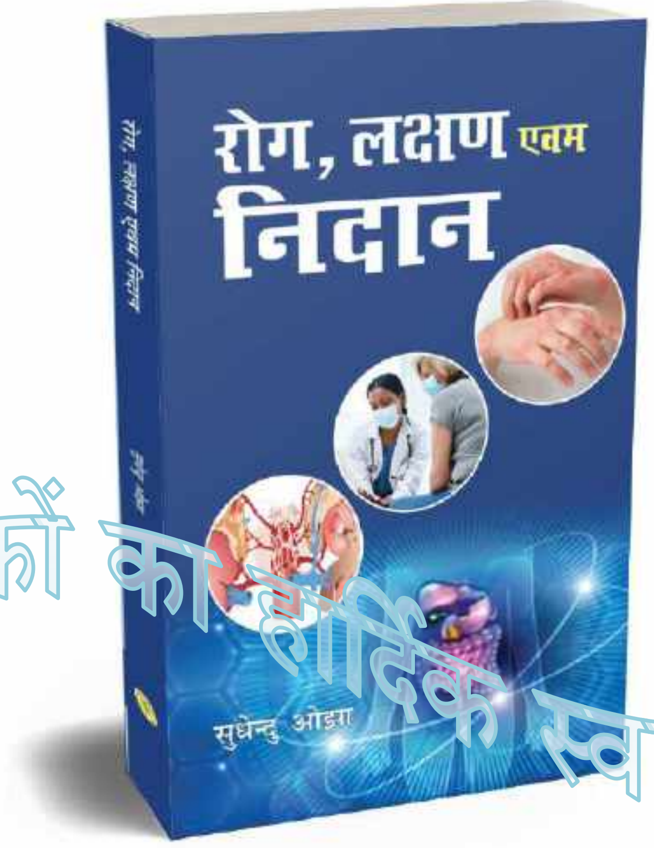

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : रोग, लक्षण एवम निदान
Author : सुधेन्दु ओझा
ISBN : : 978-81-958985-7-2
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 190
Price : 150/-
Genre Prose : गद्य (चिकित्सा)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

मां जी ने कब ये वसीयतनामा तैयार करवाया ? उन सबको हवा भी नहीं लगने दी ..... कमल का कहना था कि यह कुंअर रंजीत के कुराफाती दिमाग की उपज है । उन्होंने हम सबके खिलाफ साजिश रची है ....

सबके मन में शंका के बीज प्रस्फुटित होकर पूर्ण वृक्ष बन कर लहलहा उठे थे । शांत जयराज भी भविष्य के प्रति शंकालु हो उठे थे परंतु भीरु स्वभाव के जयराज ने स्वर्णलता देवी के समक्ष कभी जुबान तक नहीं खोली थी क्यों कि उन दोनों के उम्र में काफी अंतर था , इसलिये वह किंकर्तव्यविमूढ से हो गये थे।

कमल राज नाराजगी भरे स्वर में बोले ,'' जीजी को तो पहले ही पिता जी दहेज में फैक्ट्री और जाने क्या क्या दे चुके हैं , इसलिये उनका तो अब कुछ भी मांगने का हक नहीं बनता । हम कोर्ट जायेंगें...... कुंअर साहब ने मां जी से अनजाने में साजिश रचने के लिये उनसे साइन करवा लिये होंगें। "

संपत्ति ने सबके मन में विष बो दिया था।

जयराज ने अपने अनुभवों के आधार पर कहा कि कमल मामला यदि कोर्ट में पहुंच जायेगा तो हम लोगों के हाथ से निकल कर वकीलों के दांव पेंच में फंस कर , उलझ कर रह जायेगा .... इसलिये जीजी और कुंअर साहब के साथ बात करके आपस में सुलझा लिया जाना ज्यादा, अधिक उचित होगा।

इस विषम परिस्थिति में क्या करना चाहिये , इस बात को लेकर सभी परेशान हो गये थे और आपस में सब लोग बैठ कर विचार विमर्श और मंत्रणा करते रहते , परंतु कोई उपाय उन्हें नहीं समझ आ रहा था । दोनों भाइयों ने आपस में यह तय किया कि हम लोगों के आपसी विवाद की भनक परिवार वालों के सिवा किसी को नहीं लगनी चाहिये .... हम सब जल्दी ही इस समस्या का समाधान निकाल लेंगें।

शोकाकुल परिवार आकुल व्याकुल मनोदशा के कारण अपने को बेबस सा पा रहा था । सब ओर तनाव व्याप्त रहता । कोई विश्वास नहीं कर रहा था कि जीजी ऐसा भी कर सकती हैं ...

क्या ,मां जी ने जानबूझ कर ऐसा वसीयत नामा तैयार करवाया है....

या फिर कुंअर साहब ने लालच के कारण यह फर्जी जाल फैलाया है ...जिसमें उन्होंने शिकारी की तरह सबको कानूनी जाल में उलझा कर बरबादी की तरफ ढकेलने का प्रबंध कर दिया है।

जयराज मानसिक रूप से बहुत तनाव में थे, उन्होंने जीजी को सदा मां की तरह सम्मान की दृष्टि से देखा था और कुंअर साहब ने तो सदा नाराजगी के कारण यहां से दूरी ही बना कर रखी थी।

पशोपेश और आपसी बातचीत में एक महीना बीत चला था जीजी अपनी बात पर अड़ी हुई थीं कि मांजी सारी संपत्ति उनके नाम करके गई हैं इसलिये दोनों भाइयों को उनके मातहत मैनेजर की तरह ही काम करना होगा।

गमगीन जयराज को गुरू निर्णयानंद के रूप में आशा की किरण दिखाई दी .... वह कमल को अपने साथ लेकर बहुत उम्मीद के साथ गुरू जी के पास पहुंचे।

क्या बात है पुत्र, तुम्हारे माथे पर चिंता की लकीरें ? क्या मां जी के अचानक बिछोह को नहीं सह पा रहे हो '... इस संसार में आवागमन तो शाश्वत सत्य है , उससे क्या घबराना ....'

''गुरू महाराज ,अब आप ही हम लोगों की समस्या का निराकरण कर सकते हैं।'‘

“जीजी का कहना है कि वह दोनों मैनेजर की तरह उनके मातहत काम करेंगें और वह मां जी की जगह मालिक बन कर सिंहासनारूढ होंगीं । "

“आप उन्हें समझाइये कि बराबर हिस्सा लेकर मान जायें। "

परंतु शातिर जीजी संभवतः महाराज जी को अपनी तरफ मिला चुकीं थीं।

उन्होंने तुरंत कहा कि 'जब रानी साहिबा अपने स्थान पर स्वर्णलता को प्रतिष्ठित कर गईं हैं तो फिर अनावश्यक वादविवाद की क्या आवश्यकता है ?'

जयराज ने गुरू जी के चरण पकड़ लिये थे और अपने जेब से डायमंड की अंगूठी निकाल कर उनके चरणों पर रख दी थी।

अंगूठी पर निगाह पड़ते ही गुरू जी का स्वर नरम हो उठा....' जय और कमल तुम दोनों को तो मैंनं गोद में खिलाया है इसलिये तुम दोनों मेरे पुत्र की भांति हो । भाई बहन में आपसी विवाद नहीं होंगें तो कहां होंगें ...

मैं स्वर्णलता देवी को समझाने की कोशिश करूंगा ...आगे प्रभु इच्छा ....'

दोनों भाई गुरू जी की बातों से आश्वस्त नहीं हुये थे वरन् उनकी बातों ने मानसिक यंत्रणा ही दी थी।

कमल को गुरू जी से बहुत उम्मीद थी , परंतु अब वह भी टूट रही थी। परंतु जिस प्रकार इंसान आखिरी सांस तक जीवन की आशा लगाये रहता है वैसे उम्मीद की किरण लगाये हुये थे कि शायद जीजी गुरू जी की बात मान जायें।

जयराज आपसी विवाद की बात जितना छिपाने की कोशिश करते जीजी उतना ही उछाल रहीं थीं

गुरू जी अपने लाव लश्कर के साथ आये , दोनों भाइयों ने उनकी सेवा में जी जान लगा दी ....

जीजी से बोले , ' बेटी , आपस में वाद विवाद से क्या लाभ ? परंतु वसीयतना की कॉपी देखते ही बोले ,' जब रानी साहिबा ने स्वयं ही अपनी गद्दी राजकुरी को हस्तांतरित की है तो फिर विवाद का क्या प्रश्न ....और वह अपना तामझाम समेट कर चले गये।

अब तो गुरू जी की शह पाकर स्वर्णलता ने वसीयतनामा के अनुसार मां जी के ऑफिस में बैठ कर फाइल मांग कर काम काज देखना शुरू कर दिया था।

ऑफिस में सुगबुगाहट होने लगी थी कि अब कंपनी की नई मालिक स्वर्ण लता हैं।

जय राज और कमल नें मामले को परिवार के

अंदर ही सुलझाने के लिये परिवार के बुजुर्ग और गणमान्य लोगों को बुला कर सुलझाने का प्रयास किया लेकिन वहां पर स्वर्णलता सौदेबाजी पर उतर आईं ... मुझे तो मां जी की इच्छा का सम्मान करना है , मुझे पैसे का कोई लालच नहीं मेरे लिये तो जैसे मेरा आशु वैसे ही जय और कमल ... फिर झट वह सौदेबाजी पर उतर आईं कभी 10 परसेंट तो कभी 20 परसेंट तो कभी 30 परसेंट , वहां पर सभी लोग रंगे सियार की तरह बदलते बयान को सुनकर परेशान हो गये थे।

कमल इतनी देर से चुपचाप सारा नाटक देख रहे, उनसे न रहा गया वह क्रोधित होकर आपे से बाहर हो उठे थे ,' जीजी 30 परसेंट तो आपको वैसे ही मिल रहा था लेकिन आपकी तो नियत ही खराब है , आप तो समूची संपत्ति पर नाग की तरह बैठना चाहती हैं। "

स्वर्ण लता भला कब चुप रहने वाली थीं, क्रोधित स्वर में बोलीं, 'कमल, मैं जानती हूं, तेरे मुंह में किसने ये शब्द डाले है ...मैं राजेश्वरी को बहुत अच्छी तरह जानती हूं कि वह कितनी लालची और चालाक परिवार की है।''

जय और सुमंगला ने कमल और राजेश्वरी को वहां से हटा कर अंदर कर दिया था।

स्वर्णलता देवी बोलीं , ' जय आखिरी बार तुमसे कह रही हूं कि कोर्ट से बाहर मामला तय कर लो नहीं तो यदि कोर्ट के चक्कर में पड़ गये तो तुम दाने दाने के मोहताज हो जाओगे ....

दोनों पक्ष अपनी अपनी बात पर अड़े हुये थे। कोई भी झुकने को तैयार नहीं था।

स्वर्णलता और रंजीत कुंअर ने मां के ऑफिस में मैनेजर और स्टाफ की मीटिंग बुला कर अपने को मालिक बता कर फाइल मंगा कर घरेलू विवाद को जग जाहिर कर दिया था।

जय राज और कमल राज को जीजी की हरकतें असहनीय लगीं .... उन्होंने एक बार फिर से जीजी के साथ समझौते की पहल की परंतु जीजी कुछ भी सुनने को राजी ही नहीं थीं।

जय को सौ प्रतिशत यही विश्वास था कि वसीयतनामा या जोर जबर्दस्ती लिखाया गया या अनजाने में कोरे कागज में साइन करवा कर यह अपनी इच्छानुसार लिखवाया गया है ।

कमल का साला चंद्रेश शाह बार बार दोनों भाइयों को विश्वास दिला रहे थे कि वह एक दो पेशी में उनके हक में फैसला करवा देंगे। उनके अतिरिक्त देश के नामी वकीलों को इस मुकदमें के लिये बुलाया गया।चंद्रेश ने कमल को भी बहला रखा था कि 10 करोड़ वाली कंपनी को बंटवारे से बचा लेंगे।

भाई बहन आपस में दुश्मन बन गये थे और रोज के रोज नई नई चालें चल रहे थे।

पूरे देश की मीडिया वसीयत नामा के पारिवारिक झगड़े को अपनी ब्रेकिंग न्यूज की तरह दिखा रहे

थे। स्वर्णलता के चेहरे पर शिकन नहीं थी परंतु जयराज मीडिया के सामने आने में बहुत शर्म महसूस होती।

कोर्ट में वसीयतनामा फर्जी है ,की अर्जी दाखिल हो गई।

अब तो दोनों भाई वकीलों के हाथ के खिलौना बनने को मजबूर थे। वकीलों के इशारे पर ही बयान देना होता... अब न ही स्वर्ण लता के हाथ में कुछ रह गया था न ही जयराज और कमल के .... अब तो सूत्रधार वकील थे ... तारीख पर तारीख .... गवाही ... बयान ...बहस .... मामला उलझता गया और समय बीतता रहा कभी फाइल दबा दी गई तो कभी वकील नहीं आये ...आदि आदि सारे हथकंडे आजमाये गये।

चंद्रेश वकील ने वसीयतनामा फर्जी है , सिद्ध करने के लिये एड़ी चोटी का जोर लगाते हुये सबूत और गवाह पेश किये .. स्वर्णलता ने भी देश के नामी वकील को बुलाया था ... उनकी दलीलें और गवाह और सबूत बहुत दमदार थे।

कंपनी की हालत बिगड़ती गई , पैसा पानी की तरह बहाया जा रहा था , जय डिप्रेशन के शिकार बन गये।

उनके जीवन की शांति संपन्नता सब कुछ हाथ से फिसलता जा रहा था ....

जिस तरह से बंदर बांट में बंदर ही पूरी रोटी हजम कर जाता है , वही हाल इन भाई बहन का था ....
उनके हाथ कुछ भी नहीं लग पा रहा था और वकीलों का घर भर रहा था।

आखिर में जज ने दोनों तरफ की दलीलें सुनने के बाद कंपनी के मैनेजमेंट को अपने हाथ में लेते हुये अपनी ओर से रिसीवर नियुक्त कर दिया और कंपनी का एकाउंट सील कर दिया।

स्वर्ण लता और रंजीत तो ऐसे मगरमच्छ के समान थे जो जय और कमल जैसी मछलियों को आसानी से अपना शिकार बना लेते थे परंतु कोर्ट में उनकी चालबाजी काम नहीं आई।

फैसला लंबित रहा .... कंपनी और बिजनेस की हालत बिगड़ चुकी थी ...

आपसी विवाद मे हंसते खेलते संपन्न परिवार की खुशियां लुट गई थीं और जीवन संघर्ष मय हो गया था ......
कई वर्षों के बाद , जय सबको बिलखता छोड़ कर इस दुनिया से चले गये और कमल आशा भरी नजरों से कोर्ट के चक्कर लगा रहे हैं ......

पद्मा अग्रवाल

लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली110092

गरीबी

लघुकथा :

विनी और बिट्टू दोनों भाई-बहन मैले-कुचैले कपड़े पहने थे। हाथों में छोटी-छोटी बोरियाँ थीं। वे कचरे बीनने जा रहे थे। कचरे के ढेर में झिल्ली, प्लास्टिक, लोहा आदि बीनते थे; और उन्हें बेचकर कर अपने खाने की व्यवस्था कर लेते थे। कभी कचरे के ढेर से रोटी के टुकड़े वगैरह या खाने को कुछ मिल जाता था, उसी से पेट भर लेते थे।

बिट्टू बोला- "विनी उठो ! आज सबेरे जल्दी जाएँगे, तो हो सकता है कुछ खाने को मिल जाये। कल रात से हम भूखे हैं।"

"हाँ भैया, मुझे तो रात को भूख के मारे बिल्कुल भी नींद नहीं आयी।" विनी बोली।

रास्ते में एक आदमी अपने कुत्ते जैली को लेकर मॉर्निंग वॉक कर रहा था। वह कुत्ते को बिस्किट खिला रहा था। आगे-आगे कुत्ता और पीछे-पीछे आदमी। उसके पीछे थे दोनों भाई-बहन- बिट्टू और विनी। दोनों देख रहे थे; कुत्ता बिस्किट्स को नहीं खा रहा था। वह रास्ते में ही गिरा देता था। गिरि हुई बिस्किट को कभी विनी तुरन्त उठा लेती थी; तो कभी बिट्टू उठा लेता। बिस्किट पाकर दोनों खुश हो जाते थे। "आज भूख थोड़ी शांत हुई भैया।" विनी बोली।

"हाँ विनी, हम रोज ऐसे ही सबेरे जल्दी आया करेंगे। ऐसे ही खाने को हमें रोज मिल सकता है।" तभी अचानक उस आदमी ने पीछे मुँड़ कर देखा कि जैली की गिरी हुई बिस्किट्स दोनों बच्चों के हाथों में है। उसने तुरंत दोनों को बिस्किट के टुकड़े नीचे फेंकने को कहा। बच्चे डर गए। फिर दोनों ने बड़े मायूस हो कर बिस्किट के टुकड़े नीचे फेंक दिए।

"यह कुत्तों के खाने की बिस्किट्स है; इंसानो के लिए नहीं।" कहते हुए उस आदमी ने सारे बिस्किट्स जैली को जबरदस्ती खिला दिया।

एक-दूसरे के चेहरे देख कर विनी और बिट्टू की आँखें भर आई। दोनों भाई-बहन भारी मन से घर लौट रहे थे।

प्रिया देवांगन "प्रियू"

सिलसिला

एक ट्रक ने फुटपाथ पर एक महिला को सहारा देकर उतारा। परिचिता प्रतीत हुई। गाड़ी की गति कमकर देखा तो ललिता जैसी लगी। अट्ठारह-बीस सालों में फर्क आ गया था। पुकारने पर महिला ने दृष्टि उठाकर देखा। थोड़ी आनाकानी के बाद अगली सीट पर बैठ गई।

"यहाँ क्या कर रही हो?"

"इकट्ठा सब जान लोगे?" बुझी सी मुस्कान उभरी।

"ओह! बरसों बाद गाँव आया हूँ। तुम यूँ मिल गई तो उत्साहित हो उठा।"

"शहर जाकर भविष्य पर ध्यान देने का तुम्हारा कदम उचित था।"

"प्यार में इंसान को भूत-भविष्य कहाँ दिखता है। ललिता! तुम मिल जाती तो यहीं रम जाता। पर तुम्हारी माँ ने रिश्ते के लिए मना कर दिया था। 'देवदासी की बेटी देवदासी ही बनेगी। हमारा ब्याह ईश्वर से होता है। अन्य से किया तो ईश्वर का कोप बरसेगा।' विद्यार्थी था। धनोपार्जन का जरिया होता तो तुम्हें भगा ले जाता। अपने बारे में बताओ। वही काम करती हो या। ?"

"देवदासी का ऐसा क्या काम? पंद्रह की उम्र के बाद ईश्वर की ब्याहता बनाकर। मंदिर के सारे गणमान्य दैहिक शोषण करते रहे। मंदिर में नृत्य-संगीत के दौरान प्रांगण में बैठे दर्शक नजरों में हमें लीलते रहते। बहाने से छूने की भी कोशिश करते रहे"। अंतःस्थल की पीड़ा नैनों से छलक पड़ी।

"ओऽहहह!"

"मेरी उम्र तीस से अधिक होते ही मेरे स्थान पर किसी अन्य कमसिन निर्धन लड़की को मजबूर माँ-बाप से खरीदकर देवदासी बना दिया। खुशकिस्मत रही कि मैं माँ नहीं बनी। रोटी के लिए मजबूरन धंधे में उतरी। ग्राहक अधिकांशतः रास्ते से गुजरने वाले ट्रक ड्राइवर होते हैं।"

"खबर आई थी कि देवदासी प्रथा बंद हो गई है..."

"कुप्रथाओं के बंद होने का ढिंढोरा पिटता है। पर कमोबेश सब चलता रहता है।"

"शहर चलो। कोई अच्छा काम मिल जाएगा।"

"जाँच करवाई है। एचआईवी पॉजिटिव होने के लक्षण हैं मुझमें। आप निकलें। मेरे साथ देखा जाना आपके हित में नहीं।"

"मैं तुमसे प्यार करता था।"

"आपने कहा। 'था'। यही सच है।"

"माना! पर किसी स्वयंसेवी संस्था में चलो। रहने खाने का प्रबंध हो जाएगा। ईलाज भी..."

"वृद्धा माँ को यहाँ अकेला छोड़ कैसे जाऊँ?" आँखों में आँसू लिए ओझल हो गई।

नीना सिन्हा

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : **प्रतापगढ़ न्यूज़ (उपन्यास)**

Author : सुधेन्दु ओझा

ISBN : **978-81-964179-7-0**

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 154

Price : 200/-

Genre Prose : गद्य (उपन्यास)

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

डॉक्टर (प्रो) राजेंद्र सिंह साहिल सम्मान

फतुहा (पटना)

फतुहा की साहित्यिक सांस्कृतिक संस्था जन साहित्य परिषद के तत्वाधान में फतुहा के मकसूदपुर स्थित संस्कार शिक्षा निकेतन के प्रांगण में लुधियाना (पंजाब) से पधारे हिंदी एवं पंजाबी के सुप्रसिद्ध कवि, कथाकार एवं सृज्यमान के संपादक डॉक्टर (प्रो 0) राजेंद्र सिंह साहिल के सम्मान में एक भव्य समारोह का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन साहित्य प्रेमी डीएसपी सियाराम ने दीप प्रज्वलित कर किया। समारोह के वर्तमान समय में साहित्य की दशा और दिशा विषय पर चर्चा हुई। चर्चा में भाग लेते हुए ख्याति लब्ध कथाकार एवं रंगकर्मी डॉ किशोर सिन्हा ने कहा कि साहित्य आज अनेक माध्यमों से आम जन तक पहुंच रही है। प्रत्येक स्थिति में साहित्य के साथ हमारा संबंध बना रहेगा। बिहार की गौरव गाथा' के लेखक डॉ शशि भूषण सिंह ने तकनीक को मुद्रित साहित्य का सहयोगी बताया तथा उन्होंने कहा कि मुद्रित साहित्य की उपादेयता कभी खत्म नहीं होगी। प्रसिद्ध कथा शिल्पी अशोक प्रजापति ने ऑनलाइन अध्ययन अध्यापन को नुकसान दे बताते हुए कहा कि इससे बच्चों का भविष्य खराब हो रहा है। यही कारण है कि कई देशों में ऑनलाइन अध्ययन को प्रतिबंधित कर दिया गया है। डॉ राजेंद्र साहिल ने विस्तार से इस बात की चर्चा करते हुए कहा कि साहित्य की परंपरा कभी खत्म नहीं होगी क्योंकि यह मनुष्य की प्रवृत्ति से जुड़ा है। इतना जरूर है कि इन दोनों पढ़ने की अपेक्षा देखने और सुनने का काम ज्यादा हो रहा है। माध्यम भले बदल गए हो किंतु संगीत और साहित्य आज भी आमजन के बीच जीवंत है और रहेगा। साहिल जी की बातों का भरपूर समर्थन करते हुए

विशिष्ट अतिथि वरिष्ठ कवि एवं चित्रकार सिद्धेश्वर ने सोशल मीडिया के माध्यम से साहित्य के प्रसार को महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने कहा कि प्रिंट मीडिया और सोशल मीडिया की अपनी अलग-अलग उपयोगिता है। सोशल मीडिया ने जन साहित्य को आमजन तक पहुंचाने का सार्थक और सकारात्मक प्रयास किया है। इसने मुट्ठी भर साहित्यकारों के वर्चस्व और दादागिरी को तोड़ा है। कई नई और पुरानी सार्थक साहित्यिक प्रतिभाएं , सोशल मीडिया के माध्यम से अपनी सामाजिक उपयोगी रचनाओं को जन उपयोगी बना रहे हैं। साहिल जी ने ठीक कहा है कि साहित्यकार उस रेल पटरी की तरह काम करता है, जिस पर समाज की गाड़ी अपने-अपने उद्देश्य तक दौड़ रही होती है। यह दुर्भाग्य है कि इस सफर में हम रेलगाड़ी को तो याद करते हैं किंतु पटरी को नहीं।"

इस अवसर पर डीएसपी सियाराम यादव ने डॉ राजेंद्र साहिल को जन साहित्य परिषद की ओर से स्मृति चिन्ह अंग वस्त्र एवं सम्मान पत्र प्रदान किया। तत्पश्चात सियाराम यादव डीएसपी अशोक प्रजापति आदि ने डॉ किशोर सिंह लिखित उपन्यास " ताली" एवं उनके संपादन में प्रकाशित साक्षात्कार संकलन " उनकी बातें" का लोकार्पण किया। समारोह के अंतिम सत्र में आचार्य विजय गुंजन, शशि भूषण सिंह, राम रक्षा मिश्र, कुमए कांत आदि गीतकारों ने काव्य पाठ किया। मंच संचालनहुए जाने- माने लघुकथाकार लेखक रामयतन यादव ने कहा कि जीवंत साहित्य पहले भी पढ़ी जाती थी और आज भी पढ़ी जा रही है। पहले से अधिक आज साहित्य का सृजन हो रहा है, और तमाम विसंगतियों के बावजूद, साहित्य आज भी किसी न किसी माध्यम से आमजन के करीब है!"

इस शाश्वत आयोजन का समापन अनिता कुमारी के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ।

प्रस्तुति रामयतन यादव एवं सिद्धेश्वर

"महिला आरक्षण"

लघुकथा:

नेता जी भाषण दे रहे थे, महिलाओं को सांसद, विधायक बना रहे थे। गरीब महिलाओं को अमीर बना रहे थे। तैंतीस परसेंट महिला आरक्षण विल पास हो गया है; बता रहे थे। वहां गरीब महिलाओं के बीच एक गरीब महिला पढ़ी - लिखी, सर्व लोकप्रिय महिला को चुनाव लड़ाने का मन जनता ने बना लिया था। चुनाव नजदीक थे; प्रत्याशियों का चयन हो रहा था। सर्वगुण संपन्न उस महिला ने भी आवेदन किया। मुख्यालय में वह भी पहुंच गई थी।

चयनकर्ता, पार्टी अध्यक्ष ने नीचे से ऊपर तक देखा और उसके होंठों पर व्यंग्यात्मक मुस्कान बिखर गई।

तभी उसी क्षेत्र के सबसे अलोकप्रिय, भ्रष्ट आदमी ने सूटकेस से भरा कैश अध्यक्ष के चमचे को पकड़ा कर, कुछ कान में फुसफुसाया। चमचे ने संक्षेप में कहा, "ओ के!"

फिर लिस्ट जारी हुई जिसमें उसी भ्रष्ट, अपराधी को टिकट जारी कर दी गई थी। महिला आरक्षित सीटों में भी अलोकप्रिय, भ्रष्ट, दुष्ट नेताओं की पत्नियों को टिकट दे दिए गए थे। प्रधानी, सरपंची में प्रधानपति सब कुछ होता है और विधायकी, सांसदी में भी वही होता है।

यही तो महिला आरक्षण का जादू है।

सतीश "बब्बा"

प्यार का दीप

प्यार का दीप साथी जलाते चलो।
मार्ग अवरोध सारे हटाते चलो।।

आँधियों भी चलें प्यार की लौ जले।
प्यार सहगान है नित्य फूले-फले।।
हो महक हर दिशा उस गगन तक चढ़े।
प्रेम की यह शिखा हर हृदय तक बढ़े।।
दूर छल-छद्म भागे भगाते चलो।
मार्ग अवरोध सारे हटाते चलो।।

आप संतान किसके अहो बोल दो।
वेद किसने रचे राज को खोल दो।।
सारथी कृष्ण को तुम रखो साथ में।
नित्य ऊँचा रखो धर तिलक माथ में।।
शत्रु को शत्रु से बस लड़ाते चलो।
मार्ग अवरोध सारे हटाते चलो।।

राष्ट्र अपना सुरक्षित सदा चाहिए।
शत्रुओं के लिए हनु गदा चाहिए।।
शत्रु आते शरण हों गले लो लगा।
भाव दीपक सरीखे सदा हो जगा।।
प्रेम-परिहास हो नित हँसाते चलो।
मार्ग अवरोध सारे हटाते चलो।।

हो गहन रात्रि का तिमिर सामने।
प्रेम दीपक तुम्हे हाथ में थामने।।
हो उजाला धरा पर अँधेरा नहीं।
छुद्र राखो कभी आप घेरा नहीं।।
सूर्य है ज्यों गगन जगमगाते चलो।
मार्ग अवरोध सारे हटाते चलो।।

हो तुम्हारी प्रभा भोर के काल तक।
रवि होता उदय बस उसी भाल तक।।
विश्व जाने तुम्हे तुम महाकाल हो।
सर्प तक्षक सरीखे महाव्याल हो।।
शत्रु को मौत देते-सुलाते चलो।
मार्ग के अवरोध सारे हटाते चलो।।

बाबा कल्पनेश
श्री गीता कुटीर-12,गंगालाइन,
स्वर्गाश्रम-ऋषिकेश,
उत्तराखंड पिन-249304

कैसी आजादी?

हर वर्ष की भाँति -
इस वर्ष भी स्वतंत्रता दिवस पर
वे गिना गये-
आजादी के कायदे
आजादी के फायदे
मैं सुनता रहा
वे सुनाते रहे
मैं अपनी फटी कमीज
टूटी झोंपड़ी
और-
खाली पेट के विषय में -
सोचता रहा / छटपटाता रहा
चिलचिलाती धूप में -
भारत माँ का जयघोष सुन-सुनकर
तिरंगे झंडे को -
ज़ोर ज़ोर से हिलाता रहा
यूँ ही -
स्वतंत्रता दिवस
आता रहा / जाता रहा
हर साल -
ओजस्वी भाषणों के द्वारा
प्रजातंत्र का नाम ले-लेकर
जनहित में -
अपने हित का रंग दे-देकर
वे गिनाते रहे -
आजादी के कायदे
आजादी के फायदे
अफसोस -
आसमान तले / पले
भूखा पेट / नंगा तन
आज तक समझ न सका
आजादी! आजादी के कायदे!!
आजादी के फायदे!!!

सूर्यनारायण गुप्त "सूर्य"

विज्ञान व्रत की छह ग़ज़लें

ग़ज़ल ----1

मुझको दरिया रहना है
तो सागर तक बहना है

मैंने तुझको पहना है
तू ही मेरा गहना है

इस दुनिया में रहना है
यानी सब कुछ सहना है

जो कुछ भी तामीर हुआ
आख़िर उसको ढहना है

वो जो बरसों मौन रहा
उसको अब कुछ कहना है

ग़ज़ल ----2

कल शायद कुछ यों बेहतर हो
मुझको अपनी ख़ैर - ख़बर हो

मेरे सपनों का जो घर हो
तेरे जैसा ख़ुश - मंज़र हो

जो दुश्मन की गर्दन पर है
मुमकिन है वो मेरा सर हो

सबको जो भगवान दिखा है
हो सकता है वो पत्थर हो

मैं बस तेरी यादें पहनूँ
काश कि मेरा इक पैकर हो

ग़ज़ल ---- 3

हाकिम की तासीर सदा
होती क्यों बे - पीर सदा

तनहाई में साथ रही
बस तेरी तस्वीर सदा

मुझको ख़ुद से मिलने में
होती है ताख़ीर सदा

ख़्वाबों तक महदूद रही
ख़्वाबों की ताबीर सदा

टोका - टाकी करता है
मुझमें एक कबीर सदा

ग़ज़ल ----4

उसने ऐसे मुझको देखा
मैंने फिर - फिर ख़ुद को देखा

सब उसकी सूरत में उलझे
किसने उसके दिल को देखा

अब जीने को मन करता है
आख़िर मैंने किसको देखा

सब अल्फाज़ उसी की सूरत
मैंने उसके ख़त को देखा

खोया - खोया हूँ तबसे ही
जबसे मैंने उसको देखा

ग़ज़ल ----5

जब से इक मैख़ाना हूँ
सबका ख़ास ठिकाना हूँ

कुछ तो है उस दुश्मन में
क्यों उसका दीवाना हूँ

मुझको सबने अपनाया
पर ख़ुद से बेगाना हूँ

जिसमें कोई द्वार नहीं
एक ऐसा तहख़ाना हूँ

पल - भर में क्या सिमटूँगा
पूरा एक ज़माना हूँ

आप मिले बस तबसे ही
मौसम एक सुहाना हूँ

मुझसे लोग शनासा हैं
मैं ख़ुद से अनजाना हूँ

ग़ज़ल ----6

यों उसका मतलब था और
पर था उसका लहजा और

वो जो घर में रहता और
होता घर का नक़्शा और

मैंने उसको समझा और
क्यों ख़ुद को उलझाया और

जिसके आगे मंज़िल थी
शायद वो रस्ता था और

उसने मेरे साथ जिया
फिर से वक़्त पुराना और

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

Book Name : **मौत और रहस्य (उपन्यास)**

Author : सुधेन्दु ओझा

ISBN : : **978-81-964179-9-4**

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 208

Price : 200/-

Genre Prose : गद्य (उपन्यास)

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

लवी मेला और बुशहर रियासत

आशा शैली

मेलों एवं उत्सवों की पृष्ठ भूमि में यदि भारत को देखा जाए तो आप पायेंगे कि भारत उत्सवधर्मी देश है। यूँ तो किसी भी देश अथवा प्रदेश की बात ही नहीं पूरे विश्व में मेले उत्सव आयोजित किये जाते हैं। देश काल के अनुसार इनकी विशेषताएँ भी अंकित होती रहती हैं फिर भी किसी भी पहाड़ी क्षेत्र में मेलों का अपना विशेष आकर्षण होता है। हिमाचल में मेले के लिए 'जात्रा' शब्द प्रयोग में लाया जाता है, इस शब्द के जन्म के लिए पहाड़ की कठिन-श्रमप्रधान जीवन चर्या एवं दूर-दराज क्षेत्रों में बसे छोटे-छोटे गाँव ही सम्भवतया उत्तरदायी हैं।

मेले त्यौहारों को लें तो हिमाचल के लगभग हर गाँव में ही मेले लगते हैं। इन मेलों के साथ हिमाचल की देव परम्पराएँ भी जुड़ी हुई हैं। यूँ तो भारत का हर भू-भाग अपने विशिष्ट मेले त्यौहारों एवं पर्वों के लिए प्रसिद्ध रहा है फिर भी हिमाचल की अपनी अलग पहचान में एक पहचान यह मेले भी हैं। रंग-बिरंगे परिधानों से सजे देवी-देवता और ढोल की थाप पर गोल दोयरे में नाचते स्थानीय स्थानीय स्त्री-पुरुष और दूर तक सड़कों को घेरे स्थानीय एवं मैदानी वस्तुओं से सजे बाजार इन मेलों की शोभा बढ़ाते हैं।

आज हम यहाँ हिमाचल के एक विशेष मेले की चर्चा करने जा रहे हैं जो सम्पूर्ण विश्व में लवी मेले के नाम से विख्यात् है। पश्चिमी हिमालय के दामन में मसा रामपुर बुशहर नगर सतलुज के बायें किनारे पर हिमाचल की राजधानी शिमला से 130 किमी की दूरी पर बसा हुआ है। चन्द्रवंशी राजाओं की रियासत की शीतकालीन राजधानी रामपुर का अपना ही ऐतिहासिक महत्व है। एसी लवी मेले के कारण रामपुर का नाम लोग देश-विदेश में जानते हैं, अथवा यह भी कहा जा सकता है कि लवी मेला और रामपुर बुशहर एक-दूसरे में घुलमिल गए हैं।

लवी मेले की परम्परा का सदियों पुराना इतिहास है। यह मेला राजा केहरि सिंह द्वारा (1639-1696) प्रारम्भ कहा जाता है। शास्त्रों की बात करें तो बुशहर वंशवृक्ष यदुवंशी श्रीकृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न के पुत्र अर्थात अनिरुद्ध से जाना जाता है। एक अन्य मत के अनुसार दक्षिण भारत के कांचन नगर के ब्राह्मण वंशीय दशरथ के पुत्र प्रद्युम्न के वंश की 113वीं पीढ़ी के राजा थे केहरि सिंह, तिब्बत और बुशहर के बीच व्यापार को बढ़ावा देने का यह सार्थक प्रयास था। दोनों देशों के व्यापारियों को एक-दूसरे के राज्य में बेरोक-टोक आने-जाने के लिए इनकी चलाई हुई है यह परम्परा प्रमाणित है। यहाँ एक बात और भी जान लेने योग्य है कि यह राजा केहरि सिंह बिसाहर का छत्रपति भी कहलाता था और मुगल काल में राजा केहरि सिंह के दिल्ली दरबार से भी सम्बंध थे। पूर्वकाल में इस रियासत को बुशहर अथवा बिसाहर नाम से जाना जाता था। पौराणिक उदाहरणों के अनुसार शिव ने विषपान के पश्चात् कैलाश को लौटते समय इन पहाड़ियों में विश्राम किया था। यहीं उन्हें विष के प्रभाव से राहत मिली थी अतः इस

स्थान का नाम विषहर पड़ गया जो कालांतर में बिगड़ते-बिगड़ते बुशहर हो गया। आगे चल कर इसी केहरि सिंह के वंश में रामसिंह नाम का एक राजा हुआ, जिसने यह नगर बसाया। इस नगर को घेरे ऊँची-ऊँची पहाड़ियाँ नगर की सीमा में प्रवेश करने तक नगर का पता ही नहीं लगने देतीं। कहा जाता है कि सदियों पूर्व चन्द्रवंशी राजाओं की राजधानी कामरू, फिर सराहन (शोणितपुर) और उसके बाद रामपुर लाई गई। ऐसा सम्भवतया समय-समय पर होने वाले गोरखों के आक्रमण के मद्देनज़र किया गया। वर्तमान में सतलुज के एक ओर 'रामपुर' (जि. शिमला) है तो दूसरी ओर परशुराम की तपस्थली 'निरमण्ड' (जिला कुल्लू)। इसी नगर रामपुर बुशहर के, कॉलेज मैदान में यह मेला लगता है। इस मेले में मुख्यतया जिला किन्नौर के उत्पाद बिकने आते हैं। शिमला-रामपुर राजमार्ग के शिमला से रामपुर जाते हुए साठ कि.मी. तय करने के बाद ही यह राजमार्ग सतलुज के साथ-साथ तिब्बत की ओर बढ़ने लगता है, किन्तु कुछ ही दशाब्दियों पूर्व यह राजमार्ग नदी को तलहटी में छोड़कर आगे बढ़ता था। परिणाम स्वरूप लवी का मेला भी रामपुर से मात्र अठारह कि.मी. की दूरी पर गौरा नाम के गाँव में आयोजित होता था। गौरा नाम का यह गाँव आज भी बुशहरी राजाओं की ही सम्पत्ति है। एक समय था जब गोरखों की लूट के कारण यहाँ सिक्ख सेनाएँ बुलाई गई थीं। उसी समय शांति काल में उन सेनाओं से सड़क निर्माण का कार्य लिया गया, अतः यह मार्ग महाराजा रणजीत सिंह का बनवाया कहा जाता है। हिन्दी साहित्य के दिग्गज विद्वान, महापण्डित राहुल साँकृत्यायन इसी मार्ग से हिमाचल कई बार आये-गये। अपनी पुस्तक 'किन्नर देश' में राहुल ने इसकी विस्तृत चार्चा की है। इस मार्ग में आने वाले हर गाँव का परिचय उनकी पुस्तक में मिलता है।

उस समय यह मेला वर्ष में तीन बार आयोजित किया जाता था। किन्नर प्रदेश में शीत का प्रकोप बढ़ने के साथ-साथ वहाँ के चरवाहे मैदानी क्षेत्रों की ओर बढ़ने लगते। अपने भेड़-बकरियों के रेवड़ों पर लाद कर ऊँचे पर्वतीय क्षेत्रों के उत्पाद यथा ऊन, पशम, चिलग़ोज़ा, अखरोट, बादाम, काला ज़ीरा और ऊनी वस्त्र अपने साथ ले आते। रामपुर आकर कार्तिक मास के तीसरे सप्ताह से प्रथम तिथि मार्ग शीर्ष तक यह मेला लगता। यही वर्ष का पहला मेला होता। सारी सामग्री न बिक पाने की स्थिति में किन्नर प्रदेश के निवासी यहाँ के स्थानीय जमीदारों अथवा धनी लोगों के पास अपना माल धरोहर रख छोड़ते और गर्मी बढ़ने के साथ ही मैदानों से भेड़-बकरी के साथ जब वापस लौटते तब शेष बची वस्तुओं को बेचते। बैसाख के तीसरे सप्ताह से प्रथम ज्येष्ठ तक तीसरी और अन्तिम लवी लगती, किन्तु इसके बीच के अन्तराल में लगती दूसरी लवी पोष मास में, जिसे ढाल कहा जाता है। इस दूसरी लवी का कारण पीछे छूटे वे चरवाहे होते जो समय पर नहीं पहुँच सकते थे। तब वे धीरे-धीरे रामपुर के पास एकत्र होते रहते। यह लवी आज भी लगती है किन्तु इसका क्षेत्र रामपुर के कल्लू जिले से जोड़ने वाले पुल के पास ब्रो नामक स्थान पर

केंद्रित है जो पूर्व में बुशहर रियासत का ही एक भाग था। दरअसल लवी मेले का उद्देश्य ही ऊँचे पर्वतीय क्षेत्रों की उपज को खपाना रहा है। किन्नौर के उँचे पहाड़ों पर कार्तिक मास में हिमपात शुरू हो जाता है और ज्येष्ठ मास में बर्फ गल कर साफ़ हो जाती है, अब खेत जोत-बोकर ये लोग मैदान की ओर प्रस्थान कर जाते हैं और बर्फ गल जाने पर अपने घरों को वापस लौटते हैं क्योंकि यही समय इनके खेती करने का होता है। इस क्रम से चलने वाले लवी मेले का केवल कुछ वर्षों पहले तक यही रंग-ढंग था। अपने उत्पादों के बदले में ये बंजारे नमक, दालें व अन्य आवश्यक वस्तुएँ घरों को ले जाते।

सदियों से चले आ रहे इस मेले के रूप-रंग में प्रचलित मीडिया एवं बदलते शासन तन्त्र ने भारी परिवर्तन किया है फिर भी इसका मूल चरित्र ज्यों का त्यों बना हुआ है। ये चरित्र हैं वे खानाबदोश चरवाहे जो पक्के घरों और खेतों, सेब और चिलग़ोजे-अखरोट के बागों के मालिक होते हुए भी घुमक्कड़ी को अपनाए हुए हैं। इनकी विवशता वर्ष में एक ही फसल का होना है। मौसमों में भारी बदलाव के कारण और विशेष सरकारी सुविधओं व बड़ी-बड़ी नौकरियों के चलते अब ये क्षेत्र इतने सूने नहीं रहते फिर भी अक्तूबर के मध्य तक रामपुर के निकटवर्ती क्षेत्रों में गडरियों के डेरे और भेड़-बकरियों के रेवड़ जहाँ-तहाँ सड़कें घेरे मिल ही जाते हैं। इनके साथ ही महिलाएँ व बच्चे भी इन डेरों में रहते हैं। इनके डेरों पर कई-कई भारी भरकम गद्दी कुत्ते भी रहते हैं। ये कुत्ते बांधे नहीं जाते, खुले घूमकर डेरे की रक्षा करते हैं, मजाल है कोई डेरे के पास फटक भी जाए? निर्धारित समय पर मेले में अपना सामान बेच कर ये लोग दिन भर की थकान मिटाने के लिए स्त्री-पुरुष मिलकर गोल घेरा बना कर नाचते हैं, एक-दूसरे का हाथ पकड़ कर (किन्तु रिश्ते का परहेज रखकर) नाचते-गाते ये लोग मधुर सृष्टि की रचना करते हैं।

सदियों से चले आ रहे इस मेले के रूप-रंग में प्रचलित मीडिया एवं बदलते शासन तन्त्र ने भारी परिवर्तन किया है फिर भी इसका मूल चरित्र ज्यों का त्यों बना हुआ है। ये चरित्र हैं वे खानाबदोश चरवाहे जो पक्के घरों और खेतों, सेब और चिलग़ोजे-अखरोट के बागों के मालिक होते हुए भी घुमक्कड़ी को अपनाए हुए हैं।

ऊपर स्पष्ट किया जा चुका है कि लवी के रूप में मनाए जाने वाले तीनों मेले परम्परागत रूप से पश्चिम तिब्बत और भारतीय मैदानों के मध्य व्यापार का प्रमुख आधार रहे हैं। इस मेले के माध्यम से लेह, लद्दाख, पंजाब के मैदानी भागों और निचले पहाड़ी क्षेत्रों के बीच ऊन पशम व इनसे बने वस्त्र (कोट की पट्टियों, लाँग, दोहड़ू जो एक प्रकार की लोई 'कम्बल' होती है, नमदे, गुदमें) चिलग़ोज़े,

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

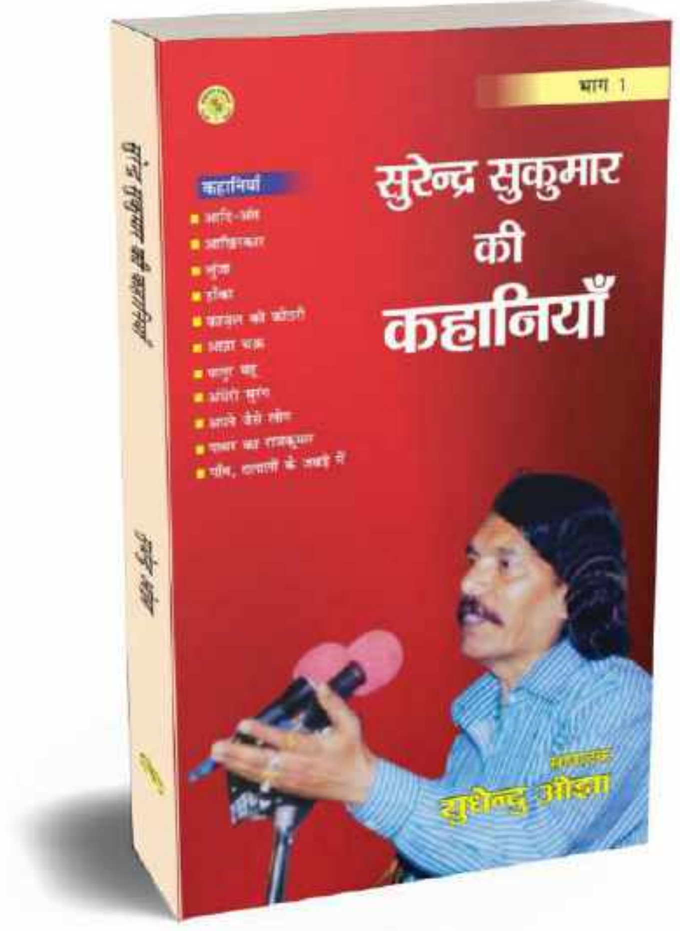

Book Name : **सुरेन्द्र सुकुमार की कहानियाँ (भाग-1)**
Editor : सुधेन्दु ओझा
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Price : 250/-
Genre Prose

बछेरे (आश्वशावक) घोड़े, खच्चर, अखरोट बादाम, काला ज़ीरा, केसर, सूखी मटर, कड़ूधूप (धूप की जड़ें) कच्ची हल्दी व अन्य स्थानीय उत्पाद भारी मात्रा में क्रय-विक्रय किये जाते हैं।

भारतीय सीमाँत प्रान्तों में 'लोई' शब्द एक सुपरिचित शब्द है। लोई पश्मीने की बड़ी सी चादर को कहा जाता है। कुल्लू, मण्डी, काँगड़ा और काश्मीर ही नहीं पाकिस्तान के कुछ भागों में भी 'लोई' शब्द इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है। रामपुर बुशहर में नवम्बर के दूसरे सप्ताह में लगने वाले इस मेले में इन वस्त्रों के व्यापार की प्रमुखता होने के कारण ही यह मेला 'लोई का मेला' कहलाने लगा जो कालान्तर में बिगड़कर लवी बन गया।

लवी मेला कैसे शुरू हुआ? इस बारे में विद्वानों में मतभेद अथवा भ्रान्तियाँ तो हैं फिर भी राजा केहरि सिंह के शासनकाल (1689 ई.सन्) के प्राप्त एक लिखित समझौते के अनुसार इसे नमग्या समझौते का नाम दिया जाता है। नमग्या अभिलेख के अनुसार राजा केहरि सिंह और तिब्बत के शासकों के मध्य यह समझौता हुआ था कि 'जब तक पत्थर पर ऊन न उगे तब तक यह समझौता लागू माना जाए।' अब पत्थर पर तो ऊन उगने से ही रही। वह तो भेड़ के ही बदन पर उगेगी। सो न ऊन पत्थर पर उगे न समझोता टूटे।

नमग्या समझौते के मूल हिन्दी पाठ को इस प्रकार से देखा जा सकता है। इसे बुशहर-ल्हासा संधि भी कहा जाता है।

''जब तक त्रिकालज्ञ देवताओं के वास-स्थान और जम्बूद्वीप में स्थित हिम नहीं पिघलता, जब तक मानसरोवर झील पानी से रिक्त नहीं हो जाती, जब तक श्यामवर्ण कौवा सफेद नहीं हो जाता है और जब तक कल्प का अंत नहीं हो जाता, तब तक ऊपर और नीचे (अर्थात् तिब्बत और बुशहर) वाले दोनों राजा अपने मैत्री सम्बन्ध कायम रखेंगे और अपने राज्य की सीमाओं में सत्कार्य करके सब प्राणियों का कल्याण करेंगे। ऊपर और नीचे के दोनों राजाओं के संदेशवाहक, कर्मचारी और राजदूत स्वच्छन्द इलाके में आ-जा सकेंगे। यह आवश्यक होगा कि बुशहर राज्य के संदेशवाहक तीन वर्ष में आएं और नारिस (तिब्बत) के तीनों खण्डों की राजधानियों सपरंग, रोथंग और जंगसर में वास करें। ऊपर और नीचे के राजाओं के संदेशवाहकों को ऊपर और नीचे आते-जाते बाल भर भी तंग न किया जाए तथा न किसी प्रकार का कर लिया जाए और न किसी प्रकार का कष्ट पहुँचाया जाए।

ऊपर और नीचे के राजा अपने सत्कार्यों से ऐसी व्यवस्था बनाएँ जिससे आने-जाने वाले लोग निर्भय होकर विष और घातक हत्यारों के भय से सर्वथा मुक्त होकर विचरण कर सकें।''

इस पृष्ठ भूमि के सामने एक बात और भी जानने योग्य है कि किसी समय इस भू-भाग में (विशेष कर रोहड़ू और बुशहर के कुछ क्षेत्रों में) देवता की बलि के लिए विष देने की भी प्रथा थी। इसके लिए किसी नाते रिश्तेदार को बख्शा नहीं जाता था बस जो समय पर आ गया वह बलि चढ़ गया। ऊपर के आलेख में इसी विष की चर्चा की गई है।

भारत वर्ष के इस भू-भाग पर आर्थिक दृष्टि से पश्मीना महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता रहा है। अन्य भू-खण्डों पर जहाँ संघर्ष राज्य विस्तार अथवा अहम् के कारण होते रहे, वहाँ हिमालयी क्षेत्र में इन संघर्षों का कारण पश्मीना रहा। इसके आर्थिक प्रभाव हिमाचल और तिब्बत ही नहीं अपितु कश्मीर को भी प्रभावित करते रहे हैं। इन्हीं संघर्षों के चलते कश्मीरी पश्मीना अधिक मात्रा में ख्याति पा गया, किन्तु नमग्या समझौते के फल-स्वरूप बुशहर पर तिब्बत का व्यापारिक सम्बन्ध सुदृढ़ होने के कारण कश्मीर पर इसका प्रभाव अच्छा नहीं रहा। काश्मीर को आने वाले पश्मीने का आयात इस समझौते से घट गया। ईस्वी सन् 1803 से 1814 तक गोरखों के आतंकपूर्ण प्रभाव बुशहर पर रहने से तिब्बत का व्यापार निर्यात पुनः कश्मीर की ओर मुड़ गया। गोरखों के विरुद्ध स्थानीय खूँद कबीलों के संगठित प्रयासों एवं अंग्रेजी शासकों के हस्तक्षेप से 1814 में गोरखों को बुशहर एवं अन्य पड़ौसी राज्यों से भागना पड़ा। इसी समय बुशहर की सत्ता का दायित्व अबोध एवं अवस्यक राजा महिन्द्र सिंह पर आ पड़ा। बुशहर रियासत के ब्रिटिश प्रभाव में आने के कारण उसकी सीमाएँ उत्तरी लद्दाख़ और पश्चिमी तिब्बत के साथ आ लगी।

> लवी मेला कैसे शुरू हुआ? इस बारे में विद्वानों में मतभेद अथवा भ्रान्तियाँ तो हैं फिर भी राजा केहरि सिंह के शासनकाल (1689 ई.सन्) के प्राप्त एक लिखित समझौते के अनुसार इसे नमग्या समझौते का नाम दिया जाता है। नमग्या अभिलेख के अनुसार राजा केहरि सिंह और तिब्बत के शासकों के मध्य यह समझौता हुआ था कि 'जब तक पत्थर पर ऊन न उगे तब तक यह समझौता लागू माना जाए।'

ब्रिटिश सत्ता इन सीमाओं के व्यापारिक महत्व से सर्वथा अनभिज्ञ थी अतः व्यापारिक उद्देश्य के दृष्टिगत आयात के साधनों के निमार्ण पर बल दिया गया, फलतः 1818 तक जहाँ इस क्षेत्र में पैदल मार्ग भी सहज उपलब्ध नहीं थे अब वहाँ भेड़ों पर लाद कर पश्मीना लाया जाने लगा। आयात घटने का अनुमान तत्कालीन कश्मीरी शसकों को 1821 में हुआ। तब उन्होंने जाना कि उनके माल के एक सौ पचास घोड़े पश्मीना कहीं अन्यत्र जा रहा है।

कश्मीर में इस समय डोगरा राजा गुलाब सिंह का राज्य था उन्होंने जोरावर सिंह को हुक्म दिया कि सीमा की नाके बन्दी कर पश्मीना के आयात को सुलभ बनाया जाए अतः उसने लेह पर अधिकार कर लिया। लेह पर जोरावर सिंह के आक्रमण ने कश्मीर में सिक्खों और अफ़गानों के आतंक की स्थिति को और गम्भीर बना दिया। इस अवस्था में पश्चिमी तिब्बत का माल लद्दाख़ के बदले पूर्वी पहाड़ी दर्रे से होकर बुशहर आने लगा। जे.डी. कनिंघम के अनुसार बुशहर में तिब्बत से

1837 में 55, 529/-रुपये का 1080 मन पश्मीना आयात हुआ जो 1840 में बढ़कर 1540 मन हो गया, जिसका मूल्य उस समय 1,09,807/- रुपये आँका गया था। इस आयात का प्रभाव बुशहर रियासत के राजकोष पर पड़ना ही था। बुशहर के बढ़ते प्रभाव को रोकने के लिए जोरावर सिंह ने तिब्बत पर आक्रमण कर दिया और तिब्बत से निर्यात पर कड़ी पाबन्दी लगा दी। फलस्वरूप जोरावर सिंह के जीवन काल में पश्मीने के व्यापार की बुशहर रियासत में कोई बढ़ोतरी नहीं हुई। जे.डी. कनिंघम ने एकत्र व्यापारिक आँकड़ों की रिपोंट ब्रिटिश सरकार को भेजी जिसमें ब्रिटिश सरकार से तिब्बत-बुशहर व्यापार को बढ़ावा देने के लिए बुशहर में आयात पर लगने वाले राजस्व को समाप्त करने की सिफारिश की गई थी। परिणाम स्वरूप 1447 में आयात पर राजस्व समाप्त हो गया। इससे राजस्व आय घट कर 15,000 से 3,945/-रह गई किन्तु लवी मेले पर इसका प्रभाव सकारात्मक रहा। इसी के फलस्वरूप कनिंघम के दूसरे परामर्श को मानकर 1850 के दशक में तिब्बत से लेकर शिमला तक सड़क़ का निर्माण हुआ, जिसे हिन्दुस्तान-तिब्बत मार्ग या राष्ट्रीय राजमार्ग नं.22 का नाम दिया गया। लवी के अवसर पर जहाँ इस मार्ग द्वारा व्यापार का विकास हुआ वहाँ इसी सड़क के कारण यह मेला अपना व्यापारिक महत्व भी खोता जा रहा है। परम्परा के अनुसार लवी मेले में विक्रय हेतु लाई गई विभिन्न वस्तुओं के मूल्य की घोषणा के माध्यम से मेले का उद्घाटन किया जाता था, इस से पूर्व क्रय-विक्रय करने पर दण्ड का विधान था। मेले का उद्घाटन विधिवत झण्डी दिखा कर किया जाता, जो आज मात्र रिबन काट कर औपचारिकता ही निभाई जाती है। मूल्यों की घोषणा से मेला मण्डी का सुनियोजित रूप लगता था। मेले की उत्सवधर्मिता को बनाए रखने के लिए एक ओर परम्परागत रूप से विभिन्न देवी देवताओं की पालकियाँ और नृत्य करते लोग, बजते ढोल मन में स्फूर्ति और उत्साह भरते हैं, तो दूसरी ओर विभिन्न प्रदेशों से आने वाले सांस्कृतिक दल अपने-अपने ढंग से जनता का मनोरंजन करते हैं। उन सबसे हट कर घोड़ों का व्यापार आज भी परम्परागत विधि से होता है इस व्यापार की भाषा सांकेतिक होती है जिसका पता केवल क्रेता और विक्रेता को ही चलता है। मूल्य का निर्धारण कपड़े के नीचे अंगुलियों अथवा हाथ के स्पर्श से किया जाता है। तिब्बत का चमुर्थी घोड़ा विश्वप्रसिद्ध नस्लों में से एक नस्ल है। ई. सन् 1962 में भारत चीन सीमा के बन्द होने का कुप्रभाव लवी पर भी पड़ा। हिन्दुस्तानी-तिब्बत मार्ग के पूरा हो जाने के कारण व्यापारिक वस्तुएँ सीधी मैदानी मण्डियों में पहुँचने लगी हैं। इसके साथ ही मैदानी उपज और आवश्यक-अनावश्यक हर प्रकार की सामग्री व अन्य सामान सीधा सीमावर्ती क्षेत्रों में पहुँचने लगा है।

लवी का मेला अब अपना एतिहासिक और परम्परागत आधार खोता जा रहा है। व्यापारिक आदान-प्रदान के बजाए अब इसका आधार सांस्कृतिक आदान-प्रदान और मनोरंजन मात्र रह गया है। लाखों रुपया देकर फ़िल्मी सितारों अथवा नर्तकों-नर्तकियों को बुलाया जाता है। इसके विपरीत लोक नर्तकों व नर्तकियों के दलों को मात्र प्रोत्साहन राशि ही दी जाती है जिसके कारण हिमाचली लोक कलाओं को जानने वालों में उत्साह घटता जा रहा है और ये मेले हाशिये पर आते जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त लवी मेले के परम्परागत स्वरूप को धक्का लगने का एक और बड़ा कारण मात्र कुछ ही पूर्व वर्षों लगभग आठवें दशक में किन्नौर में लवी का आयोजन प्रारम्भ होना भी सिद्ध हुआ है। यह लवी रामपुर में लगने वाली लवी से ठीक पहले आयोजित की जाती है। मैदानी व्यापारी वर्ग किन्नौर पहुँचकर इस लवी में क्रय-विक्रय कर लेते हैं अतः ऊन, पश्मीना एवं अन्य उत्पाद अत्यल्प मात्रा में रामपुर पहुँच पाता है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार समझौते ने इस मेले को और भी आघात पहुँचाया है, अब यह मेला मात्र नट-भाण्डों, सरकारी आयोजन आदि व चाट-पकौड़े की दुकानों तक सीमित हो गया है।

बाती, जड़ और बीज

बाती जलती है
लेकिन होता है नाम
कि दीपक जल रहा है
बढ़ती है जड़
लेकिन हम कहते हैं
कि पेड़ बहुत लंबा है
नींव में दबते हैं पितर
लेकिन हमें दिखता है
केवल संतान का कलश
बीज तो मिट्टी में दब जाता है
और फ़सल लहराती है
सारी दुनिया में
तो क्यों न हमें
बाती या जड़
और नींव का बीज होना चाहिए ?
क्योंकि त्याग और संघर्ष
बुरी चीज़ नहीं हैं
क्योंकि भले ही हम दब जाएँ
लेकिन परिणाम तो
सुगन्धित और प्रिय होगा ! !

सहमति और प्रेम

सहमत होना
और प्रेम करना
बिलकुल अलग बातें हैं

सहमत होने से आप
केवल अनुयायी बन पाते हैं
जबकि प्रेम करने से
'मनुष्य' बनने की संभावनाएँ
सौ गुणा बढ़ जाती हैं

ये अलग बात है कि
मनुष्य होना
सबसे बड़ी उपलब्धि है !

इसलिए कोशिश करो
कि प्रेम ही जीवन में आने दो और
अनुकरण छोड़ दो
पिछले पैरों पर खड़े हुए पशुओं के लिए !

☐ सागर तोमर

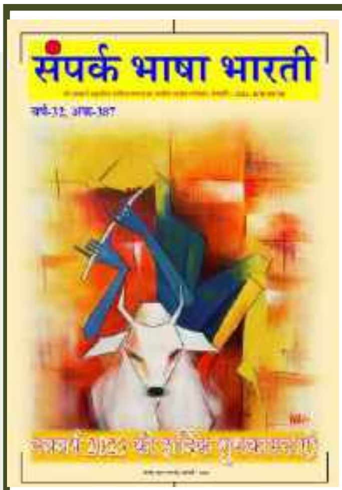

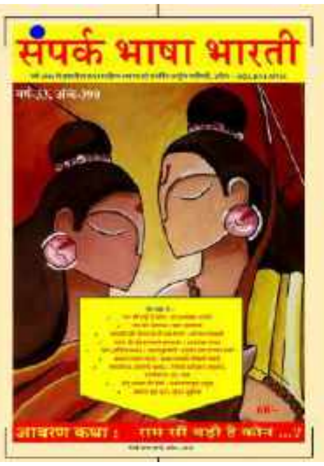

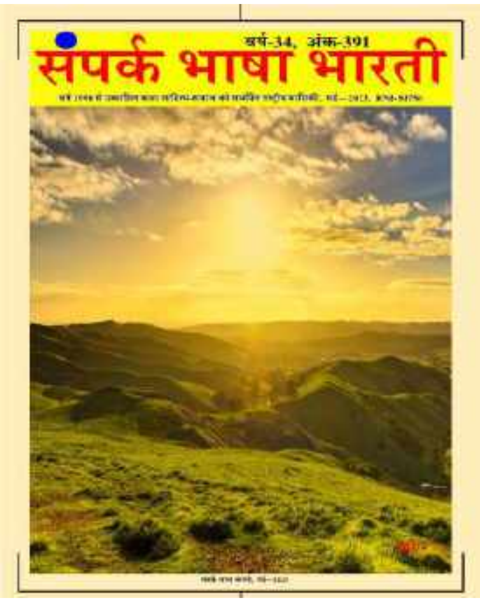

पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा।

पुस्तक समीक्षा के लिए समीक्षार्थ पुस्तक की प्रति भेजना अनिवार्य है।

प्रधान कार्यालय : ग्राम-मकरी, पोस्ट-भुइंदहा, पृथ्वीगंज हवाई अड्डा, प्रतापगढ़-230304 उत्तर प्रदेश
नई दिल्ली कार्यालय : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092

पत्रव्यवहार तथा पुस्तक भेजने का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092
फोन नंबर : 9868108713/7701960982
ईमेल : samparkbhashabharati@gmail.com